# The New Star

**Dyal Singh College**

**(University of Delhi)**

**2019-2021**

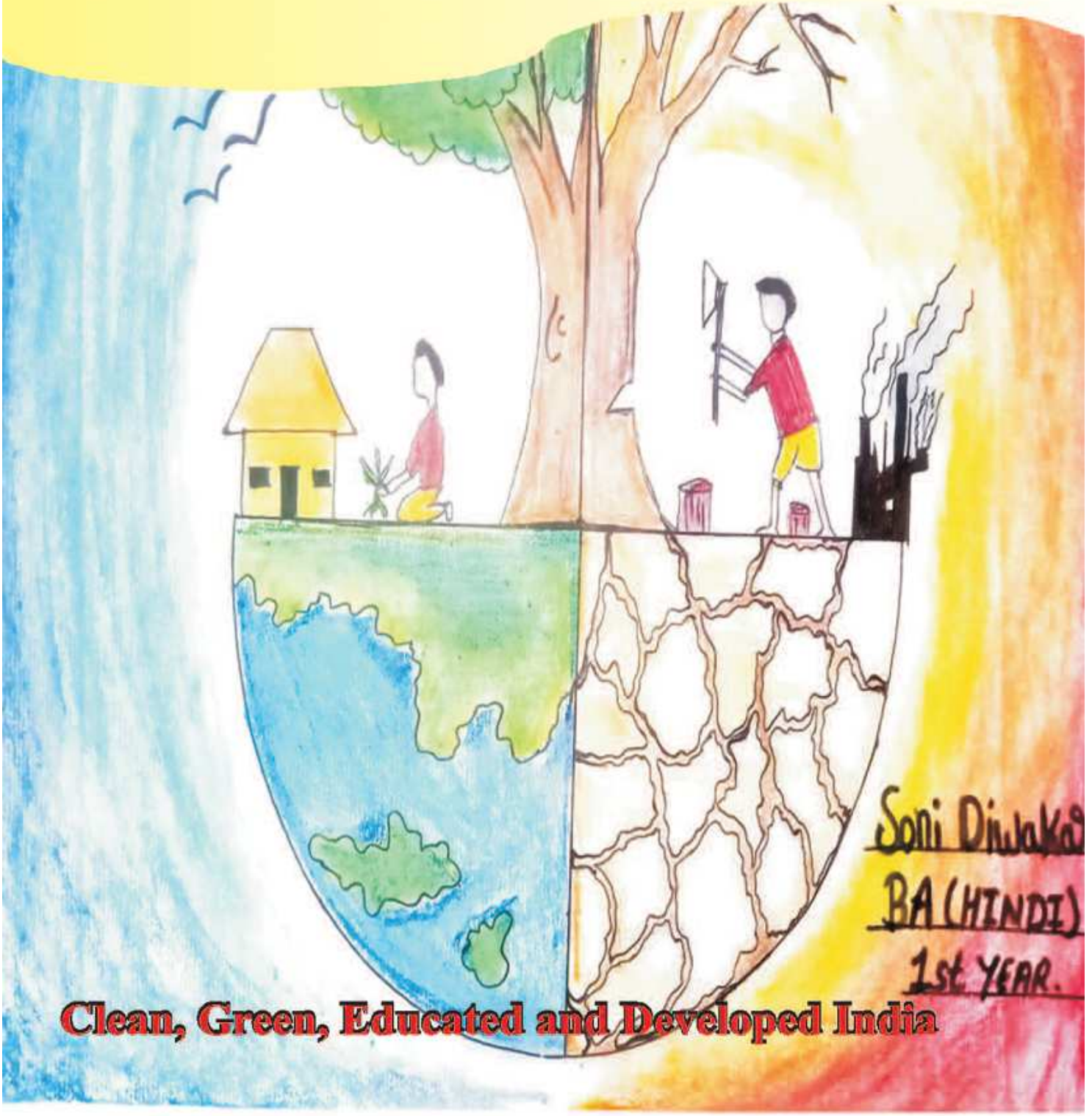


**Clean, Green, Educated and Developed India**

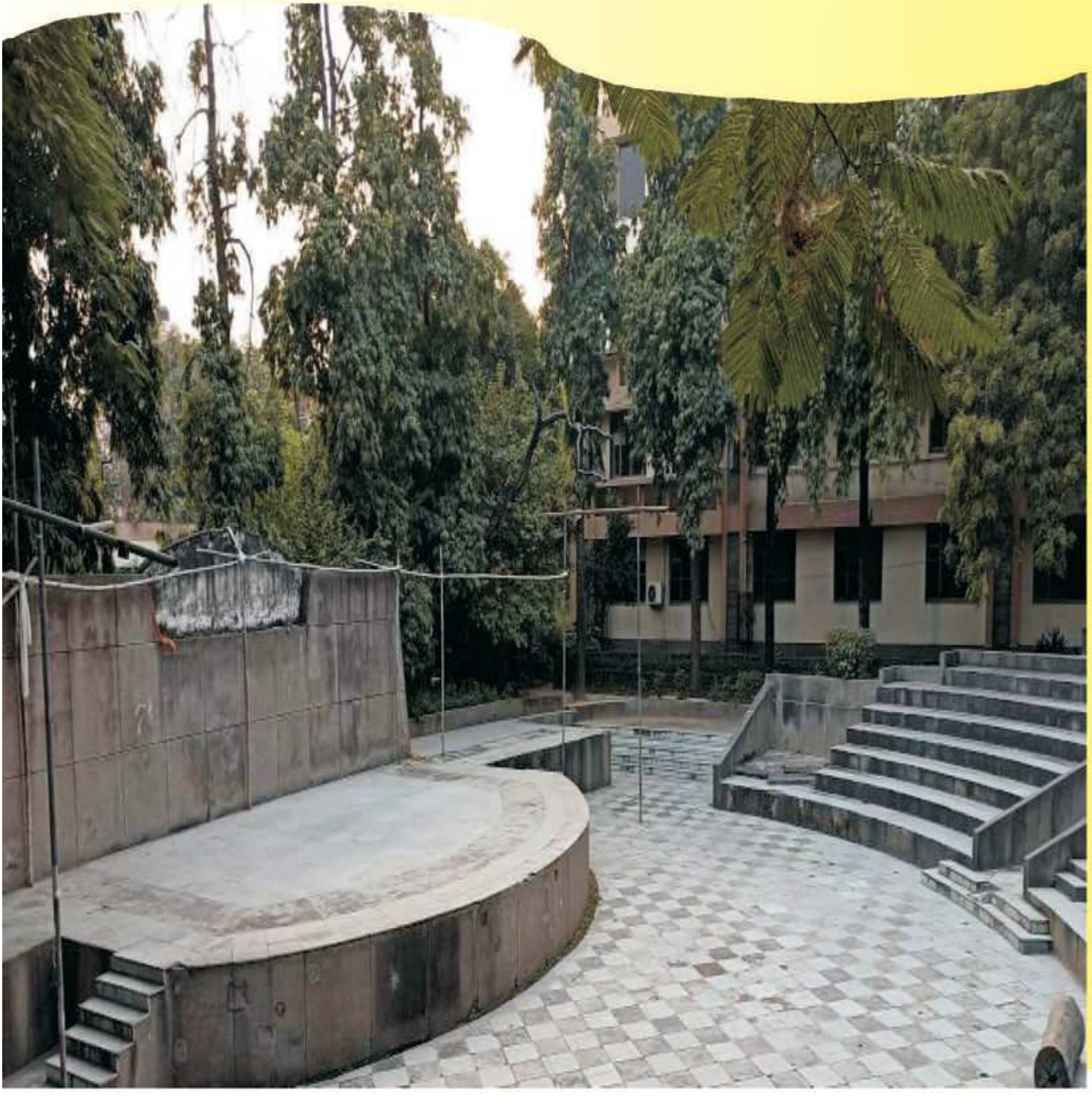

# THE NEW STAR
# (Combined issue, 2019-21)

## Editorial Board


| | | |
|---|---|---|
| **Editor in chief** | : | Dr. Abhay Kumar |
| **Editors** | | |
| 1. **Hindi** | : | Dr. Ramashankar Kushwaha |
| Student | : | Dolly Kumari, Hindi (H) |
| | | Aman Kumar, Hindi (H) V Sem |
| **2. English** | : | Dr. Yash Pal Singh |
| Student | : | Anurag Anand, English (H) V Sem |
| | | Saanvi Kashyap, English (H) V Sem |
| **3. Sanskrit** | : | Dr. Kakoli Roy |
| Student | : | Sushil Kumar, B.A. (P) |
| | | Heena Kumar, B.A. (P), III Sem |
| **4. Punjabi** | : | Dr. Kamal Jeet Sing |
| Student | : | Divya Sharma, Punjabi (H) V Sem |
| | | Amandeep Singh, Punjabi (H) V Sem |
| **5. Urdu** | : | Dr. Abu Zahir Rabbani |
| Student | | Rabia Bushra "Semester-IV" |
| | | Samreen Hasan "Semester-IV" |


# CONTENTS


**संपादकीय (Sampadakiya).....2**
**PRINCIPAL'SMESSAGE.....4**
**DSC Calendar.....5**
**Hindi Kalam.....13**
**English Tapestry.....35**
**Sanskrit Parishad.....51**
**Punjabi Phulkari.....61**
**Bagh-e-Urdu.....76**

# संपादकीय

कई महीनों तक बाट जोहने के बाद काफी विलम्ब से 'द न्यु स्टार' का यह अंक अब आपके सामने है। यह अंक जुलाई 2020 तक आ जाना चाहिए था, पर कोरोना के कहर के कारण इसके प्रकाशन में काफी विलम्ब हुआ। इतना विलम्ब होने के बाद भी मुद्रित रूप में पाठकों के हाथों में इसे पहुँचाने में हम नाकाम रहे। एतदर्थ हमें इसे संयुक्तांक के रूप में निकालने के लिए विवश होना पड़ा। इतना ही नहीं, 'कोढ़ में खाज' वाली कहावत के अनुसार हम इसे मनोवांछित रूप देने में असफल रहे। विभिन्न समसामयिक अकादमिक घटनाओं से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों के लेखों और साक्षात्कारों के प्रकाशन की योजना पर भी पानी फिर गया। सच ही कहा गया है कि संकट अकेले नहीं आता है, वह अन्य कई संकटों को साथ लेकर आता है। कम–से–कम पत्रिका के इस अंक के बारे में यह बात अक्षरशः चरितार्थ होती है।

तार्किकता, आलोचनात्मक विवेक, धर्मनिरपेक्षता, चिन्तन और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और उसकी रक्षा, सम्वेदनात्मक ज्ञान, ज्ञानात्मक सम्वेदना आदि मानवीय मूल्य हमारे अन्दर की इंसानियत को निखारकर हमें और अधिक मानवीय और सम्वेदनशील बनाते हैं। ये मूल्य शिक्षा–प्राप्ति और साहित्य–रचना के प्राथमिक और बुनियादी उद्देश्य हैं। कहना न होगा कि इन मूल्यों के बिना हम न आधुनिक हो सकते हैं, न सभ्य। यह अकारण नहीं है कि पश्चिम में प्रबोधन (Enlightenment, 17–18वीं शताब्दी) की आधारशिला वाल्तेयर (Voltaire, 1664–1778) का यह उद्‌बाहु उद्‌घोष है ? "I disapprove of what you say, but I will defend to the death your right to say it." वाल्तेयर की यह शानदार घोषणा आज भी कितनी प्रासंगिक है, कहना अनावश्यक है। विश्वविद्यालय या युनिवर्सिटी (कॉलेज इसी की इकाई है) शब्दों से भी उन्मुक्त चिन्तन–सम्बन्धी यही ध्वनि निकलती है, यानी विश्व या ब्रह्माण्ड–बोध को बढ़ावा देना, किसी चीज को युनिवर्सल नजरिए से देखना। लूसिएँ गोल्डमान (1913–71) की विश्वदृष्टि की अवधारणा भी इसी के मेल में है। इन्हीं बुनियादी मूल्यों की प्राप्ति के लिए तो शिक्षण–संस्थानों, विशेषकर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाती है। इन मूल्यों के अंकुरण, पल्लवन और पुष्पण के लिए शिक्षण–संस्थान और साहित्य से बेहतर क्षेत्र और क्या हो सकता है? हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'द न्यु स्टार' भी इसी दिशा में लघु एवं विनम्र प्रयाण और प्रयास है।

यह अकारण नहीं है कि दुनिया भर के मनीषियों ने अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बल दिया है। अपने यहाँ प्राचीन काल से ही बिना कोई लेकिन, किन्तु, परन्तु, इफ, बट लगाए अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बल दिया जाता रहा है। इस सम्बन्ध में कितनी शानदार है बुद्ध की यह घोषणा...."तुम किसी बात को केवल इसलिए मत मान लो कि यह बात अनुश्रुत है, किसी बात को केवल इसलिए भी मत मान लो कि वह परम्परागत है, किसी बात को केवल इसलिए भी मत मान लो कि वह किसी धर्मग्रन्थ में कही गई है, किसी बात को केवल इसलिए मत मान लो कि वह हमारे धर्म के अनुकूल है, किसी बात को केवल इसलिए भी मत मानो कि कहनेवाला श्रमण हमारे लिए अत्यन्त पूज्य है, किसी बात को केवल इसलिए भी मत मान लो कि तुम्हारे पूर्वजों के द्वारा वह बात कही गई है, किसी बात को केवल इसलिए मत मानो कि वह बात किसी विद्वान्, ऋषि अथवा अत्यन्त पूजनीय व्यक्ति के द्वारा कही गई है; तुम अपने अनुभव, तर्क और विवेक की कसौटी पर उसे कसो, तुम्हें उचित जँचे तो मानो, उचित न जँचे तो मत मानो।" तार्किकता और आलोचनात्मक विवेक के पक्ष में इससे शानदार घोषणा और क्या हो सकती है? कालिदास ने तो एक कदम और आगे बढ़कर आस्थावाद पर करारा कशाघात किया है– "पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।/सन्तः परीक्ष्यान्तरद्‌भजन्ते मूढः परप्रत्यनेयबुद्धिः।।" (मालविकाग्निमित्रम् 1/2)। कहना न होगा कि आलोचनात्मक विवेक अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का ही जुड़वाँ है, जो हमें आस्थावादी और पुराणपन्थी होने से बचाता है। इसी प्रकार निडर होकर दृढ़तापूर्वक डिबेट–डिस्कसन करने की संस्कृति पर बल देते हुए कालिदास ने कहा है, "जो लोग अध्यापक का पद प्राप्त कर लेने पर शास्त्रार्थ करने से भागते हैं, दूसरों की की गई निन्दा को सहन कर लेते हैं और केवल पेट पालने के लिए विद्या पढ़ाते हैं; ऐसे लोग पण्डित नहीं, वरन् ज्ञान बेचने वाले बनिया हैं।" [पण्डित रामतेज शास्त्री द्वारा किया हुआ अनुवाद; ब्रह्मानन्द त्रिपाठी (सम्पादक), कालिदास–ग्रन्थावली, मालविकाग्निमित्रम् 1/17, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 2014, पृ. 582] आलोचनात्मक विवेक के निर्माण में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका

को कालिदास ने कितना बखूबी निरूपित किया है? वास्तव में आलोचनात्मक विवेक के निर्माण में शिक्षकों और शिक्षण–संस्थानों की कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है, कहना अनावश्यक है। निस्सन्देह इसकी सशक्त अभिव्यक्ति रचनाशीलता के माध्यम से होती है और महाविद्यालयीय पत्रिका इसका श्रेष्ठ माध्यम है। कहना न होगा कि इसके लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करना बहुत जरूरी है, जिसमें कोई व्यक्ति बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी बात निर्भीक होकर कह सके, तभी रवीन्द्रनाथ ठाकुर का यह स्वप्न पूरा हो सकेगा–

Where the mind is without fear and the head is held high; Where knowledge is free;

Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls;

Where words come out from the depth of truth; /Where tireless striving stretches its arms toward perfection;

Where the clear stream of reason has not lost its way into the dreary desert sand of dead habit;

Where the mind is led forward by thee into ever-widening thought and action./ Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.

पत्रिका और पाठकों के बीच में मैं दीवार बनना नहीं चाहता। अब बस आप हैं और आपके कर–कमलों में आपकी अपनी यह पत्रिका। पत्रिका के इस अंक और इसमें प्रकाशित सामग्री के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। शमशेर की शब्दावली उधार लेकर कहूँ तो यह पत्रिका अपनी रचनाशीलता की बहुवर्णी आभा अपने पाठकों में स्वयं छिटकाएगी।

बात बोलेगी,

हम नहीं।

भेद खोलेगी

बात ही।

पुनश्च, कोरोना के क्रूर झंझावात ने न जाने कितनी जगमगाती हुई तेजस्विनी प्रतिभाओं की विटप–वल्लरियों को सदा के लिए हमसे छीन लिया। दिल्ली विश्वविद्यालय के भी चालीस अध्यापक अकाल काल–कवलित हो गए। हमारे महाविद्यालय की साधना मैडम (हिन्दी–विभाग) भी कोरोना के काल के गाल में समा गईं। इन सबको विनम्र श्रद्धांजलि!

**– डॉ. अभय कुमार**

# PRINCIPAL'S MESSAGE

Presenting the college magazine 'The New Star' is always a moment of great satisfaction and joy for us. Year 2021 was a year like no other. A large number of people from all walks of life were affected by the COVID-19 pandemic. The future seemed so uncertain yet the education sector stood firm maneuvering itself through every difficulty. Today when we can see the light at the end of the tunnel it fills me with immense pride that even a pandemic as catastrophic as COVID-19 could not stop our students and faculty from achieving various accolades. The write ups in this issue of the magazine clearly bring to light the unstoppable spirit of the contributors.

"We cannot choose our external circumstances, but we can always choose how we respond to them", this quote from 'Epictetus' always seems to appear in my thought stream whenever I see teachers and students interacting in the online mode of learning. No amount of praise is enough firstly for the teachers who have had to adapt so quickly to the online mode and secondly for the students who, inspite of all odds, in the midst of the pandemic have been able to keep their eyes firmly set on having a bright future for themselves by following diligently the academic discourse through such difficult period witnessed once in a lifetime. I am certain that very soon when life returns to normalcy this grit and determination of the teachers, students and staff will not turn into complacency. The only word to sum up the efforts of the entire year by our College fraternity is "TRULY INSPIRATIONAL"

I take this opportunity to congratulate the Teachers, students and the Editorial Board for their tireless efforts in bringing out yet another brilliant edition of the college magazine, 'The New Star'. BEST WISHES TO YOU ALL.

# Calendar

# Dyal Singh College Calendar 2021

GATHER YE THE WISDOM OF EAST AND WEST
DYAL SINGH COLLEGE

Principal-Dr. V K Paliwal

Garden Committee :

Dr. Amita Dua ( Convenor )

Dr. Roma Katyal

Dr. P.Chitralekha

Dr. Saloni Gulati

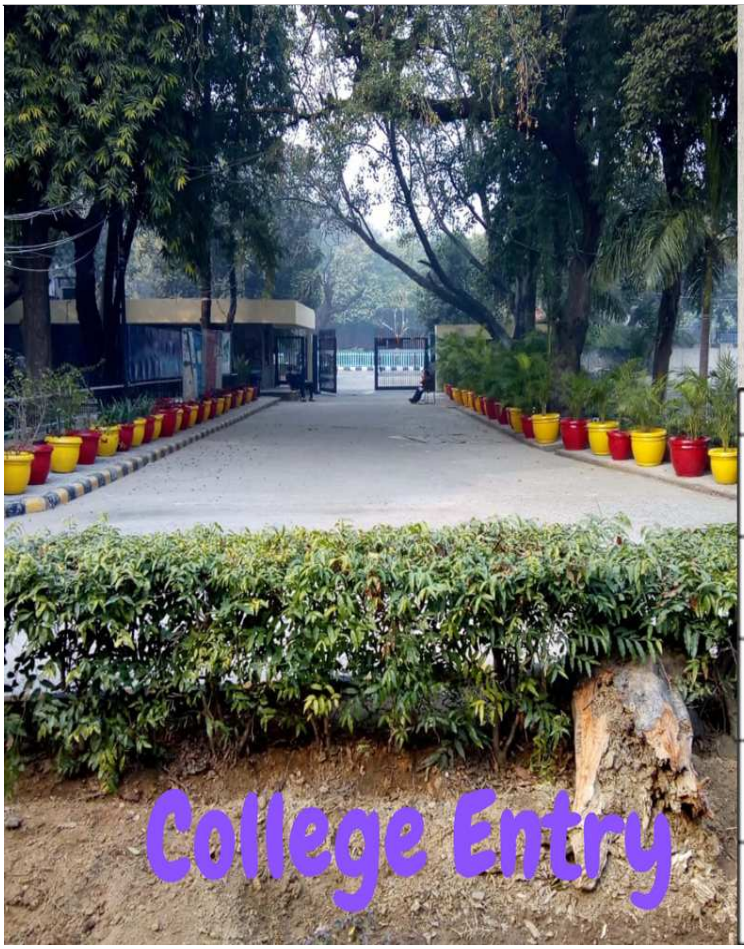


# 2021 January

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

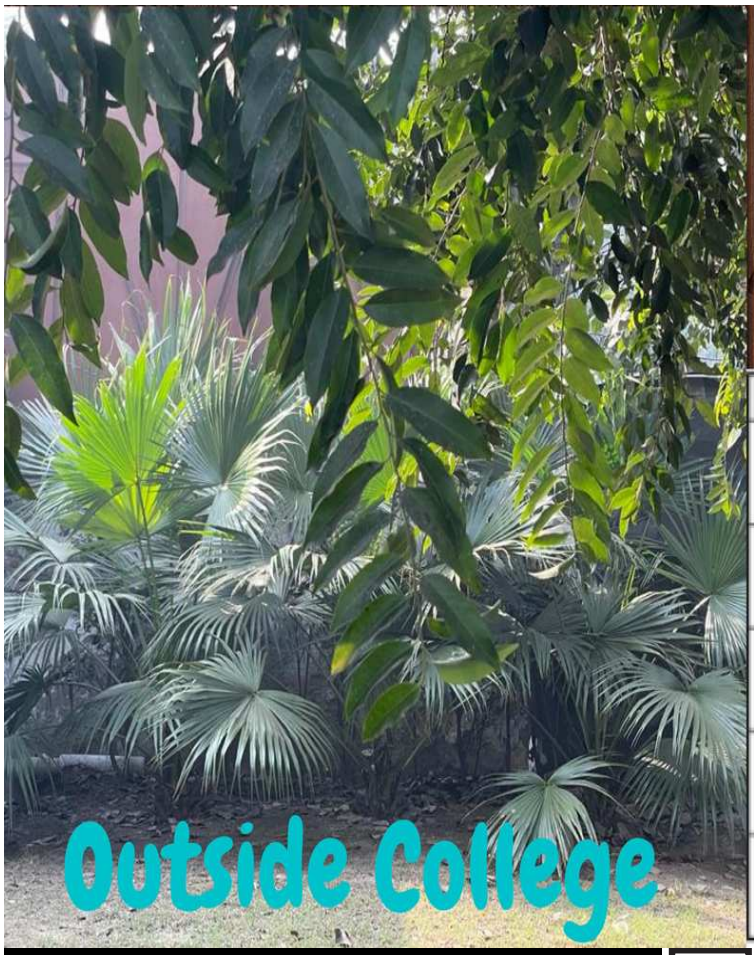


# 2021 February

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| | | | | | | |

# 2021 March

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

# 2021 April

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | | |

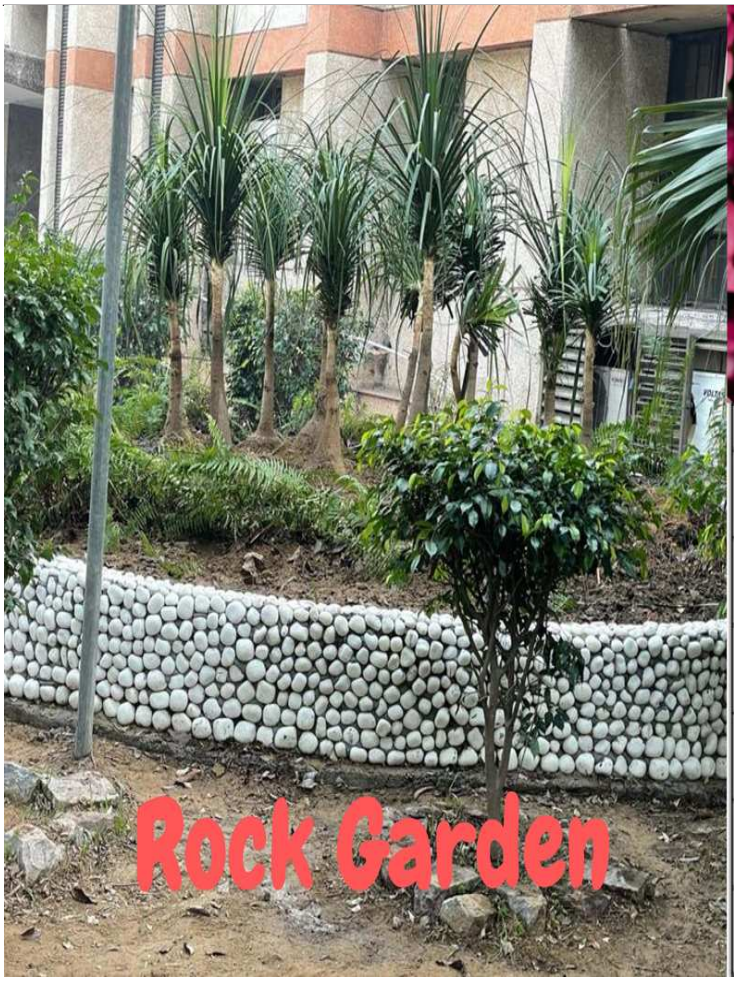

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
| 31 | | | | | | |

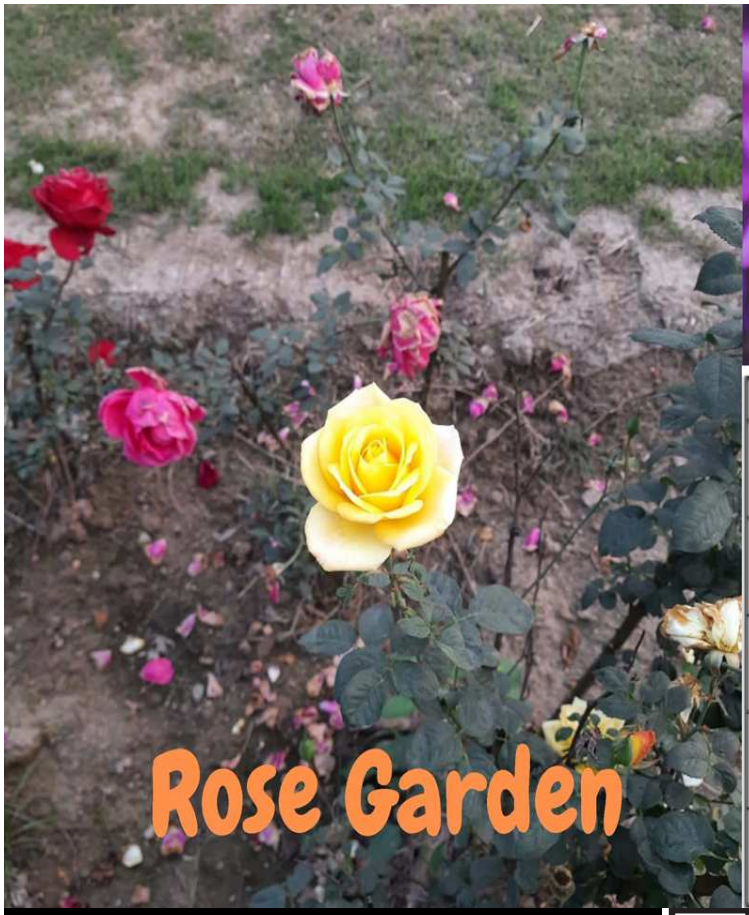

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

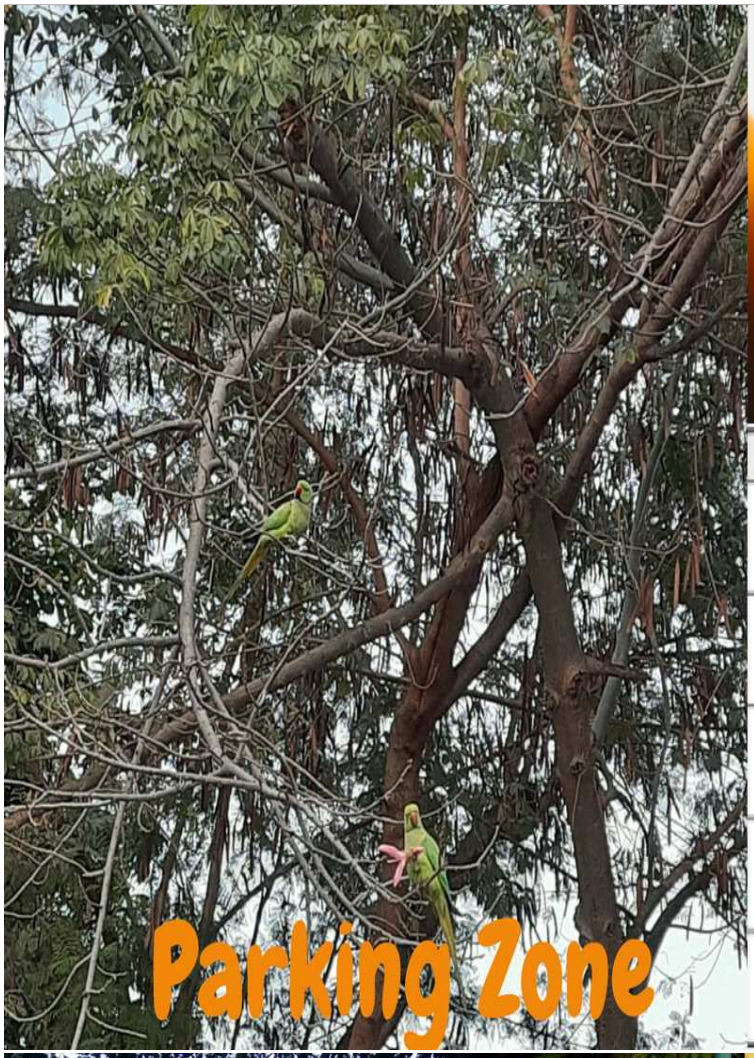

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| 30 | 31 | | | | | |

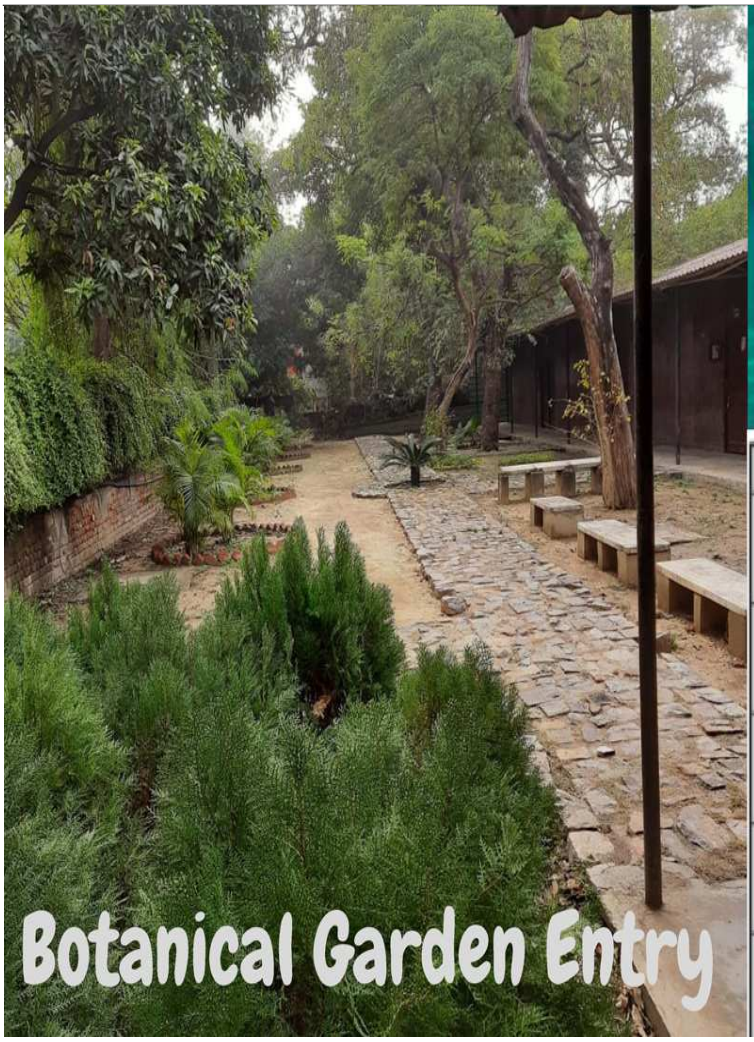


# 2021 September

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | | | |

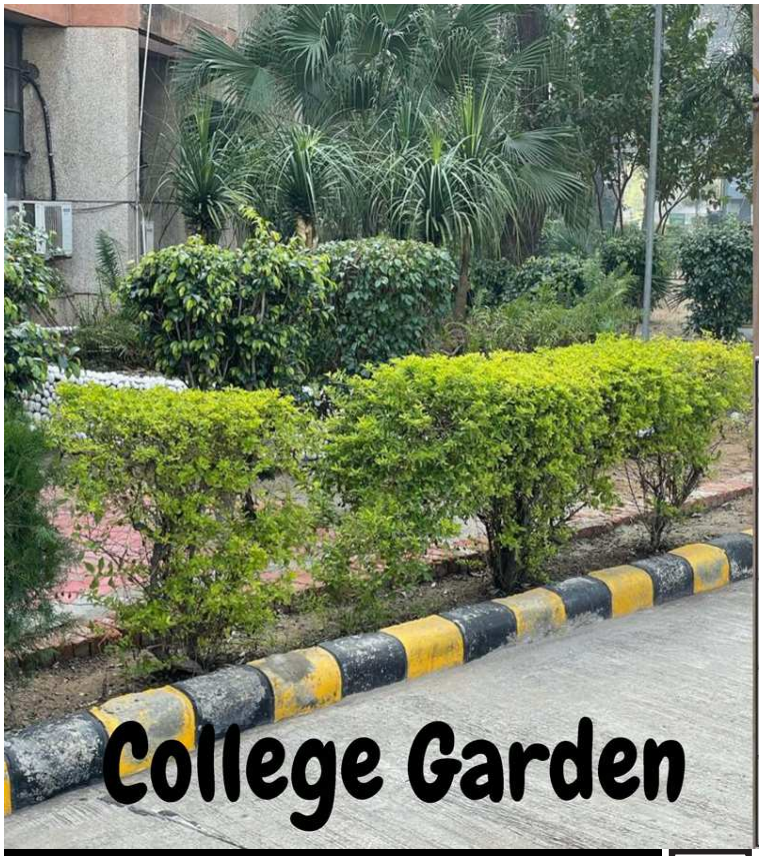


# 2021 October

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

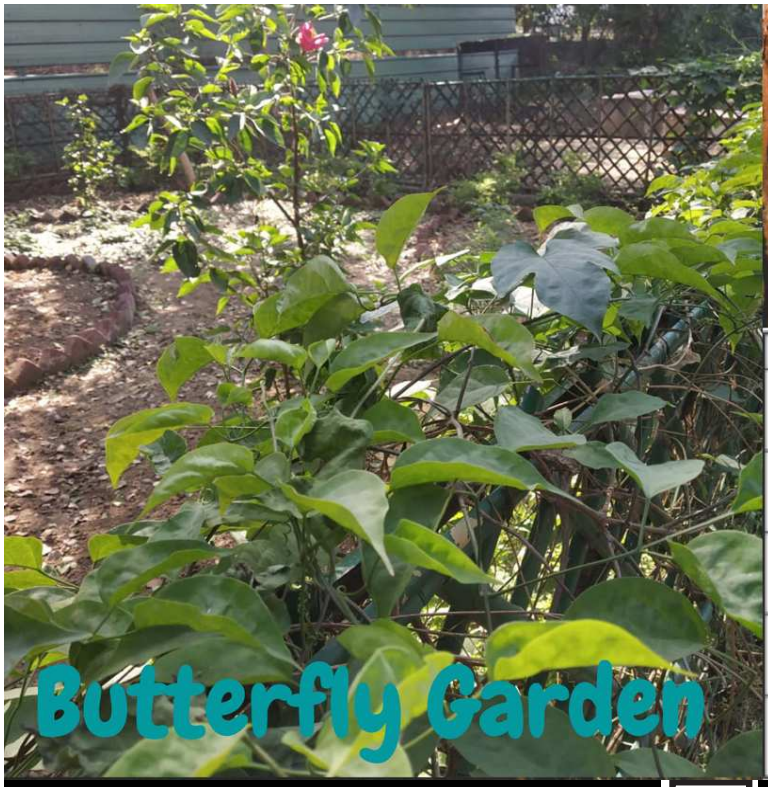

| MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT | SUN |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

कोऊ भयो मुड़िया संन्यासी कोई जोगी भयो
कोऊ ब्रह्मचारी कोऊ जति अनुमानबो।
हिन्दू तुरुक कोऊ राफजी इमाम शाफी
मानुस की जात सबै एकै पहचानबो।
करता करीम कोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही की सेब एक ही गुरुदेव एक
एकै स्वरूप सब एकै जोत जानबो।

-गुरु गोविन्द सिंह

हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय द्राविड़-चीन,
शक-हूण-दल, पाठान-मोगल एक देहे हलो लीन।

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

# हिंदी कलम

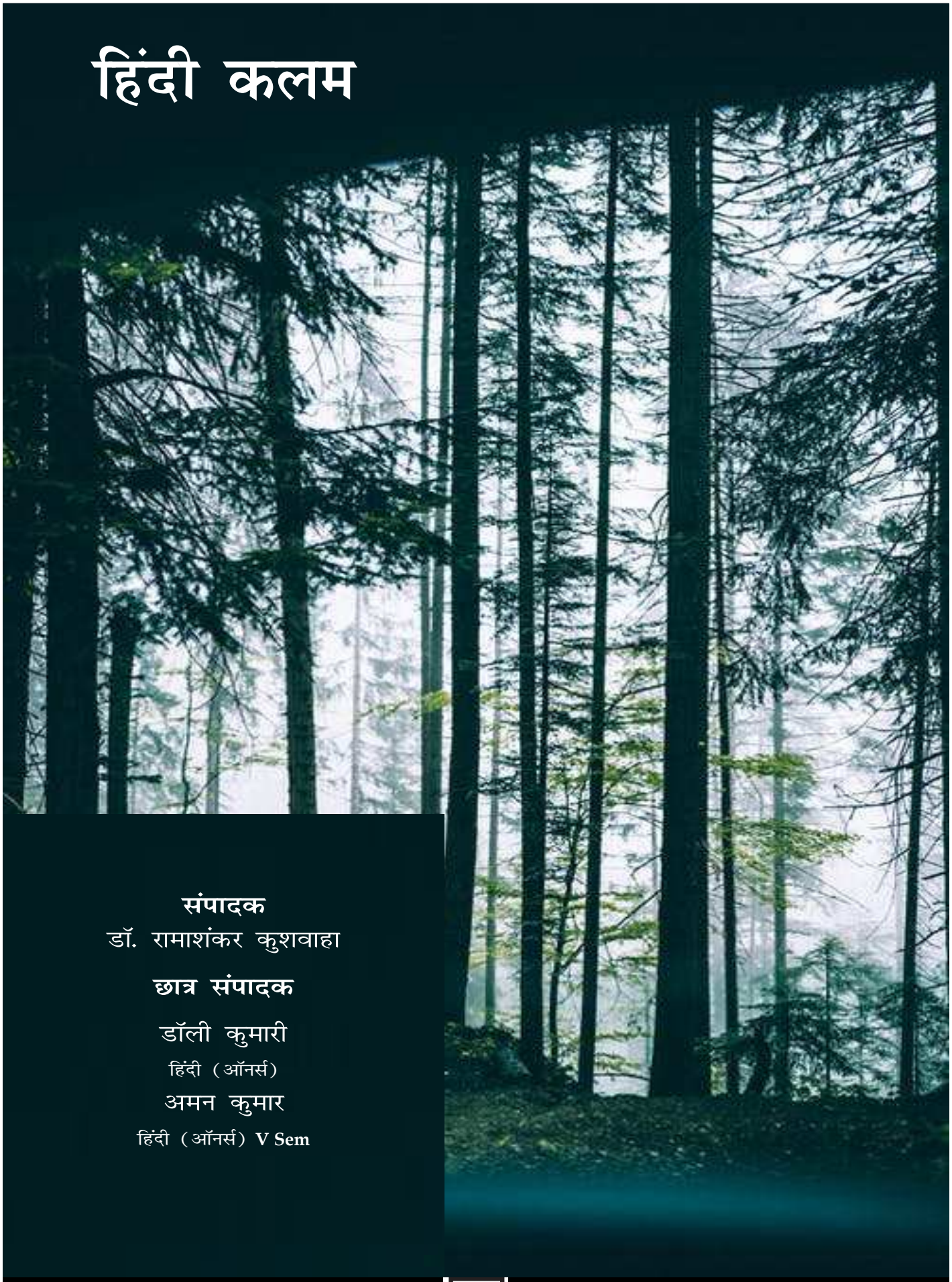


**संपादक**

डॉ. रामाशंकर कुशवाहा

**छात्र संपादक**

डॉली कुमारी

हिंदी (ऑनर्स)

अमन कुमार

हिंदी (ऑनर्स) **V Sem**

# अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| **शब्द** | **–डॉ. रामाशंकर कुशवाहा** | **: 15** |
| लड़के भी रो सकते हैं | –शर्मा जतिन | : 16 |
| वक्त को गिला है, | –अंकिता राय | : 16 |
| किस काम के लिए ये, | –पुनीत कुमार | : 16 |
| कुर्सी के चार पैर... | –पुनीत कुमार | : 17 |
| लिखते रहिए | –आशु 'अनुभवहीन' | : 18 |
| सफर | –सोना चौहान | : 18 |
| शब्द जादू है | –सोना चौहान | : 19 |
| वह दिन एक नया अहसास–सा था | –अमन कुमार | : 19 |
| मैं जब–जब बाहर निकलती हूँ | – डॉली | : 19 |
| आखिरी रात | –श्वेता | : 20 |
| रावण से अन्याय | – हर्ष | : 20 |
| स्टेराइड | –रोहन | : 20 |
| दोस्ती | –रीतिका वधवा | : 21 |
| मुस्कुरा देती है | –रीतिका वधवा | : 21 |
| क्यों? कैसे? कब? | – सौम्या त्रिपाठी | : 21 |
| क्या सभी लड़कियाँ | | |
| स्वतंत्र हैं लड़कों के जैसे? | –विनय कुमार | : 22 |
| महिलाओं के प्रति असमानता | –रीना डे | : 22 |
| ट्रेन का सफर | –नवीना मैहन | : 23 |
| भारत बनाम न्यूजीलैंड | –प्रवेश | : 23 |
| सूरजकुण्ड अंतर्राष्ट्रीय मेला | –हनी | : 24 |
| भाषा का सवाल | –डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार | : 24 |
| पिता के बाद | –अंकित | : 26 |
| आजाद परिंदा | –भूमिका | : 26 |
| प्रकृति और हम | – नितेश | : 27 |
| जिदंगी | –नितेश | : 28 |
| बेटियाँ | –दीपिका वशिष्ठ | : 29 |
| टूटे–टूटे सपनों को फिर – | | |
| से मैंने जोड़ा है | – अनुज | : 29 |
| प्रकाश हूँ, मैं संस्कार हूँ मैं | –आयुषी | : 30 |
| अजन्मी बेटी की चिट्ठी | –संस्कृति यादव | : 31 |
| खिलौना | –संस्कृति यादव | : 32 |
| वृद्ध घर | –संस्कृति यादव | : 32 |
| घुँघरू | –संस्कृति यादव | : 33 |
| पर्वत से बहता पानी | –संस्कृति यादव | : 33 |
| इक गुज़ारिश | –प्रणव राज | : 34 |
| राम | –अमल | : 34 |

# शब्द

शब्द ही संसार है....लेकिन कैसे? जब हम इसके विस्तार में जाते हैं तो यही समझ आता है कि भाव और शब्द ही तो हैं जो सबकुछ निर्धारित करते हैं। व्यवहार और संबंध से समाज का निर्माण होता है। जहाँ व्यवहार नहीं वहाँ संबंध काल्पनिक होता है और जहाँ सम्बन्ध नहीं वहाँ समाज हो ही नहीं सकता। लेखन–कला इन्हीं उलझनों को सरलता से सुलझाने का नाम है। हिंदी में जो रचनाएँ प्राप्त हुई हैं, उनके कलमकारों ने इसी उधेड़बुन को अपनी प्रतिभा और समझ के अनुसार व्यक्त करने का प्रयास किया है। साहित्य जीवन और समाज की आलोचना है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जोड़ता है और नयी पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से आगे चलने का रास्ता दिखाता है। यही चलन जीवन का दर्शन है, जिसमें बहुविध संघर्ष और उसके उतार–चढ़ाव शामिल हैं। लेखन कार्य करनेवाले इस चलन को बहुविध तरीके से अभिव्यक्त करते हैं। जब इतनी विधायें नहीं थीं तब लोग कथा–कहानी और संगीत–गीत के द्वारा अपनी बात कहते थे। कहन से लोग लेखन की तरफ आये और फिर उसके बाद समय के साथ चीजों का विस्तार होता गया। कहानी, कविता, कथा, गाथा और न जाने कितने रूप विकसित हुए। आज संचार और तकनीक के विकास ने अभिव्यक्ति को और विस्तार दे दिया है। डायरी के पन्नों में अनुभव का अंकन करने की जगह लोग उन मंचों का प्रयोग करने लगे हैं जिनका तात्कालिक आकर्षण बहुत है। इस आकर्षण ने शब्द की गरिमा को ही संकट में डाल दिया है। सत्य और और अफवाह का अंतर खत्म हो गया है। इससे सबसे अधिक नुकसान विश्वास का हुआ है। भ्रांतियों और अफवाहों का बाजार गर्म हो गया। तर्क और विवेक पीछे रह गए। नई पीढ़ी उहात्मक सपने पालने लगी और समझदारी की जगह छोटे रास्ते अपनाने लगी। इन सबके बीच उनके स्वाभाविक गुण और प्रतिभा को जगह ही नहीं मिल रही। इससे जो कुंठा पैदा हो रही वह बच्चों को इतना नकारात्मक और मायूस बना रही है कि सबसे कठिन आत्मघात जैसा विकल्प उन्हें सरल लगने लगा है। महाविद्यालय की यह वार्षिक पत्रिका 'द न्यू स्टार' उन्हीं बच्चों की निगाह से देश, समाज और व्यवस्था को जानने–समझने का एक मंच है। इस पत्रिका के द्वारा उन्हीं के शब्दों उनको समझा जा सकता है।

**डॉ. रामाशंकर कुशवाहा**
**(हिंदी विभाग)**

# लड़के भी रो सकते है

कम उम्र में बहुत कुछ सीख जातें हैं
हम लड़के हैं बड़ी जल्द बड़े हो जाते हैं

माँ से पैसे ले लेते हैं
पापा से घबरा जाते हैं
दवा समय पर लाकर
बाप से प्यार जताते हैं
आँख में अपने सपनों की राख लिए
माँ बाप के सपने पूरे कर जाते हैं
हम लड़के हैं बड़ी जल्द बड़े हो जाते हैं ....
आवारा नहीं फिरता, अब काम से काम रखता हूँ
बेवजह भी उलझा हूँ, बहुत अब खुद माफी माँगता हूँ
और बेफिजूल खर्च सा हो गया
दस रुपए दस बार सोचकर खर्च करता हूँ
कोई कह न दे लड़का है निकम्मा मेरे बाप को
दोस्तों से भी बहुत कम मिलता हूँ...
दोस्तों से भी बहुत कम मिलता हूँ...

माँ के पास बैठ रोए अब अरसा एक हो गया
हँसता हूँ बहुत, खुश पर हुए अरसा एक हो गया
बहन की फिक्र रहती है
अपना खुद का सपना कहीं खो गया
छोटी–छोटी ख्वाइश रुलाती है बहुत
लड़के रोते नहीं यह सोच चुप हो गया
लड़के रोते नहीं यह सोच चुप हो गया

**– शर्मा जतिन**, स्नातक (वाणिज्य)
क्रमांक–548

# वक्त को गिला है,

वह कहता मुझे खुद के लिए भी बचा ले,
कहता अपने चेहरे पर अपनी प्यारी बिंदी लगा ले,
उलझे इन बालों को थोड़ा सँवार लिया कर,
थोड़ा–सा ही सही अपने लिए भी मुझे निकाल लिया कर,
वह कागज खाली पड़ा तुझे बुला रहा है,
वह नीली कलम भी तो जोर से आवाज लगा रही है,
वह संगीत की धुन जो तूने आधी बजाई थी,
सुनकर जिसे तेरी रूह मुस्कुराई थी,
चल उसे भी कर मुकम्मल,
जो तू किसी डर से अधूरा छोड़ आई थी।
न हो खुशी की कोई वजह तो भी थोड़ा बचा ले मुझे,
जो नहीं खुश तू आज,तो तेरे संग रुला ले मुझे,
कुछ भी कर
बस मेरा यूँ साथ न छोड़,
मैं रहूँगा तेरे साथ,
जो संग नहीं कोई और,
जो जख्म है,उसे दुनिया से भले छुपा ले,
पर खुद को यूँ सजा न दे,खुदको गले लगा ले,
न मुझे बेवजह बर्बाद कर,
बैठ कर मेरे साथ, खुद से बात कर,
यूँ खुद से खुद की चोरी मुनासिब नहीं है,
इस तरह खुद से दूर होना वाजिब नहीं है।

चल लगा वह बिंदी,
वह चूड़ियाँ भी हाथों में सजा ले,
हँसा ले अपने साथ या चाहे रुला ले,
बंद इन बालों को खुली हवा दे,
बैठ मेरे साथ और सबको भुला दे,
मैंने पहले भी तेरे हर जख्म को सिया है,
वक्त को आज मुझसे कुछ गिला है।

**अंकिता राय**
स्नातक (वाणिज्य)
**ई–मेल** : raiankitarai00@gmail.com

# किस काम के लिए ये,

किस काम के लिए ये,
लंबी–लंबी पक्की सड़कें,
जब चलना ही पैदल है तो,
इसकी जरूरत क्यों है,
पक्की सड़कें सरकार के हृदय
जैसी लगती हैं, बिलकुल कठोर,
इससे अच्छी तो पगडंडियाँ थीं,
वहाँ पर छाया तो मिलती थी,
साथ–साथ कई लोग,
हाल–समाचार भी पूछते थे।

किस काम के लिए ये,

मोटर, बस, रेल गाड़ी,
हवाई जहाज इतना ऊँचा उड़ता है,
कि अब तो दिखता ही नहीं,
खैर मुझे क्या,
मैं तो पैदल ही जाऊँगा,
मदद माँगने में बेफकूफी है,
वैसे भी हम तो आत्मनिर्भर हैं।

किस काम के लिए ये,
बड़े बड़े फंड, फंड इतना बड़ा है,
कि मुझे तो ये नहीं पता कि
इसमें शून्य कितने आते हैं,
पता भी कैसे होगा,
मजदूर हूँ न,
अब सिर्फ मजदूर ही नहीं,
मजबूर भी हूँ,
सुना है सब से कि पैसे आए हैं,
मजदूरों के लिए,
पैसा नहीं चाहते,
मुझे बस घर जाना है,
हो सके तो जिंदा।

अच्छा होता कि घर ही रहते,
सही कहती थी माई,
कि न जा प्रदेश,
***अब पछताने के सिवा,***
बचा ही क्या है,
वैसे गाँव में सूखी रोटी का इंतजाम,
होता तो थोड़े आते,
रखा होगा अनाज बड़ी सी मिल में,
हमको क्या, हमें तो पानी ही पीना होगा
जीने के लिए,
सोचो हम इतने मजबूर हैं,
तो सरकार कितनी होगी?

खैर हमको क्या,
सुविधा तो मिलेगी उन्हें,
जो विदेश से आए हैं,
हमारे हिस्से में तो,
सिर्फ सरकार के वादे आते हैं,
चलो और भी बहुत कुछ है,
सुनाने के लिए,
मगर देर हो रही है,
घर जाना है न,
वह भी पैदल।

**– पुनीत कुमार**
**ई–मेल :** punitkr578@gmail.com

# कुर्सी के चार पैर....

तुम नये हो तो आज बताता हूँ!
कैसे मिलती है कुर्सी?
मुश्किल से मिलती है कुर्सी,
इस पर पकड़ बनाना
इतना भी आसान नहीं,
ईमान बेचना पड़ता है!
जो आज कुर्सी पर बैठे हैं,
यह तो हमारी बेमिसाल बेईमानी,
का सदाबहार नतीजा है।

पहले पैर का मतलब...
झूठे वादे करना सीखो,
जुमले गढ़ना सीखो,
जनता को ज्यादा सोचने की आदत नहीं,
उन्हें विश्वास दिलाना भी कोई कठिन काम नहीं।
ध्यान रहे कि भाषण रोमांचक हो,
धर्म का तड़का लग जाए,
तो बात और जल्दी बन जाती है।

दूसरे पैर का सहारा
ये पूँजीपति होते हैं।
चुनाव में चंदा यही तो देते हैं।
चंदा भी कैसा?
बाद में सब वसूल लिया जाता है।
मगर मेरी जेब से नहीं,
सरकारी खजाना है न अपना
वहाँ से।
जनता के पैसे पर सबका हक होता है,
सिवाय जनता के।
जनता ने पैसे दिए,
तो उन्हें जरूरत क्यों होगी?

कुर्सी का तीसरा पैर...
बिकाऊ मीडिया।
इनका साथ मिल जाए
चुटकी में दाल गल जाती हैं।
उन्हें समझाया जाता है कि
ऐसा कोई काम मत करना,
जिससे समस्या की ओर ध्यान जाए।
पड़ोसी देश को दुश्मन बनाओ,
ताकि जनता का ध्यान व्यस्त रहे,

और, हम जेबें भरकर मस्त रहें।

कुर्सी का चौथा पैर....
लोकतंत्र,
जो अब हमने नाम मात्र का ही बचने दिया,
रखवाले उभरते हैं,
उन्हें रोको!
गुमशुदा कर दो,
कोई ढूँढ नहीं सकेगा,
वैसे भी बेवकूफों की भीड़ है।
ज्यादा बोले तो देशद्रोही
घोषित करने में घबराना मत।
ईश्वर की कृपा से
युवकों को दिखता नहीं।
विपक्ष को बोलने दो।
लगना चाहिए कि लोकतंत्र है।
इन्हें तकलीफ न हो,
कल को हमें भी विपक्ष बनना है।

तुम समझे न आज,
कुर्सी के चार पैर।
कभी न बनना तुम इन
चार लंगड़े पैरों जैसे!
भले ही घूमना पड़े बैसाखी लेकर।

**– पुनीत कुमार**

**ई–मेल :** punitkr578@gmail.com

# लिखते रहिए

लिखते रहिये
बिकते रहिये
देश विकास के खूँटे पर
खड़ा–खड़ा मुस्काता है
नेता है अभिनेता यहाँ पर
अभिनेता नेता कहलाता है
कलम चलाना जुर्म–सरीखा
यहाँ मिर्च है मीठी
शक्कर तीखा
तो भैया
लिखते रहिए
बिकते रहिए
लिखते रहिए
बिकते रहिए
रुपये का रंग भी बदला
लेन–देन का ढंग भी बदला
बदल न पाया देश हमारा
अंबानी से पुरखू हारा
खून की खेती होने को है
किसान स्वयं को बोने को है
यह सब लिखना कर्म नहीं
यह पत्रकार का धर्म नहीं
तो भैया
लिखते रहिये
बिकते रहिये
लिखते रहिये
बिकते रहिये
युवा अपने आदर्शों में
बाबा बाबा ला बैठें
तर्क–कुतर्क की बातों से
भाभा और बसु खा बैठें
जनरल को अब बिस्तर भी
जनरल वार्ड में
मिलता है
माफ करिये जनाब
अनाज यहाँ पर
आधार कार्ड से मिलता है

लिखते रहिए
बिकते रहिए

**– आशु, 'अनुभवहीन'**

# सफर

यह है मेरा प्रेम–प्रसंग
हैं यह मेरा ही जीवन–सफर
व मैं एक दिन
और वह उस दिन
उसकी मिली मुझसे नजर
मैं जान गई
शब्दों से क्या कहूँ आँखों से ही पहचान गई
सफर अभी शुरू ही हुआ था
मंजिल आना अभी बाकी था
सफर में वह भी थे साथ मेरे
और कह गए बिछुड़ेंगे न हम कभी
पर क्या मैं उनका साथ देने वाली थी
यही द्वन्द्व मन में छिड़ गया
वह जो मेरा हमसफर था कुछ पल में ही बिछुड़ गया
मन का द्वन्द्व मन में रहा
क्या कुछ कहती और कहना चाही थी
पर क्या वह सुनने को तैयार थे
मेरी उलझन अभी सुलझी भी नहीं
मेरी मंजिल सामने आ खड़ी हो गयी

फिर याद आया
वह जो मेरी माँ ने मुझसे कहा था
और मैंने माँ को वचन दिया था
पिता का साथ मुझे मिला था
बेटी होकर भी भुजाओं का बल मैंने पाया था
भुजा तो अब भी है मेरे पास
पर बल मेरा मेरे सफर में ही छूट गया
वह जो मेरा हमसफर था कुछ पल में ही बिछुड़ गया

## शब्द जादू है

शब्द जादू है
शब्द ब्रह्म है
शब्द ही संसार है
शब्द से ही प्रेम निर्मित
शब्द ही तीक्ष्ण प्रहार

**–सोना चौहान**
ई–मेल : sonac6668@gmail.com

## वह दिन एक नया अहसास–सा था

वह दिन एक नया अहसास–सा था,

उस दिन पहली बार मैंने जाना था प्रकृति को,
बतियाया था पेडों से, उनकी ही भाषा में।
वह भाषा जो आती न थी मुझे,
मगर सिखाई थी पेड़ों ने, भीगे पत्तों ने,
गीली खुशबूभरी मिट्टी ने, सरसराती हवाओं ने।

कुछ खास था वह दिन,
जब मैं जानते हुए भी आत्महत्या नहीं कर रहा था,
मैं जी रहा था उस दिन, कुछ लंबी साँसें लिए,
लेकिन तभी एक अहसास हुआ,
साथी ने कहा रेल का वक्त हुआ,
रेल वहीं नरक के लिए....

तभी एक आवाज कान में पड़ी, सहमी थी वो,
कुछ कहना चाहती थी, कह नहीं पाई,
भरभराई हुई थी, गिड़गिड़ाती–सी,
लगा कोई सैकड़ों सालों से चीख रही हो,
मैंने भी वही किया जो सब करते थे, अनसुना।

मगर कुछ अहसास जरूर हुए थे उस दिन,
जिनका गला घोंट आज भी कहीं नया नरक बनाता हूँ मैं,
नाम न पूछो दोस्त मेरा, शहर में बसता
धरती का श्रेष्ठ प्राणी इंसान कहलाता हूँ मैं।

**नाम : अमन कुमार,**
अनुक्रमांक : 19/24002
हिंदी विभाग, द्वितीय वर्ष, कक्षा भाग–।

## मैं जब–जब बाहर निकलती हूँ,

मैं जब – जब बाहर निकलती हूँ,
मुझे यह देश नजर आता है।
नजर आती है लोगों के पीछे भागती वह छोटी–सी गुड़िया,,
हर रोज हाथ में गुलाब लिए।
दूर कहीं पीड़ा में बैठी उसकी माँ नजर आती है।
सड़क के किनारे थका–हारा मजदूरों का झुंड नजर आता है
जो हमारी ही सुविधा के लिए अपना दिन–रात लगाता है,
दिखाई यह भी पड़ता है कि
किस तरह भरी धूप में मोची के बच्चे नंगे पाँव घूम रहे हैं
और
बगल में पड़ी होती है चमड़े की फटी चप्पल ग्राहक की ही सुविधा के लिए।
घर से निकलना मुझे इसलिए भी पसंद है क्योंकि मुझे वह सच नजर आता है,
नजर आता है कूड़े से खाना बीनता इंसान
जिसके तन पर लटकी बरसों से एक ही कमीज है।

खैर
देखे हैं कुछ ढोंगी भी जो हर दूसरे दिन एक ही बहाना कर,

एक ही स्टेशन पर,
अक्सर पैसे ऐंठा करते हैं।

देखी है ऑटो वाले की भींगी कमीज भी,,
दिन का देहड़ी इकट्ठा करता इंसान भी देखा है।।

देखी हैं वे तंग गलियाँ भी,
गलियों में बसता प्यार भी देखा है।

देखी है बुनकर और लुहारों की जिंदगी,
सस्ते दामों पर सामान बेचने का मलाल भी देखा है।

इन्हीं खून–पसीनों में बहता इंसान देखा है,
कुछ इस तरह मैंने अपना खूबसूरत हिंदुस्तान देखा है।

– **डॉली**
ई–मेल : Dolly Kumari imdolly11@gmail.com

# आखिरी रात

आखिरी रात
सर्दी की थी रात
काम था मुझे कुछ जरूरी
सुनसान गलियों से जाना
बन गई मेरी मजबूरी।
जंगल का रास्ता लगने लगा
महफूज इन गलियों से
लौट जा, लौट जा ऐसी आवाज
आने लगी थी मेरे दिल से।
मेरा पीछा करने का हुआ मुझे आभास
धीरे–धीरे रुकने सी लगी मेरी साँस।
घेर लिया मुझे और पकड़ने की कोशिश
कर रहे जैसे थी मैं कोई बिल्ली
मेरी आत्मा को तोड़ा जैसे माचिस की तिल्ली।
रो मत जाना सुनकर मेरी यह बात
क्या ही बताऊँ अब तुम्हें/ वह कहलाई मेरी आखिरी रात।
आखिरी रात थी वह/ आखिरी ही रह गई
मेरी टूटी आत्मा इतना / कुछ तो सह गई।
पर जमाने की उँगलियाँ मुझ पर ही उठीं
मेरी गली की औरतें ही मुझे/ बदचलन कह गईं
नाम तक न जाना उनका/ जिन्होंने राह रोकी थी मेरी
बल्कि मेरी माँ से कह गई/ बेटी ही खराब थी तेरी।
अब न करना बेटियाँ के/ घर में बसेरा
जाने कौन? देख भी / पायगी वह कल / का सबेरा।
अंत करूँ अब कैसे अनन्त–सी
लगती है यह बात
रो रो कर हूँ कह रही।
बनने न देना किसी की वह आखिरी रात।

**–श्वेता,** स्नातक (वाणिज्य)

# रावण से अन्याय

यह वही स्थान है
जहाँ इंद्र देव हैं और रावण को जलाते हैं।
गति को ही दौड़ाते हैं और धीमे को चलाते हैं।

इंद्र था देवकुल का,
तो बुजदिल ही देवराज भी।
रावण हुआ राक्षस कुल में,
तो सर्वज्ञानी को मिटाने में लगे हैं आज भी।
डर जाते थे ईश्वर भी,
तो फिर अवतार लेना पड़ता था।
रावण जैसों पर वश न था,
इसलिए बार–बार लेना अवतार पड़ता था।

हाँ, होते हैं कुछ रावण जैसे
सदियों में एक बार
सक्षम होते हैं थामने में चलती साँस।
जिन्हें रोकने आना पड़ता है फिर
छोड़ कर बैकुंठ और कैलाश।

संपूर्ण ब्रह्मांड में कंपन हो उठता है,
जब देवों से अधिक कोई संपन्न हो उठता है।
मृत्यु का भय जब हर मन हो उठता है,
परिवर्तित होती है भगवान की छवि
नतमस्तक हर जन हो उठता है।

**– हर्ष**
स्नातक हिंदी (प्रतिष्ठा) क्रमांक–20/54075

# स्टेराइड

हम सभी ने कहीं–न–कहीं स्टेराइड का नाम सुना ही होगा अनूमन इसका उपयोग बाडी बिल्डिंग से जुडें लोग तथा एथलीट करते हैं। आज के समय में लोग इसे किस प्रकार से इस्तेमाल कर रहें हैं? तो आज हम जानेंगे आपने इस लेख में स्टेराइड के बारे में कि यह क्या होता है?

इसके नुकसान के बारे में जानेंगें स्टीरोइड एक प्रकार का मानव टेस्टोस्टीरोन हार्मोन है जो शरीर में बीमारियों के लिए किया जाता है इसके कई दुष्परिणाम होते है। आज के समय में लोग बॉडी बनाने के चक्कर में गलत रास्ते पर निकल जाते हैं। और इन चीज़ों का उपयोग करने लगते हैं आज के दौर में इसका पूरा नाम ऐनाबोलिक एँड्रोजनिक स्टेराएड है। इसका दुष्परिणाम मानव–शरीर के अंगों पर पडता है। मानव–गुर्दो पर पड़ता है तथा लीवर को नुकसान पहुँचाता था।

**कोरटीको स्टीरोइड**

आइए बात करते हैं इसके बारे में यह एक प्रकार का मानव निर्मित स्टेराइड है जिसे दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे कैंसर अस्थमा जैसी गंभीर बीमारियों के लिऐ उपयोग किया जाता है।

कोरटीको स्टेराइड श्वास नली में सूजन और क्यूकस उत्पादन को कम करने के लिए एक बेहतर उपचार माना जाता है। डॉक्टर इसका उपयोग सृजन को करने के लिए भी करते हैं।

स्टेराइड के इस्तेमाल से की विभिन्न प्रकार कह बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, जिनका उपयोग बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं

होता है तथा गैर कानूनी है। इसलिए इसका उपयोग खास कर बॉड़ी बिल्डिंग के लिए कभी नहीं करना चाहिए तथा आपको स्वस्थ चीज़ों का उपयोग करना चाहिए।

## दोस्ती

कभी जो लड़ भी लें हम/ तुम साथ मेरा न छोड़ना,
दो पल ही सही बात हर रोज कर लेना।
दोस्ती में हमारी तुम गाँठ बस मत आने देना,
दो पल ही सही बात हर रोज कर लेना।
लड़ लेना, झगड़ लेना, गुस्सा हो लेना,
पर दोस्ती में तुम यह चुप्पी मत आने देना।
शिकायतें अपनी सौ बार सुना देना,
दिल अपना बस तुम सुना लेना,
मुझे सुनाना हो तो तुम सुना लेना,
आँखें अपनी बस तुम नम न कर लेना।
इस दोस्ती में तुम बस चुप्पी न आने देना,
दो पल ही सही बात तुम हर रोज कर लेना,
दो पल ही सही बात तुम हर रोज कर लेना

## मुस्कुरा देती है

जिंदगी की इस भाग–दौड में
माना वह थक चुकी है,/ हार गयी है/ टूट भी गयी है
मगर फिर भी/ मगर फिर भी/ वह मुस्कुरा जरूर देती है।
हाँ उम्मीद की किरण/माना कहीं खो गयी है,
खुशियों का इसको बस/ अब बेसब्री से इंतजार है।
मुश्किलों से लड़–लड़ के/ वह अब हार चुकी है
दो पल की खुशियों की सौगात से
वह अब और टूट चुकी है।/मगर फिर भी/मगर फिर भी/
वह मुस्कुरा जरूर देती है।
एक नई जिंदगी की तालाश में है वह
एक नए सवेरे के इंतजार में है वह
खुशियों से दामन जब उसका भरा होगा
मुश्किलों से टूट कर वह बिखरी
जब खुद को सँवारेगी/ उस ऐसे एक पल का उसको
बरसों से इंतजार है।/ जिंदगी उसकी कुछ ऐसी थमी हुई है
बरसों से जैसे एक छोर में नाव उसकी फँसी हुई है
कोशिशें उसकी हर बार बढ़ी हैं,
हिम्मत उसकी हर बार गहरी टूटी है
खुशी की एक झलक से वह ऐसी झूमी थी
जैसे बरसों अँधेरी रातों के बाद उसने सूरज की
पहली किरण देखी हो
उस दो पल की सौगात की खुशी
उसका दिल फिर तोड़ गयी
उसकी हिम्मत फिर कुछ इस कदर टूट गयी
कि अब दो पल की खुशियों का भी उसे कोई रास नहीं।
मगर फिर भी/ मगर फिर भी/ वह मुस्कुरा जरूर देती है।
भींगे नैनो से उसका बरसों का यह इंतजार
अब कुछ इस कदर है बढ़ा
कि जिस दिन खुशियों की दस्तक
उसके आँगन में आयी/ उसने झूम के भंगड़ा पहना है
और बस मुस्कुरा देना है / और बस मुस्कुरा देना है।

**–रीतिका वधवा**
स्नातक (वाणिज्य)

## क्यों? कैसे? कब?

क्यों? कैसे? कब? आज सिर्फ सवाल है,
खुद के लिए भी और दुनिया के लिए भी।
आँखें जहाँ जो देखती हैं, उसमें उनका जवाब ही खोजती हैं।
मन में जहाँ बदलाव लाने की उमंग है,
वहीं दिल के एकांत कमरे में एक खाली–सा ठहराव है।
बहुत कुछ करने की चाह है,
पर भीतर कोने में कहीं एक बेनाम निराशा है।
क्यों, कैसे, कब, आज सिर्फ सवाल है।
सपनों पर अल्प विराम–सा लग गया है,
पर नए सपने देखना आज भी नहीं छोड़ा है।
कारवाँ चलने का बस इन बँजारी आँखों को इन्तजार है।
क्यों? कैसे? कब? आज सिर्फ सवाल है।
हमेशा से खुद को अच्छा जाना है
खुद से प्यार किया है
लेकिन एक अलग दुनिया भी है उसमें भी खुद को चाहना है।
क्यों? कैसे? कब? आज सिर्फ सवाल हैं।
दुनिया थम तो गई है आज इस महामारी में,
पर पक्षियों ने उड़ना नहीं छोड़ा है,
फूलों ने खिलना नहीं छोड़ा है।
मैंने खुद आसमान से मिलना नहीं छोड़ा है।
नियति शायद सबसे सुन्दरता से दिखाती है
कि बदलाव में भी कैसे अपना रास्ता बनाना है।
शायद मेरा जवाब भी यहीं है,
बस जवाब के रूप में नहीं हैं।
उनका मुझसे परिचित होना अभी शेष है।
क्यों? कैसे? कब? आज सिर्फ सवाल हैं।

**– सौम्या त्रिपाठी**
बी.कॉम प्रोग्राम, सेमिस्टर–3, सेक्शन–बी, रोल नं. 164

# क्या सभी लड़कियाँ स्वतंत्र हैं लड़कों के जैसे?

जब ऐसे प्रश्न हमारे सामने आते हैं तो मनोदशा इतनी व्याकुल क्यों हो जाती है? क्या स्वतंत्रता जरूरी है? क्या लड़कियाँ अभी भी उतनी स्वतंत्र नहीं हैं जितने लड़के स्वतंत्र हैं? अगर नहीं हैं लड़कियाँ इस समाज में अभी भी स्वतंत्र तो क्या कभी आपने सोचा है कि कितना उनका मन व्याकुल हो उठता होगा है इन सब भेद–भाव को लेकर। अगर आप कहेंगे कि लड़कियाँ तो स्वतंत्र हैं तो आप 100 लड़कियों में 2 ही बात कर रहे हैं। अगर मान लीजिए वे 2 लड़कियाँ स्वतंत्र हैं तो उनकी स्वतंत्रता पर प्रश्न क्यों? मैं एक छोटे गाँव का स्थायी निवासी हूँ। मैंने अपनी आँखों से उन 98 लड़कियों की स्वतंत्रता को देखा है और उन 2 लड़कियों की स्वतंत्रता को भी देखा है। ऐसी स्वतंत्रता देखकर स्वतंत्रता का अर्थ बदल जाता है। हमारे गाँव में कहावत है (जो भोजपुरी में है।)

कि ''लड़की कितना भी पढ–लिख लओ''
ओकरा के चुलहा–चौकी ही करकेवा।

इन बातों को सुनकर उन 2 लड़कियों की मनोदशा कैसी होती होगी? एक तो उन्हें औरों के मुकाबले पढ़ने की स्वतंत्रता मिली थी, लेकिन उनसे उनके बाद की स्वतंत्रता क्यों छीन ली जाती है? क्यों कहा जाता है कि तुम कितना भी पढ़–लिख लो तुम्हें तो घर–गृहस्थी ही चलानी है। इन सब बातों को देखकर और सुनकर क्या कभी आपने सोचा है उन गुलामी की जंजीरों से जकड़ी हुई लड़कियों के बारे में? कितना उत्पीड़न होता होगा उनके मन में? आखिर ये समाज कब तक कचोट पहुँचाता रहेगा? कब तक उनकी सहनशीलता की जाँच होती रहेगी? कहा जाता है कि जब तक पाप का घड़ा भर नहीं जाता तब तक घड़ा फूटेगा नहीं। जिस दिन ये घडा रूपी लड़कियाँ फूटेंगी उस दिन एक समाज में ये क्रांति लायेंगी और समाज की नजरिया लड़कियों के प्रति बदलेगी।

मैं अपने जीवन में घटित घटना के बारे में बताता हूँ।

मेरी दोस्त थी और वह बड़े ही चंचल स्वभाव की थी। हर किसी से अच्छे से बात करती थी। एक दिन मैंने अपने एक लड़के दोस्त से पूछा कि कैसी है वह, तो उसने कहा अरे वह तो बेकार है, उसका अचारण सही नहीं है, वह हर किसी से बात करती है। तो यह क्या गलत है? हर किसी से बात करने में आचरण कहाँ से आ गया? चरित्र कहाँ से आ गया।

इन सब चीज़ों को देखकर मन व्याकुल हो उठता है। इस समाज की विचारधारा कब बदलेगी? इनकी सोच कब बदलेगी? लेकिन इन सब व्यथाओं को सहन करने वाली महिलाओं को मेरा प्रणाम है।

**–विनय कुमार (स्नातक)**

# महिलाओं के प्रति असमानता

जैसे एक गाड़ी को चलाने के लिए उसमें चार पहिये की जरूरत होती है, वैसे ही समाज के विकास के लिए महिलाओं की जरूरत होती है। प्राचीन काल में पुरूष को महत्त्व ज्यादा दिया जाता था, लेकिन महिलाओं को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता था। प्राचीनकाल में कुछ घरों में बेटियों के जन्म होने पर उन्हें मार दिया जाता था और लड़कों को महत्त्व दिया जाता था। उस समय लड़कों को हर चीज़ का अधिकार दिया जाता था,

जैसे :– शिक्षा प्राप्त करना आदि, लेकिन लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी और लड़कियाँ घर से बाहर नहीं निकलती थीं तथा लड़कियाँ या महिलाएँ किसी लड़के या पुरूष के साथ बात करते समय सर को ऊँचा करके नहीं कर सकतीं थीं। इस समय महिलाओं को घर के चारों दीवारों के अन्दर ही रहना पड़ता था और उन्हें घर की चारों दीवारों के अन्दर रहकर सारे काम करना पड़ता था जैसेः– घर का काम कढ़ाई, बुनाई आदि। प्राचीन काल में महिलाओं को पुरूषों के मुकाबलें कम समझा जाता था, लेकिन आधुनिक काल में महिलाओं और पुरूषों को समाज और घरों में भी समान दर्जा दिया जाता हैं, जैसेः– समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार, घर से बाहर निकलकर काम करने की अनुमति आदि। आधुनिक काल में जो पुरूष कर रहें हैं, वह चीज़ महिला भी करके दिखा रही है। आधुनिक काल में महिलाएँ अपने घरों के कामों के साथ बाहर के कामों को एक साथ सँभालती हैं।

**–रीना डे**

# ट्रेन का सफर

दुनिया में रहना है बस इक ट्रेन की सवारी,
टिकट कटा कर बैठे है सब यहाँ बारी–बारी।
सभी हैं यहाँ बच्चे, बूढ़े और नारी,
ट्रेन का चालक नजर नहीं आता, पर ट्रेन है जारी।
पहली क्लास की टिकट थी, तो सीट मिल गई,
तीसरी क्लास वाले तो अधिकतर खड़े ही हैं भई।
फिर भी सीट को लेकर झगड़े तो हो ही रहे हैं,
कुछ तो बिना टिकट ही इधर–उधर चढ़े हैं।
एसी वाले डब्बे में तो जैसे हर शख़्स अकेला है,
मगर तीसरी क्लास वाले में तो मानो लगा इक मेला है।
उस शानदार डब्बे में तो एक चुप्पी–सी छाई है,
लो ठहाकों की आवाज़ इस आम डब्बे से आई है।
एसी वाला सोच रहा काश होते खुली हवा के झोंके,
दूसरी क्लास वाला जूझ रहा, कैसे तेज हवाओं को रोके।
मखमली सीटें तो जैसे अचेत हों न हँसती न हँसाती,
तेज ठण्डी हवाएँ चादर–सी आँचल में छुपातीं।
अरे यह क्या यहाँ भी बिना टिकट वाले आ गए,
गद्देदार सीटों के सपने इनको भी हैं भा गए।
तो, अब मैं अपनी सीट को जकड़ लूँ,
और अपने कीमती सामान को हलके से पकड़ लूँ,
कहीं मेरे सुंदर कपड़े भी मैले न हो जाएँ,
इनके पसीने की महक से यूँ ही ग्रस्त न हो जाएँ।
इनको तो इसकी आदत–सी लगती है,
जाने इनके चूल्हे की आग कैसे सुलगती है।
फिर भी कैसे भूल गए, इक सफर ही तो है,
रूकी, उसके उतरने की खबर भी तो है।
मुझे भी उतरना है और आगे जाना है,
यही सच है, यही सच्चा फसाना है।
स्टेशन तो सब के लिए एक ही होगा,
फिर क्या, कौन खड़ा था और किसने आराम को भोगा?
सीट, डब्बा यहाँ रहेगा, पर सामान साथ ही होगा,
कर्मों और सोच का भार तो ले जाना ही होगा।
और कुछ साथ नहीं जाएगा, समझ लेते तो अच्छा था,
यूँ ही सोचते लड़ते रहे, सुकून से होते तो अच्छा था,
बारी तो आएगी ही, जान लेते तो अच्छा था,
इस जादुई भीड़ के रहस्य को भाँप लेते तो अच्छा था।
अब तो समय आ गया, अब तो जाना ही होगा,
अनुभवों की इस लड़ी को साथ ले जाना ही होगा।
अच्छा होता, जो कुछ खुद से जूझ लेते,
इन नकाब ढके चेहरों को थोड़ा–सा बूझ लेते।
अन्तर में ही तो था, दूर समझते रहे,
बस यूँ ही ट्रेन की छुक–छुक में व्यर्थ ही बहकते रहे।
अपनी ही नजरों से खुद ही धोखा खा गए,
कोई बोला चलो आगे, अब स्टेशन पर आ गए।

**नवीना मैहन**
**एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग**

# भारत बनाम न्यूजीलैंड

अब हाल ही में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट टीम न्यूजीलैंड के दौरे पर थी। वहाँ पर टीम ने 5 टी– 20 और 3 एक दिवसीय मुकाबलों की श्रृंखलाएँ खेलीं। जिसमें हम शुरूआत करते हैं 5 मुकाबलों की टी–20 श्रृंखला से, जिसे भारतीय टीम ने सभी पाँच मुकाबलों को जीत कर श्रृंखला को अपने नाम कर लिया और यह भारत की न्यूजीलैंड पर, उसी की सरजमीं पर पहली श्रृंखला जीत थी। यह भारतीय टीम के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

भारत ने यह श्रृंखला 5–0 से तो जीती है, परन्तु यह श्रृंखला बड़ी ही रोमांचक रही। क्योंकि इसमें भारत और न्यूजीलैंड के दो मैच समान स्कोर पर खत्म हुए। अर्थात् मुकाबला टाई हो गया और हमें परिणाम निकलने के लिए सुपर ओवर का सहारा लेना पड़ा और यह भी लगातार दो मुकाबलों में हुआ।

इन मुकाबलों में भारत ने जीत हासिल की और फिर से यह बात उठने लगी कि न्यूजीलैंड का सुपर ओवर के साथ रिश्ता ठीक नहीं है, क्योंकि वह आज तक एक भी सुपर ओवर मुकाबला नहीं जीता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है कि न्यूजीलैंड ने विश्व कप के फाइनल मुकाबले में सुपर ओवर में भी मुकाबला बराबरी पर छोड़ा, परन्तु इंग्लैंड ने पूरे मुकाबले में अधिक बार गेंद को सीमा रेखा के बाहर भेजा था, इसलिए न्यूजीलैंड मुकाबला हार गया और इससे ICC के नियमों पर भी सवाल उठने लगे थे।

न्यूजीलैंड ने एक दिवसीय श्रृंखला में भारत को 3–0 से हराया।

**प्रवेश**
स्नातक (वाणिज्य) क्रमांक–19/21073

# सूरजकुण्ड अंतर्राष्ट्रीय मेला

हरियाणा के फरीदाबाद शहर में हर वर्ष सुरजकुण्ड मेले का आयोजन होता है, जिसका विषय हिन्दुस्तान के राज्यों पर आधारित होता है, जैसे इस वर्ष 'हिमाचल' इसका विषय है। यह अंतर्राष्ट्रीय मेला है, जिसमें विदेशियों का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। यह मेला, हर वर्ष 1 से 14, 17 फरवरी तक आयोजित किया जाता है। इस मेले में हमारी भारतीय संस्कृति को बड़े ही अच्छे ढंग से दिखाया जाता है। इस मेले में अनेक संघ हैं, जिस पर हर वक्त कुछ–न–कुछ होता रहता है, जैसे हरियाणवी रागिनी, पंजाबी गीतकारों के गीत, ग़ज़लें, नाच और भी बहुत कुछ होता है।

यह मेला बहुत ही विशाल होता हैं और भिन्न–भिन्न प्रदेश के लोग इसमें अपने–अपने क्षेत्रों की मशहूर चीज़ें बेचते हैं, जो महँगी होती हैं। जैसे अफगानिस्तान के कालीन और धाना के इत्र इत्यादि। इस मेले में बहुत से अलग–अलग व्यंजन भी मिलते हैं, जैसे सबसे आकर्षक व्यंजन है ''रस भरी जलेबी'' जो 150 रूपये किलो मिलती है। यह हरियाणा के सुहाना का स्वादिष्ट व्यंजन है। उसमें संपूर्ण भारत के लोग आते हैं और इसका आनन्द उठाते हैं। दूर के लोगों के लिए ठहरने के होटल की सम्पूर्ण व्यवस्था भी यहाँ होती है। जगह–जगह पर लोग नगारे लेकर नाचते हैं और नचाते हैं। हरियाणा सरकार की तरफ से यहाँ पूर्ण सुरक्षाकर्मी होते हैं और जगह–जगह कैमरों की सुविधा भी यहाँ है। जिससे चोरी होने के मौके न के बराबर हो जाते हैं और लोग मेले का आनन्द उठाते हैं। हर दो दिन में कोई–न–कोई यहाँ वी.आई.पी. मेहमान आते हैं, जिसके आगे कार्यक्रम पेश किये जाते हैं। इस मेले के मध्य में एक चौपाल है, जहाँ कलाकार अपनी कला लोगों को दिखाते हैं। इस मेले में कम–से–कम 500 से ज्यादा दुकानें हैं, जिसमें कई बार ऐसी चीज़ें भी होती है, जो हमने अभी तक नहीं देखी होंगी।

इसमें स्पेशल मेले के लिए हरियाणा रोड वेज परिवहन की बस लगाई जाती है, ताकि लोगों को कोई कष्ट न हो। मेले में पहले बड़े–बड़े विशाल झूले लगाए जाते थे, लेकिन इस बार सुरक्षा को ध्यान में रखकर झूले नहीं लगाए गए। इसका उद्घाटन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा किया गया था। लेकिन मेले में प्रमुख झलक उस राज्य की होती है, जिस राज्य का विषय होता है। इस बार जैसे हिमाचल का विषय है तो हिमाचल राज्य से जुड़ी संस्कृतियाँ मेले में ज्यादातर दिखाई जाती हैं। यह मेला इतना बड़ा है कि इसका मजा लेने के लिए कम–से–कम 5–6 घंटे का समय लगता है। इस मेले की प्रवेश फीस 120 रुपये है और छात्रों के लिए 50 प्रतिशत तक की छूट होती है और शनिवार, रविवार के दिन इसकी प्रवेश निधि 150 होती है, क्योंकि इन दो दिन मेले में बहुत ज्यादा भीड़ होती है।

युवाओं को इस मेले में बहुत दिलचस्पी हैं, क्योंकि उन्हें नाच–गाना, जगह–जगह पर मिलता–रहता है। लोग दूर–दूर से पैसे खर्च करके इस मेले का आनन्द उठाने के लिए आते हैं, क्योंकि इस मेले में हर वर्ष कुछ–न–कुछ नया होता रहता है और लोगों की उत्सुकता भी बहुत ज्यादा बनी रहती है। अंतः मं यही कहना चाहूँगा कि एक बार में इस मेले में जाएँ और इसका आनन्द उठाएँ।

**हनी**
स्नातक (वाणिज्य)

# भाषा का सवाल

''राष्ट्र–प्रगति के लिए किसी राष्ट्र के नागरिकों की भाषायी स्तर पर एकता का होना उतनी ही बुनियादी आवश्यकता है, जितनी उस राष्ट्र के नागरिकों में स्वतंत्र होने की इच्छा का होना। एकता और स्वतंत्रता एक–दूसरे की पूरक हैं–सुदृढ़ राष्ट्र–दृष्टि रखने वाले दूरदर्शी महात्मा गांधी से अच्छा इसे भलीभांति और कौन समझ सकता था? तभी तो वह एक साथ दो लड़ाइयाँ लड़ रहे थे–पहली राजनैतिक साम्राज्यवाद के खिलाफ और दूसरी–भाषायी साम्राज्यवाद के खिलाफ। अंग्रेजों से लड़ाई कठिन थी ही, अंग्रेजियत से लड़ाई भी उतनी ही दुश्वार थी। राजनैतिक साम्राज्यवाद से तो गांधीजी ने मुक्ति दिला दी, परंतु भाषायी साम्राज्यवाद भद्र वर्गों के अंग्रेजी–मोह के कारण बना रहा, जो वर्तमान समय में भी शोषण का कारण बना हुआ है। आश्चर्यजनक ही है कि आजाद भारत में इस शोषण के जारी रहने की सारी वजहें हिन्दी–उर्दू विवाद में समाहित कर दी जाती हैं, जिसका समाधान गांधीजी ने अपने जीवित रहते ही दे दिया था। इसीलिए जब–जब हिंदी–उर्दू विवाद की लौ तेज होने लगती है, गांधीजी तब–तब प्रासंगिक बन जाते हैं और जन सामान्य में भी यह जानने की उत्सुकता बढ़ जाती है कि आखिर इस विवाद पर गांधीजी के क्या दृष्टिकोण थे?

राजा शिवप्रसाद की भाषा–नीति और उनके द्वारा शुरू की गई नागरी लिपि आंदोलन की सफल पृष्ठभूमि में भारत के स्वतंत्रता–आंदोलन की बागडोर जब महात्मा गांधी के हाथों में आई तो सन् 1918 ई0 से उन्होंने राष्ट्रभाषा का प्रचार–कार्य

प्रारंभ कर दिया। उन्होंने इससे ठीक पहले सन् 1917 ई0 में भड़ौंच में आयोजित गुजरात शिक्षा परिषद् के दूसरे अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए राष्ट्र–भाषा के क्या–क्या लक्षण होने चाहिए, इस पर प्रकाश डाला–

1. अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
2. यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।
3. उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्पस्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।
4. उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।

उपर्युक्त मान्यताओं के विश्लेषण से गांधीजी की भाषा–संबंधी निम्नलिखित दृष्टिकोण उभरते हैं–

- भारतवर्ष के राजकाज से अंग्रेजी के वर्चस्व को हटाना–जब स्वराज्य मिले तब तक राष्ट्रभाषा जनसमुदाय में इतनी लोकप्रिय हो, जबकि उसको कानूनी दर्जा (राजभाषा के रूप में) स्वभाविक रूप में मिल जाय। ऐसा इसलिए क्योंकि भारत जैसे बहुभाषिक देश में राष्ट्रभाषा–संबंधी आम–सहमति बनाने में पूर्व प्रयास तो करना ही पड़ेगा।
- भाषायी आधार पर दो मजहबों के बीच चौड़ी होती खाई को पाटना–चूँकि गांधीजी अपने स्वराज्य की अवधारणा में लोक को सबसे ज्यादा महत्व देते थे। अतः उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी–उर्दू विवाद की तुलना में हिन्दुस्तानी भाषा को वरीयता दी। हिन्दुस्तानी लफ्ज उन्होंने गलतफहमी से बचने के लिए ही प्रयुक्त किया था।

गांधीजी ने हिंदी–उर्दू विवाद के समाधान के लिए हिंदुस्तानी नाम क्यों उपयुक्त समझा? इस हिंदुस्तानी का रूप क्या होगा? यह किस लिपि में लिखी जाएगी–देवनागरी या फारसी? ऐसे तमाम सवालों पर उन्होंने अपना स्पष्ट दृष्टिकोण व्यक्त किया। स्वतंत्रता आंदोलन के तेज होने के समानांतर ही देश में कुछ ऐसा माहौल बनता जा रहा था कि उर्दू को मुसलमानों की और हिंदी को हिंदुओं की भाषा के रूप में पहचाना जाने लगा था।

इस गलत परंपरा के कायम होने के पीछे अविश्वास की राजनीति तो थी ही धार्मिक और सामंती शक्तियों के वर्चस्व कायम रखने के स्वार्थ–प्रयोजन भी थे। तभी तो हिंदी जानबूझ कर अरबी–फारसी शब्दावली से और उर्दू जानबूझ कर संस्कृत की शब्दावली से परहेज करने लगी थी।

गांधीजी इस बात को अच्छी तरह समझ चुके थे कि जैसे संस्कृतनिष्ठ हिंदी सबको पसंद नहीं आ सकती, उसी प्रकार अरबी–फारसी से लदी उर्दू रूप वाली हिंदी भी सभी के लिए ग्राह्य नहीं हो सकती। इसी कारण वह राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदुस्तानी पर बल देते थे, जो हिंदी और उर्दू दोनों का गंगा–यमुनी संगम हो। परंतु दुर्भाग्य से न तो उर्दू वालों ने गांधीजी के दृष्टिकोण को उसकी संपूर्णता में लिया और न हिंदी वालों ने। फिर भी गांधीजी हिंदुस्तान के संदर्भ में सत्य समझकर ही हिंदुस्तानी के समर्थक बने रहे। वस्तुतः गांधीजी हिंदुस्तानी के माध्यम से हिंदी और उर्दू के बीच एक ऐसा सेतु तैयार करना चाहते थे, जिस पर चलकर देश की दो बड़ी जातियों के बीच का भाषायी विवाद मिट सके और हिंदुस्तान सुसंगठित और शक्तिशाली बन सके। इस अवधारणा को अमलीजामा पहनाने के लिए ही गांधीजी ने 'हिंदुस्तानी प्रचार सभा' की स्थापना की थी।

हिंदुस्तानी के रूप को स्पष्ट करते हुए गांधीजी ने कहा था कि यह मिली–जूली हिंदी–उर्दू का आसान रूप है। उत्तर भारत के जन–सामान्य (हिन्दू–मुसलमान) इसे बोलते हैं और अन्य लोगों को भी इस रूप में बोलने की कोशिश करनी चाहिए। प्रेमचंद, सुदर्शन, राजेंद्र सिंह बेदी, उपेन्द्रनाथ अश्क, कृश्नचंदर, फिराक गोरखपुरी जैसे लेखकों के साहित्य में इस हिंदुस्तानी की बानगी देखी जा सकती है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि एक भाषाशास्त्री की दृष्टि से गांधीजी ने कभी हिंदी–उर्दू का अध्ययन नहीं किया, किंतु सार्वजनिक कामों के लिए जितना जरूरी था, उतना जानने में रुची थी। यानी गांधीजी सामान्य मनुष्य को केंद्र में रखकर ही हिंदुस्तानी का प्रचलित रूप रखना चाहते थे। गांधीजी के अनुसार अंतर्प्रान्तीय या राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदुस्तानी भारत की दो संस्कृतियों का सुखद सम्मिश्रण होगी। आवश्यकता महसूस होने पर बोलचाल की प्रचलित प्रांतीयभाषाओं (मातृभाषाओं) की शब्दावली भी हिंदुस्तानी में सम्मिलित कर ली जाएगी, परंतु प्रांतीय भाषाओं के विकास का अतिक्रमण यह कतई नहीं करेगी।

लिपि के उलझन का समाधान प्रस्तुत करते हुए गांधीजी ने कहा कि हिंदुस्तानी के लिए देवनागरी और फारसी दोनों लिपियाँ जरूरी हैं। याद रखना चाहिए कि उर्दू भाषा और फारसी लिपि सिर्फ मुसलमानों की नहीं है और न ही हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि सिर्फ हिंदुओं की है। जिस तरह पंजाब के हिंदू उर्दू भाषा और फारसी लिपि का व्यवहार करते हैं, उसी तरह बंगाल के मुसलमान बांगला और नागरी लिपि व्यवहार में लाते हैं। अतः दो लिपियों को चलन में रखने के पीछे उद्देश्य यह नहीं है कि दोनों जातियों का तुष्टीकरण किया जाए, बल्कि उद्देश्य यह है कि ज्यादा–से–ज्यादा लोग दोनों लिपियों को जानने, सीखने और अपनाने के क्रम में अंत में जो लिपि ज्यादा आसान लगेगी उसे ही अपनाएँगे।

यानी एक वक्त ऐसा आएगा जब जिस लिपि का ज्यादा जोर रहेगा, वह लिपि ज्यादा लिखी जाएगी और तब वही सर्वमान्य ढंग से राष्ट्रीय राजकीय लिपि हो जाएगी। 'हरिजन सेवक' के जनवरी 1948 के अंक में लिपि पर अपना दृष्टिकोण और स्पष्ट करते हुए गांधीजी कहते हैं कि बहुसंख्यक हिंदुओं द्वारा फारसी लिपि का बहिष्कार आत्मविश्वास की कमी के कारण है। उन्हें यह समझना चाहिए कि फारसी लिपि के मुकाबले यदि नागरी परिपूर्ण है तो अंत में उसी की जीत होगी,

ठीक उसी तरह जैसे कठिन फारसीनिष्ठ उर्दू और कठिन संस्कृतनिष्ठ हिंदी के मध्य जीत स्वाभाविक हिंदुस्तानी की होगी।

हिंदी–उर्दू विवाद में गांधीजी का दृष्टिकोण अंततः यही स्पष्ट करता है कि वह भारत में जिस तरह हिंदू–मुसलमानों का भेद बनावटी मानते थे, उसी तरह भाषा का भेद भी बनावटी मानते थे। सच भी है कि भेद सिर्फ पढ़े–लिखों ने पैदा किया था, जो आपसी विश्वास के नहीं पनपने के कारण आज भी बरकरार है।

हमारे देश की यह विडंबना ही रही है कि कभी एक मुसलमान (अकबर) आकर हमें हिंदू–मुस्लिम सौमनस्य सिखा जाता है तो कभी एक अंग्रेज (गिलक्राइस्ट) आकर हिंदुस्तानी की महत्ता बता जाता है, परंतु हम अपने गांधीजी के बताए समाधान पर यकीन करने की इच्छाशक्ति नहीं जुटा पाते। आज के तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी हिंदी–उर्दू विवाद को छूने भर से डरते हैं कि गांधीजी की हिंदू–धर्मनिष्ठता किसी अन्य धर्म के प्रति सहिष्णुता और आत्मीयता के बीच नहीं आ सकी और न ही हिंदुस्तानी का आग्रह उन्हें अन्य जातियों से दूर ले गया। लेकिन जब सरकार ने ही दोनों को दो यात्राओं के रूप में मान्यता प्रदान कर दी हो और निहित कारणों से उनके अलग–अलग विकास के रास्ते बनाए जा रहे हों, तब विवाद की खाई को पाटना और भी कठिन है। अब भी समाधान यदि नजर आता है तो गांधीजी का ही कि यदि हिंदू अपने मुसलमान भाइयों के निकट आना चाहते हैं तो उन्हें उर्दू पढ़ना ही चाहिए और हिंदू भाईयों के निकट आने की इच्छा रखने वाले मुसलमानों को भी हिंदी जरूर सीख लेनी चाहिए। हिंदू और मुसलमानों की सच्ची एकता में जिनका विश्वास है, वे पारस्परिक विद्वेष के इन भयंकर हालातों पर हताश नहीं होंगे। सहिष्णुता, प्रेम और समन्वय का दृष्टिकोण ही दोनों को एक–दूसरे की भाषा सीखने के लिए प्रेरित करेगा।

जिस प्रकार दो संस्कृतियों के माता–पिता का बच्चा दोनों संस्कृतियों को स्वाभाविक ढंग से आत्मसात कर लेता है, उसी प्रकार हिंदुस्तान की साझी संस्कृति में यदि स्वार्थ का अस्वाभाविक बीज न बोया जाए तो हिंदुस्तानी भाषा भी अपने सर्जनहार के रंग में रंग जाएगी। दुर्भाग्य ही है कि गांधीजी की मृत्यु के 72 सालों के बाद भी हिंदी–उर्दू विवाद के समाधान का कोई अन्य विकल्प नहीं मिल पाया है, जिस पर इस एकमात्र उपलब्ध समाधान के क्रियान्वयन की अनिच्छा से आजादी मिलने के 73 वर्षों के बाद भी संपूर्ण राष्ट्र मुखर नहीं बन पाया है, आधे–अधूरे स्वराज्य के कारण राष्ट्र अभी भी गूँगा बना हुआ है।

**डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार, सहायक प्राध्यापक (हिंदी)**
दयाल सिंह कॉलेज (प्रातः) दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली–110003.
मो0 –9818945540
ईमेल –gyandsc15@gmail.com

# पिता के बाद

डाँटने वाला कोई नहीं रहता घर में पिता के बाद
सबसे ज्यादा प्यार करने वाला कोई नहीं रहता पिता के बाद
अपनी जरूरतों पर पर्दा डालने वाला कोई नहीं रहता, पिता के बाद
जिद पूरी करने वाला कोई नहीं रहता पिता के बाद
सुबह जल्दी डाँटकर उठाने वाला कोई नहीं रहता पिता के बाद
सर से सुरक्षा की छत हट जाती है पिता के बाद
पिता की कद्र समझ आती है पिता के बाद
लेकिन ऐसी कद्र भी किस काम की जो समझ में आये पिता के बाद।

**नाम– अंकित**
B.com (prog.)
Year - 2nd
Roll no- 20/40214

# आजाद परिंदा

मैं तो एक आजाद परिंदा हूँ।
पंख फैला कर हवा को मात देता हूँ।
मैं तो ऊँचाईयों का बादशाह हूँ।
आसमान को अपने पंखों में समेट लेता हूँ।
मैं वह परिंदा नहीं जो बिजली की गड़गड़ाहट से सहम जाता है।
मैं तो वह बाज हूँ जो बादलों के ऊपर गर्दिश लगाता है।
उड़ान भरता हूँ लक्ष्य पाने के लिए।
इरादे पक्के कर हवा को भी चीर जाने के लिए।
मंजिल पाता हूँ ऊँचाईयों से टकरा–कर।
हर मुश्किल को एक–एक अवसर बना कर।
लड़खड़ा भी जाऊँ तो अफसोस नहीं होता।
क्योंकि जिन्दगी का नाम ही है दूसरा मौका।

**–भूमिका**
Bcom program
Semester-3
Roll no -15

# प्रकृति और हम

समुद्र के बीचों बीच समुद्री जहाज पर एक समारोह हो रहा है। यह श्री राघव शर्मा को बेस्ट ऑथर ऑफ द ईयर अवार्ड मिलने की वजह से रखा गया है। राघव शर्मा अपनी कहानियाँ और किताबें सोशल इश्यू पर लिखते हैं। राघव शर्मा ने पिछले दो सालों में तीन किताबें लिखीं और तीनों ही सबसे ज्यादा बिकनेवाली किताबें बनीं। उनको सम्मानित करने के लिए यह समारोह International writers Association ने रखा है। समारोह में उन्हें बेस्ट सेलिंग राइटर ऑफ द ईयर अवार्ड और Best article on social issues award से सम्मानित किया गया। समारोह समाप्त होने के बाद वह अपने दोस्तों के साथ समुद्री जहाज से उतर कर छोटी नाव में घूमने के लिए समुद्री जहाज से थोड़ा दूर चला गया। वह एक नाव में और उनके दो दोस्त lohin और Manav दूसरी नाव में थे। तभी उन्होंने अपनी तरफ एक तूफान को आते हुए देखा और वह सब तेजी से अपने समुद्री जहाज की ओर जाने लगे lohn और Manav तो अपनी नाव को लेकर समुद्री जहाज तक पहुँच गए, लेकिन राघव समुद्री जहाज से थोड़ा दूर था। तूफान उसके और समुद्री जहाज के बीच था। वह जब तक समुद्री जहाज तक पहुँच पाता, इससे पहले ही तूफान उसे नाव समेत उड़ा कर अपने साथ ले गया। वह अपनी नाव को लेकर दूसरी तरफ चला गया। रात में तीन से चार घंटे तक लगातार नाव चलाने के बाद राघव तूफान से तो दूर आ गया था, पर वह अपने समुद्री जहाज से भी बहुत दूर आ गया था और रास्ता भी भटक गया था। सुबह होने ही वाली थी। सूरज की किरणें, समुद्र और आसमान जो एक जैसा ही दिख रहा था, उनके बीच से निकलती हुई दिखाई दे रही थी। तभी राघव को थोड़ी दूरी पर एक Island दिखा। उसने सोचा क्यों न उस Island पर जाकर किसी मदद का इंतजार करूँ। उसने जैसे ही अपनी नाव से पैर जमीन पर रखा मानो उसके मन में उम्मीद जाग गई कि वह बच जाएगा। उसने जैसे ही island पर कदम रखा, वह मंत्रमुग्ध हो गया वहाँ की खूबसूरती देखकर। पेड़–पौधे देखकर और चिड़ियों की चहचहाने की आवाज़ सुनकर उसे ऐसा लग रहा था कि वह स्वर्ग में है। वहाँ शहरों का शोर नहीं था। प्रकृति का स्वर था। वहाँ इंसानों की भीड़ नहीं थी। पक्षियों की कतारें थीं। यह सब देख कर वह मानो उस तूफान का शुक्रिया अदा कर रहा था, जिसकी वजह से वह इस जगह तक आ पाया। राघव साफ पानी की तलाश में आईलैंड के जगल की ओर जाने लगा। थोड़ा दूर जाने पर उसे झरने की आवाज सुनाई दी। उसे महसूस हो गया कि झरना उससे ज्यादा दूर नहीं है और वहाँ उसे पीने के लिए साफ पानी मिल सकता है। वह उस आवाज की तरफ गया। जब वह जंगल से पेड़ों की शाखाओं को अपने आगे से हटाते हुए झरने तक पहुँचा तो वहाँ कई तरह के पक्षी और अनंत रंग की तितलियाँ देखकर खुशी से आनंदित हो गया और कुछ क्षणों तक बस उस नजारे को देखता ही रहा। वह पानी पीने के लिए जैसे ही आगे बढ़ा, उसके पैर के नीचे का पत्थर खिसक कर गिर गया। झरने के साथ बहता हुआ वह उसके आखिरी सिरे तक आ पहुँचा जहाँ वह नदी और समुद्र से मिल रहा था। वह किनारे पर आकर गिर गया, तभी उसे थोड़ी दूर पर एक नाव दिखाई दी। राघव को लगा, वहाँ जरूर कोई होगा और उसे इस आईलैंड से बाहर निकलने में मदद मिल जाएगी। वह उस नाव के पास गया। वहाँ का दृश्य देखकर वहाँ एक बार और अचंभे में रह गया क्योंकि वहाँ प्लास्टिक के खाली डब्बे, मछली पकड़ने का जाल, किसी टूटी हुई नाव की लकड़ी, पानी पीने की खाली बोतलें और न जाने कितने और तरह का कचरा वहाँ पड़ा था मानो जैसे किसी बड़े शहर का सारा कचरा वहाँ फेंका गया हो। वह इसे देखकर हैरान था। क्योंकि इससे पहले इसे उस आईलैंड पर ऐसा कोई सबूत नहीं मिला था, जिससे यह पता चलता हो कि वहाँ कोई इंसान आया भी था। यह सब देखकर

वह बहुत निराश हो गया और वह वहाँ से थोड़ा आगे गया। तभी उसने देखा कि एक मरे हुए पक्षी को कुछ अन्य पक्षी खा रहे थे। यह देखकर वह बहुत हैरान रह गया। वह हैरान इस बात से नहीं था कि कुछ पक्षी उस लाश को खा रहे थे। वह हैरान यह देखकर था कि जिस मरे हुए पक्षी को वह खा रहे थे, उसके पेट में बोतलों के ढक्कन, लाइटर और कई छोटी–छोटी प्लास्टिक की चीज़ें थीं। यह सब देखने के बाद वह बहुत दुःखी हो गया। अब वह सोच रहा था कि यह सब कचरा यहाँ आया कैसे? साथ ही साथ वह यह सोचकर भी दुःखी था कि इंसानों ने कितना कचरा उत्पन्न किया है और वह अभी तक रुका नहीं है। वह वहाँ से थोड़ा दूर जाकर समुद्र–किनारे बैठ गया। घंटों बीत गए। दोपहर हो चुकी थी। सूरज आसमान पर चमक रहा था और मदद आने की राघव की उम्मीद धीरे–धीरे कम हो रही थी। वह बहुत भूखा भी था। उसने सोचा मैं समुद्र से कोई मछली पकड़ कर जरूर खा सकता हूँ। मुझे पानी में थोडा अंदर जाना चाहिए। उसने देखा कि वहाँ पर एक कछुआ था। वह समुद्र के तल पर एक पत्थर पर बैठा हुआ था। उसने सोचा मुझे जल्दी ही जाकर इसे पकड़ लेना चाहिए, वरना यह भाग जाएगा। तभी उसने यह भी सोचा कि अगर वह ज्यादा तेजी से जाएगा तो कछुआ कहीं उसकी आहट सुनकर न भाग जाए। इसलिए वह धीरे–धीरे आगे बढ़ा और उस कछुए को पकड़कर पानी से बाहर खींचने लगा। तभी उसे महसूस हुआ कि मानो उस कछुए को किसी ने बाँध रखा हो। जब उसने उसे किनारे के नजदीक आकर देखा तो कछुए के पैर प्लास्टिक की एक बड़ी–सी चादर से उलझे हुए थे। यह देखकर वह और निराश हो गया। अब उसे खुद पर गुस्सा आ रहा था और वह यह सोच रहा था कि हम सब ऐसी चीजों का इस्तेमाल ही क्यों करते हैं। उसने कछुए के पैर से प्लास्टिक निकालकर उसे समुद्र में छोड़ दिया। कुछ देर बाद राघव के दोस्त और उसका परिवार वहाँ आ गया। राघव उन सबके साथ शहर आ गया। राघव ने एक और किताब लिखी जिसका नाम है डार्क साइड ऑफ माइन। राघव ने इस किताब में अपने उस आईलैंड वाले अनुभव के बारे में लिखा, और उसने बताया कि जब उसने शहर आकर पता किया तो उस Island पर पहले कोई इंसान नहीं गया था। यह बात जानकर राघव हैरान हुआ। अपनी किताब में राघव ने उस आईलैंड पर मरने वाले सभी पक्षियों और जीवों की मौत का जिम्मेदार सभी इंसानों को ठहराया, जिनमें उसने खुद को भी शामिल किया था। हम दिन में रोज न जाने कितनी प्लास्टिक की चीजों का इस्तेमाल करते हैं, जिन्हें समाप्त नहीं किया जा सकता। हम लोग दिन भर में इतना कचरा उत्पन्न कर देते हैं, जिसका निपटारा पूरी तरह नहीं हो पाता। कभी हम यह सोचते भी नहीं हमारे द्वारा उत्पन्न किया गया कचरा कहाँ जाता है। उसका क्या होता है। उस कचरे का एक बहुत बड़ा भाग या तो शहर से दूर फेंक दिया जाता है या फिर नदियों में बहा दिया जाता है। नदियाँ अपने अंदर उन कचरों को बहाती हुईं समुद्र में ले जाती हैं।

# जिदंगी

वह ख्वाहिशें ही क्या जो अधूरी न रहे। हर लफ्ज का एक्स वाजिब हो यह जरूरी नहीं।

खत्म होते हैं रास्ते कहीं न कहीं जा कर। वह मंजिलें ही क्या जिसकी आगाज से दूरी न हो।

अँधेरी गुफा में मशाल उस पेय की तरह होती है जो छोर तक पहुँचा दे तो अमृत।

और बीच में बुझ जाए तो विष बन जाती है।

हौसलों को भी हमें संभालना होता है।

मंजिल तक रास्ते से हार मान लेने वाले कभी काबिल नहीं बन पाते।

दुश्मन कहलाते हैं वे अपने ही सपनों के जो उन्हें पूरा करने के लिए हाथ नहीं उठाते।

जीत को एक बार जिया जा सकता है, मगर हार का लुफ्त कई बार उठाया जा सकता है।

आना चाहिए जिदंगी जीने का तरीका, तभी मुठ्ठी भर कोशिशों से पहाड़ उठाया जा सकता है।

जाने की इच्छा है, वहाँ जहाँ नहीं पहुँचा कोई आज तक तो रास्ते क्यों ढूँढा करते हैं हम, उन्हें भी तो हमें ही बनाना है।

हर चुनौती से उभर कर जाना है। हर मुश्किल से गुजर कर कर जाना है।

जिंदगी तू डालती जा रूकावटें मेरे रास्तों पर, उनसे भी हँस कर हमें गुजर जाना है।

रुकना नहीं है, ठहर जाऊँगा, जब घेर लेगी थकावट दोबारा उठकर तेरी जंजीरों को भी तो तोड़ना है। ख्वाबों की राह पर अभी बहुत दौड़ना है।

मैं अपने पैरों को तेरी बेडियों में रहने दूँगा नहीं और तू मेरे पैर काट सकती नहीं।

रिश्ता बड़ा अजीब–सा है तेरा–मेरा, मगर जानता हूँ इस दुनिया में तू मेरे लिए आई है, और मैं तुझे जीने के लिए जिंदा हूँ।

रखकर एक तरफ कशमकश अपनी बैठेंगे एक दिन साथ में, जब आसमान की ऊँचाइयाँ मेरे वजूद को तेरे लिए हासिल होगी।

जब तू मेरी ख्वाहिश नहीं, हमसफर होगी।

जब दुनिया को परे कर सिर्फ तुझे जीना मेरी चाहत होगी। तू डर मत मैं निभाऊँगा अपना वादा सिर्फ तुझे खूबसूरत बनाने के लिए ही तो सारे ख्वाब देखें हैं।

**– नितेश**

बी. कॉम (पी) क्रमांक 18/70172

मो. 9354760152

# बेटियाँ

वह परियों का रूप होती है
या कड़कती ठण्ड में सुहानी–सी धूप होती है

या हर उदासी में मर्ज़ की दवा की तरह होती है
या ओस में शीतल हवा की तरह होती है

चिड़ियों की चहचहाहट है या कि
निश्छल खिलखिलाहट है

वह आँगन में फैला उजाला है

या सभी के गुस्से पर लगा ताला है
वह पहाड़ की चोटी पर सूरज की किरण है
या जिंदगी सही जीने का आचरण है

या है वह ताकत जो छोटे–से
घर को महल बना देती है

वह परियों का रूप हैं, पापा का गुरूर है
उनके होने से खुशियों का वजूद है।

**–दीपिका वशिष्ठ**
बी.कॉम (प्रोग्राम)
क्रमांक 20/40143

# सम्बोधित
# शीर्षक : टूटे–टूटे सपनों को फिर से मैंने जोड़ा है

टूटे–फूटे सपने को फिर से मैंने जोड़ा है
जिन जंजीरों ने रोका था, उन जंजीरों को तोड़ा है।

अँधेरे सपने को अब मुझे पूरा करना है,
निराश मन में विश्वास फिर से भरना है।

उड़ने वाले पंखों में हौंसला न थोड़ा है,
टूटे–फूटे सपने को फिर से मैंने जोड़ा है।

पथ में खड़ी चुनौतियों को स्वीकार करना है,
मुश्किलों से डर कर पलायन नहीं करना है।

मैदान–ए–जंग में अभी नहीं लड़ना छोड़ा है,
टूटे–फूटे सपने को फिर से मैंने जोड़ा है

संघर्ष भरे पालों ने गांधी जी को महात्मा बनाया,
जिनके मनोवांछित कार्यों ने भारत का परचम लहराया

इन वीर गाथाओं ने मेरा हृदय झिंझोड़ा है,
टूटे–फूटे सपनों का फिर से मैंने जोड़ा है।

**रचयिता – अनुज**
बी.ए, प्रोग्राम,
वर्ष : द्वितीय
रोल नं. 18/81025
ईमेल : anujkumar899@gmal.com

# प्रकाश हूँ मैं, संस्कार हूँ मैं

''तर्क से अर्थ को तो नहीं बदलते लेकिन फर्क जरूर पड़ता है।

जमाने से दूर हो गयी मैं बिना अपनी किसी गलती के
अपनों की ही गैर हो गयी मैं बिना अपनी मर्जी के

जब साथ था निभाना तो दे दिया धक्का बहुत ही बेदर्दी से
एक औरत हूँ क्या यह कसूर था मेरा
जो झोंक दिया मुझे आग की भट्टी में
तमन्ना थी मेरी मैं भी उड़ूँ पंछी बनकर
पर रौंद दिया पैंरों तले निर्जीव समझकर
जब पत्नी बनी तो सेवा की उन्हें देव समझकर
पर जब बारी आयी अपनी तो फेंक दिया
एक कोने में कचरा समझकर

क्यों मेरी जिंदगी को रंगीन से बेरंग बना दिया,
मैं ही क्यों पहनूँ सफेद उनके मरने पर?
अगर वह होता मेरी जगह तो क्या कर लेता,
समझौता अपने संग मेरे मरने पर?
भूल मत संगीत का सार हूँ मैं,
हिंदी में प्रयोग हुआ पूर्ण विराम हूँ मैं,
कृष्ण से पहले पुकारा जाने वाला राधा नाम हूँ मैं,
पिता का अभिमान हूँ मैं, माता की जान हूँ मैं,
बालक के द्वारा पुकारी गयी माँ हूँ मैं,
दंगल में धूल चटाने वाली बबीता फोगाट हूँ मैं,
जो कोई नहीं कर सकता उसे करने वाला अंतिम नाम हूँ मैं,
तय कर लिया मैंने, न सहूँगी एक भी वार

न समझौता, न अपमान, क्यों सहूँ सारे मैं ही इल्जाम,
मेरा जन्म कोई कलंक नहीं
बेटा–बेटी में कोई फर्क नहीं
दोस्तों के साथ हँसती एतराज था उसमें भी
कपड़ों का ढंग बदलती तो विरोध हुआ उसमें भी
कुछ न करो बिना हमारी मर्जी के
क्यों....?
क्या मैं नहीं हूँ इस पृथ्वी से
यह समय की परिभाषा क्यों मेरे लिए बदल गयी
यों घर की खिड़की क्यों मेरे लिए बंद हुई
क्यूँ घर का चूल्हा पहले मैं ही जलाऊँ
लेकिन फिर भी भोजन से ज्यादा ताने मैं खाऊँ

डूबा दी थी कश्ती मेरी एक बस्ती में
रोई थी बहुत मगर न सुनी मेरी किसी भी व्यक्ति ने।

तुम तो बदलो न, लेकिन मैं बदल जाऊँ
जीवन की परिभाषा होती मुझसे ही आरंभ
लेकिन मेरे ख्वाबों की चादर खुलने से पहले ही
हो जाती बंद।

घड़ी की सुइयों पर आँखों से पहरेदारी है
जमाना तो बदल गया लेकिन
सोच में वही कभी न खत्म होने वाली भूलने की बीमारी है।

औरत की परिभाषा बदलकर रख दी इस
तबके ने,
इस्तेमाल कर फेंक दे कचरे के डिब्बे में
क्या करोगी पढ़कर छोड़ो ये फिजूल की बातें
बस पैरों की जूती बन जाओ यही है
असली ज्ञान की बातें
भला इसमें क्या करेगी तुम्हारी असली किताबें।

कोर्ट के चक्कर काटे उसने / इज्जत तार–तार हुई
अब क्या बाकी है मुझमें/ न हुई सुबह उस रात के बाद
जब डाला था हाथ बड़ी बेबाकी से उसने
अब लग रहा है मुझे बोझ सबकुछ
खत्म कर दूँ
क्या जिंदगी आज / या खड़ी हो जाऊँ
फिर से डटकर एक बार
हो गई थी मुझसे एक गलती उस रात
क्यों न लिया था मैंने माँ काली का अवतार
वह फिर न करता ऐसी दरिंगी किसी और के साथ

मैं जानती हूँ सब नहीं हैं
एक समान
कुछ लोग देना जानते हैं
नारी को सम्मान
एक बार करो फिर से मिलकर औरत को प्रणाम।
अब तय करो तुम क्या करना है
तुम्हें उड़ना है या तोड़ देना है
बीच आसमान में ही दम।

**–आयुषी**
स्नातक (वाणिज्य)
क्रमांक 19 / 10295

# अजन्मी बेटी की चिट्ठी

माँ मैं तुझे माँ समझकर
लिख रही हूँ चिट्ठी
मुझ तक एक सनसनी खबर
लायी थी तेरे आँगन की मिट्टी।

सुन कर उस खबर को
रूह उठी मेरी काँप
जल्दी से उठकर उँगलियों से
कद लिया अपना नाप।

छोटी–सी तो जान हूँ
आखिर कितना खाऊँगी
यदि पनपनूँगी मैं
तो तेरा आँगन ही महकाऊँगी।

माँ सुना है मैंने
पर होता नहीं यकीन
माँ भी तो एक बेटी है
वह होगी बेटी की शौकीन।

माँ भला ऐसा क्यों करेगी
वह तो कितनी प्यारी,
उसने ही तो बीज बोया है
अब वह क्यों तोड़ेगी क्यारी?

आखिर माँ किसी से
मेरी जान लेने को कैसे कह सकती है?
अपने जीते जी मुझ पर वार
कैसे सह सकती है?

माँ मेरे हाथ तो इतने मजबूत भी नहीं
कि क्लीनिक जाने से आपको रोक लूँ
या फिर कत्ल से पहले
डॉक्टर को मैं टोक दूं।

जी कर करता है आपसे लिपट जाऊँ
पर इतनी मजबूत नहीं मेरी बाँहें
क्या–क्या लिखूँ इस छोटे ख़त में
मन तो बहुत कुछ चाहे।

माँ आपने जो दवा ली है
वह मेरे शरीर को नष्ट कर देगी,
माँ प्लीज मत खाना आप उसे
वह मुझे बहुत कष्ट देगी।

डॉक्टर की हथौड़ी
मेरी खोपड़ी को चूर कर देगी
माँ वह मुझे
आपसे बहुत दूर कर देगी।

उनकी कैंची मेरे
हाथ–पैरों को काट देगी,
मेरे शरीर को
टुकड़ों में बाँट देगी।

ऐसे फिसलूँगी आपके हाथों से
जैसे साबुन की टिकिया
माँ सोचो फिर किसको
माँ कहकर
रोयेगी आपकी बिटिया।

माँ तुम
ऐसा मत करना
मुझसे नहीं तो
भगवान से डरना।

भागूँ तो आखिर कहाँ
मैं तो अभी डोल नहीं सकती।
चीखूँ भी तो कैसे
मैं तो कुछ बोल नहीं सकती।

माँ मुझे अपने
आँचल में छिपा लो,
मौत के खण्डहर से
मुझे बचा लो।

माँ मैं जन्म लेना
चाहती हूँ
अपने पंखों के रंग
अम्बर को देना चाहती हूँ।

अभी तो छम–छम नाचूँगी
मैं नन्हे–नन्हे पैरों से
मुझे है तेरे अंक में खेलना
क्या लेना है गैरों से।

चिंता मत करो माँ
मैं तुम पर बोझ नहीं बनूँगी
मार के पत्थर खुद तोड़ूँगी
राह अपनी बनाकर चलूँगी।

माँ मुझे जीने का
अवसर दो
आशीष मेरे
दामन में भर दो।

तेरे आँगन में
शहनाई बजेगी,
मेरे हाथों में
मेहँदी रचेगी।

निकलेगी सगुन
भरी डोली,
आँसुओं से
भर जायेगी झोली।

उड़ जाऊँगी तेरे आँगन से
चिड़िया बनकर,
रोते–रोते जाऊँगी
गुड़िया बनकर।

कागज छोटा है माँ
मुझे है बहुत कुछ कहना,
धारण करो अंक में माँ
मुझे बनाकर अपना गहना।

## खिलौना

इस जिंदगी के खेल में
मेरा बस एक ही खिलौना है
बहुत प्यारा है वह मुझे
सबसे सलोना है।

वह मेरा राजा बेटा है
वह मेरी रानी गुड़िया है
मेरे आँगन की बस
तो एक ही चिड़िया है।

वह शाम की ठण्डक
वह धूप सलोनी है
अच्छे तो बहुत हैं दुनिया में
पर वह सबसे सलोनी है।

जो सिकन मेरी दूर करे
वह वह माथे की बिंदिया है
जो सुकून देती है मुझे
वह आँखों की निंदिया है।

जो मेरी जिंदगी को महकाए
वह फूल वह है
उसके कदमों में पड़कर
जो मखमल–सी हो जाए
वह धूल वह है।

फूल से गिरते हैं
जब भी वह मुस्कुराती है
उत्सव हो जाता है
जब वह खिलखिलाती है।

मन लगता नहीं कहीं फिर
जब भी वह मुझे बुलाती है
मैं आ नहीं पाती बेटा
पर याद तेरी बहुत आती है।

तेरी अलमारी तो खिलौने से भरी
पर मेरे पास बस एक ही खिलौना है
मेरी जिंदगी की खूबसूरती की वजह
तेरा जिदंगी में होना है।

## वृद्ध घर

साँसें मेरी रूकी–रूकी हैं,
वृक्षों की शाखा झुकी–झुकी है।

झुर्रियाँ पड़ गयीं मेरे गालों पर,
काई जमीं है बालों पर।

तुम्हें पुकारते–पुकारते दाँत भी मेरे घिसने लगे हैं,
तुम्हारी सूचना तो नहीं मिली, पर मेरे पतन के पल मिलने लगे हैं।

तुम्हारे कदमों की आहट मुझे बहुत सताती है,
तुम्हारी हँसी प्रायः मुझे रुलाती है।

तुम्हारी महक कदमों में अभी तक बंद है,

पर अब तुम्हारी याद में वह भी मंद–मंद है।
पुस्तकों को मूषकों ने पढ़ डाला है,
साथ ही बस्तों को भी गढ़ डाला है।

तुम्हारी तस्वीर को ढँक दिया है मकड़ियों के जालों ने
और मेरे हाथ भी बाँध रखे हैं तुम्हारे तालों ने।

भोजन के ग्रास तुमने मेरे हाथों से खाए हैं,
फिर आज क्यों मुझ पर ताले लगाए हैं?

नल के तो आँसू ही सूख गए हैं, गम में,
दीवारें पूछें क्या कोई सौदा होगा इससे कम में।

लालटेन की बत्ती जाने कब से बुझी है,
और तुम्हारी अभिलाषाएँ अन्यत्र कहीं बुझी हैं।

जन्मपत्री के पन्ने तुम्हारा इंतजार कर रहे
तुम नहीं तो तुम्हारी भूमि से प्यार कर रहे

मैंने तुम्हें लाड़ से पाला है
गिरने से पहले मैंने ही सँभाला है

क्या तुम भी मुझे उठाओगे
हे मालिक तुम कब आओगे?

## घुँघरू

आँसू नहीं हैं
संवेदना के घुँघरू हैं
ये तभी बजते हैं
जब यादों से रूबरू होते हैं।

पत्थर पिघल जाता है
जब ये झन–झन बजते हैं
दिल से निकल कर
जब ये आँखों में सजते हैं।

ये तभी बजते हैं
जब दिल में शोर होता है
जब विश्वास का धागा
एक कच्ची डोर होता है।

बहुत कम लोग सुन पाते हैं
इन घुँघूरुओं की आवाज को
बहुत कम ही जान पाते हैं
इनमें छुपे राज को।

गहरी होकर भी भाषा इनकी
कितनी शांत होती है
गमों की भीड़ में भी
यादें एकांत होती हैं।

ये घुँघरू तभी गिरते हैं
जब मन घायल होता है
यादों का सिलसिला
एक झनझनाती पायल होता है।

## पर्वत से बहता पानी

तुम पर्वत जितने शांत हो
मैं लहरों जैसी चंचल
तुम अडिग–अमित सिद्धांत हो
मैं भावनाओं की हलचल।

तुम संतुष्टि के दृष्टांत हो
मैं संवेदना का सागर
मैं ही तुम्हें प्लावित करती
भरती आँखों की गागर।

मैं वेगों में बहकर
टकराती तुझसे पल–पल
तुम रोक मुझे धीमा करते
राह दिखाते हरपल।

तुम मिट्टी को पहचानते हो
जानो सुगंध आसमानी
गहरी–ऊँचाई में क्या जानो
हूँ इन सबसे अनजानी।

तुम खान में छिपे हीरे हो
मैं रोशनी से चमकता पीतल
पर तपते हो जब धूप से तुम
तब मैं ही करती हूँ शीतल।

हाँ सच कहते हो तुम
कि बड़ी सुन्दर है यह कहानी
सुन्दर तो लगता ही है
पर्वत से बहता पानी।

**–संस्कृति यादव**
बीए हिंदी (प्रतिष्ठा)
रोल–19 / 24034

# इक गुज़ारिश

इक गुज़ारिश की थी इन हवाओं ने मुझसे,
कई सालों पहले,
अपना रुख़ मोड़ लेने की,
पर उस वक्त मैं नासमझ था
हवाओं की गुज़ारिश को लाँघता हुआ चला गया।
रुकता भी कैसे?
हवाओं की भाषा जो मुझे नहीं आती थी।
भूल गया था कि लोग चंद रुपयों की खातिर,
ईमान, इज़्ज़त तक बेच देते हैं।
आज लौटा हूँ उनका दीदार करके,
जिनकी सूरत देखने भर को मेरी आँखें तड़प
उठती थीं।

आज उसी सूरत को ग़ैर की तलब बुझाते
देखकर आया हूँ।
गलती उनकी भी नहीं थी,
गरीबी कुछ भी करवा सकती है।
मुझे तो अब भी तरस आता है अपनी उस
नासमझी पर
भूल गया था कि गरीबों को तो मोहब्बत का
हक भी नहीं होता।
उस वक्त भी इन हवाओं ने
मुझसे कुछ कहने की कोशिश की थी
पर मोहब्बत के परदे तले मैं कुछ देख नहीं पाया।
आज भी गुज़रता हूँ उन बंजर गलियों से
जिनमें कभी इश्क़ के फूल खिला करते थे।

मैं आज भी वही पुराना आशिक हूँ,
फर्क सिर्फ इतना है कि
अब हवाएँ थम चुकी हैं,
वक्त गुज़र चुका है।
फर्क सिर्फ इतना है कि
आज खुले बाज़ारों में
आशिकी नीलाम हो रही है।
और अचरज तो तब होता है जब मैं खुद को,
उन्हीं बेलगाम आशिकों की क़तार में
आशिकी की बोली लगाता हुआ देखता हूँ।
ऐसा नहीं है कि मुझे शर्म नहीं आती,
पर ऐसी ही होती है एक गरीब आशिक की ज़िंदगी।
आज इन हवाओं की भाषा भी समझ आने लगी है।
पर वक्त साथ नहीं है,
काश मुझे मोहब्बत हुई ही न होती।

**– प्रणव राज**

# राम

अच्छे तुम स्वप्न देखो, राम तुम्हारे स्वप्न में हैं,
कठोरता पर हो मधुर, मधुरता में राम हैं
राम तो आचरण में हैं, सरसता में भी राम हैं।।

ब्रह्माण्ड में राम, राम ही ब्रह्माण्ड भी
आदर करो तुम सबका, अपमानित किसी को नहीं।

बहिष्कार  किया तो समझो, प्रभु तुमसे रूठ गए
प्रभु ही रूठ गए, अर्थात् क्रूरता तुममें खूब है।

राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, धैर्य का अहसास भी
त्रेता युग में जन्में थे, याद है आज भी।

राम सिर्फ हिंदुओं के पूज्य नहीं
मुहम्मद नहीं सिर्फ मुसलमानों के
मसीहा, गुरु नानक जी भी,
मनुष्यों के लिए मिसाल हैं।।

**– अमल**
**क्रमांक–17 / 10292**

# English Tapestry

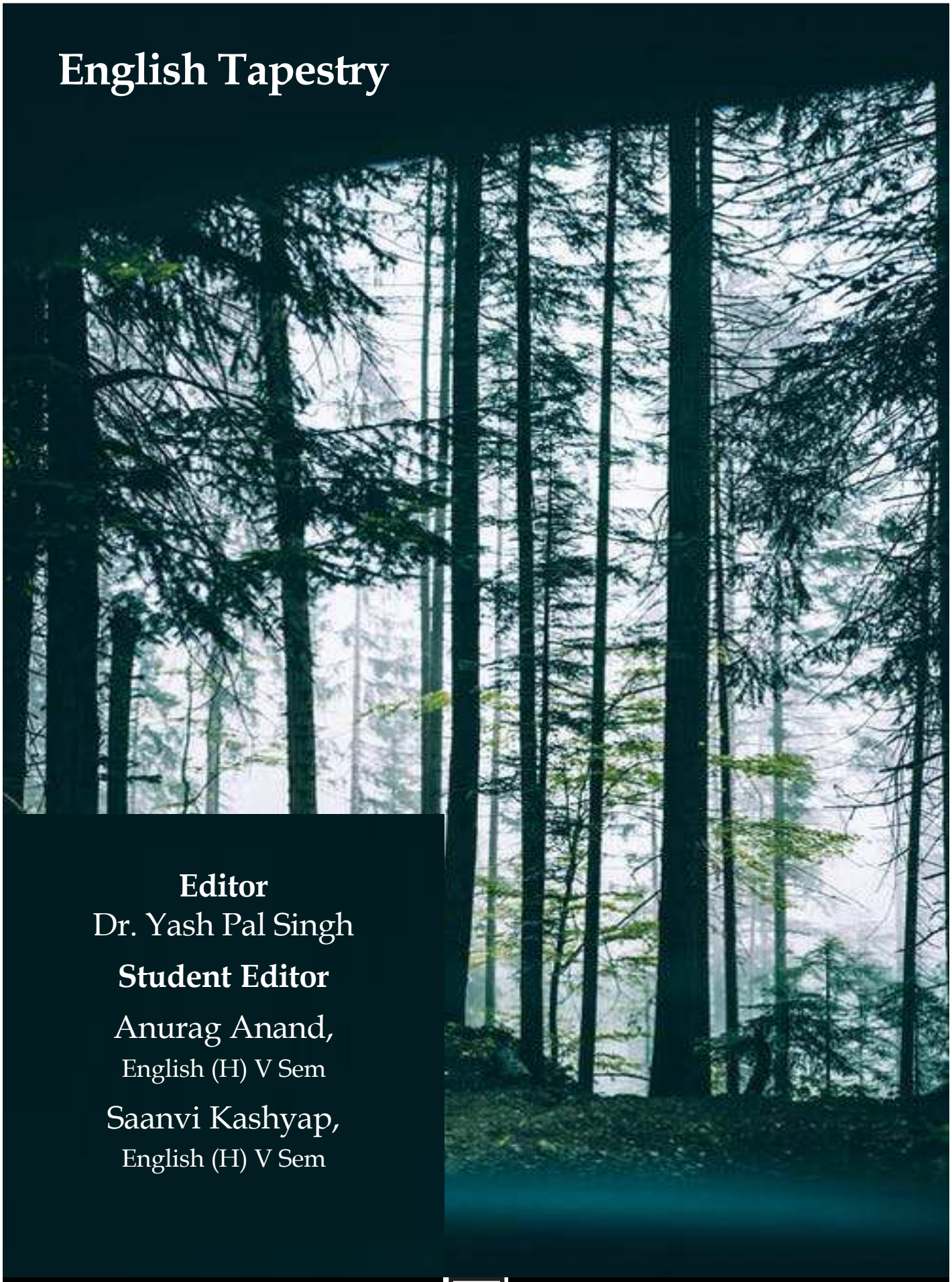

**Editor**

Dr. Yash Pal Singh

**Student Editor**

Anurag Anand,
English (H) V Sem

Saanvi Kashyap,
English (H) V Sem

# Contents


**Editorial : 37**

1. **The Flower Plant : 38**
2. **The Tale of Massacre : 39**
3. **Month End and Bruises : 39**
4. **Poor Me in the Womb Oblivious of my Fate : 40**
5. **Am I a feminist? Of Course, I am! : 41**
6. **Determination : 42**
7. **Talking Mental health! : 43**
8. **Incredible India : 44**
9. **The Lord is Supreme! : 44**
10. **Heer(o) : 45**
11. **Burying the Living : 46**
12. **Globalization and India:Perspective on Environment : 49**

# Editorial……

Since time immemorial man has been progressing steadily by adopting new methods to overcome the challenges that came his way. It was the evolution of writing that had provided some organised structure to his scattered world. Many facets of human life were preserved and recast in a meaningful mould with a sense of past, present and future through scripts. With the passage of time, new challenges crop up and with the help of history and literature (oral or written) he loog back to find a way out for the future. Good writing requires creativity and imagination to explore untouched dimensions of human life, offering its readers chances to relive in the fictional world drawn on some kind of reality. Had writing not evolved, the present world may haven't survived with its diversity.

THE NEW STAR aims at providing a creative platform to students to write their own ideas and experiences in various literary or non-literary forms to keep the tradition of knowledge building on. All efforts have been made while accepting the write-ups of students to maintain the tradition of the magazine. The published articles, poems, stories and anecdotes have explored various dimensions of human life from varying perspectives.

I'm delighted to place before you this edition of The New Star, and do hope that the magazine fulfils expectations of our readers.

I extend my sincere thanks to our acting Principal Dr. Vinod Kumar Paliwal, an amazing human being, for his support and patronage.

Happy reading!

**-Dr. Yash Pal Singh**
Editor English section

## The Flower Plant

I was a wild little thing in here. Growing inside the fences was a life of its own- The first memories would always be of the yellow-mellow, the breaking summer sun-rays touching me in parts, filling all of my body slowing in warmth I steal from it itself. The morning prayers lift you off a little more than when you remember god through the rest of the day-I could never understand why. God had such watchful beams in the sun that we realised very little-I've not seen one spill out lies at wake, from His arms, and I've never seen harsh eyes breaking open at dawn. Such is the beauty of the morning sunshine that lovers name each other off them. No wonder the first 'Namaz' is offered to the sun for the break of the dark, then the name of Allah-for His warmth from the skies above.

No wonder I've been a hopeless romantic in days-smiling back at the sun-rays. I've had

numerous lovers. They all with honey-filled mouths, revolving around me in wild haste. They've called me beautiful-over and over and again and yet again, finally till I start to feel beautiful-only in their eyes. How reckless these involvements were for a bud only blooming-for they left with only a little of my essence to build for the honey they'd soak their tongues in-fill their hives with. The sun nevertheless had merciful blessings on me- I was never out of myself. Pity on those yellow petals living off lives of mere vases inside only artsy vases.

I was taken extra care of-kept growing in the shade for long, and I've had human polish my feet and such was my pride- I was appreciated. How reckless were these involvements for a bud only blooming- I was budding in with stems swollen in pride, high and stiff, all near me, looking down at me. I grew up to a mere pale little white wild flower in a garden of lusty hued lilies. I'd have never known until the scissors scorched under my sun- chopping off from the necks, all the other flowers, for they meant to be inside vases, adorned and not breathing- be gifts men give to men like chaste less commodities.

I've seen the garden in all of its riches and there was a wild exciting scent that bewildered me for each time after the flowering season started. It reminded me from a life I rarely recollect. I kept looking for the flower to admire for ones, imagining how pink those petals must be. How beautiful could she be?

Recollecting, reviving, learning of how reckless these ideas were for a bud only blooming, for

when the flowers had all gone, the smell yet stayed-beautiful as ever, filling up my voids in all. It was mine. His blessings have never once lived me short.

**-by Anupriya Goswami**

## Tales of Massacre
## Of the Victories in Battlefields that You Count on Dead Carcasses

Flesh moving away from each other-this is the kind of hurting to follow,

The void in me only keeps growing more hollow.

Dipped a finger or so and you'd never know how deep it goes to run,

You'd never know how I saw this world burn.

Tales of wildfire, of wild nights, of animal hunt,

Of all things that scream back, and you can't.

I coughed out blood, I took bullets down my tongue,

I let my eyes lie to me, kept my heart out of the cage.

I wrote down holy songs on burnt notebooks,

I cut pieces of pink paper in hearts and tried filling up the holes.

They still sink; they tell me how not enough I could be,

Not enough to fight in the flee.

Of this body of soft flesh left under butcher knives,

And I wonder about this, endlessly, by the bed, on sleepless nights,

Thinking if I was ever enough.

The blood down these veins throb back each time, fight back each time.

There's bones of warriors down my ribs,

Rising by the sun, the rays rarely reach down the dark holes and the bones

Yet I'm made of the warrior blood, the skull and the bones.

I shut my eyes only to see more of it,

I look at my blood, red and dark-this for sure was never meant to scare me.

I've that flowing down in me,

Up from the stars I've blessings on strength before love.

I've been taught to slaughter; keep the raise in the gaze really high,

I'll never die of less blood, but I kill me with half a heart for life.

Stomping on the grass I cascade to battlefields each dawn,

Wounded, torn, torments from the air that was never mine I'd take steps back,

Wondering if it was victory enough?

If I could go back now and wash my wounded arms, pull out the bullets and wait for a heal.

All the wrong hands I've had to touch; The cold hearts, the cold bloods-The carcasses I caressed,

All in its name that you call a life.

Peeping smiles behind many masks and armours,

-" Soft flesh on war zones are victims of massacres"

I've forgotten my tender curves, soft edges and sweet moans,

The battlefield had taught me only loud roars and groans.

White flowers down my braids fall off on grounds they stomp on,

My poetry stuffed in lewd mouths is sin to me,

Yet I wear back my armour before the sun rays hit.

I wonder for once, if there's victory in defeat?

**-Anupriya Goswami**

## MONTH END AND BRUISES

On the way back from college
Standing/ leaning against the metro glass,
I watched this man
Sitting two spaces away from me
With a jute bag on his lap
And head tilted back,
I could gauge that he was taking a nap.

He wore a checked shirt, and chappals.
The jute bag had a hole on the side,
Which he enshrouded with his ragged hand.
The slippers were so frail that,
His feet would graze the hard ground, after.
Those buttons on the shirt,
Must have felt like bullets, eh?
Piercing, wounding, and hurting.

His body reeked,
Of old age, and fatigue,
Also, early mornings and late nights.
I, Wondered what mall his son daughter stopped at,
Or sheesha bar his son went to every evening.

His skin-
Looked like a coal mine,
With dark patches and sizzling outlines.
The creases on his forehead
Were the promises he made to his wife-
Promise that he'd buy his son a bike,
Promise that he'd earn enough for his daughter's dowry,
Promise that he'd bring home a bunch of sweets.
When I focused better,
I saw him holding a packet of murmure
Eating out of it.
How many costs was that man cutting to buy mithai?

He stepped out
When his station arrived,
Coincidentally, the same as mine.
Limped to the exit and,
I followed his steps
Along the pathway,
Up the elevator,
And through the crowds.
I saw him taking a seat,
On a sawaari rickshaw.
'sigh'
I wish he'd rather buy the bike for himself.

Ishika Chaturvedi
19/23056
English hons.

## POOR ME IN THE WOMBOBLIVIOUS OF MY FATE

Mom I was sent by an angel to your womb
But you misunderstood me as catastrophic as a nuclear bomb!
I wanted to be privileged as your daughter,
No wonder I became a reason for your slaughter!
When a boy is born its an affair of proud,
But the birth of a girl is the reason behind the crying crowd!
always fantasized to rest in your lap,
But for you I am nothing more than a crap!
I wept, I struggled and I cried in pain,
I even faced this blood filled rain!
I wanted the maternity ward resounding with my voice,
Because I wanted to be the one for whom you would rejoice!
I wanted to be your daughter, your love, your dear,
I am sorry because of me your pretty eyes dropped tear!
With every comforting warm breath you drew,
Up in the sky, the butterflies of my imagination flew!
I could feel your affection, your love, your care,
But now everything is isolated and bare!
Until now I saw this world through your eyes,
I believed that there was a truth hidden in your lies!
I was so zealous to come out and step upon this earth,
I didn't want any occasion more ostentatious than my birth!
I didn't want any expensive accessory when I had a mother so fine,
I just demanded your soft fingers on my cheeks and your lips on mine!
I was ill-fated that your anger was the only feeling; you and dad wanted me to sensate,

Every tear of yours cursed the poor me in the womb oblivious of my fate!

I thought my ambitious were right and my feelings were strong,

Though I realized it late but I realized I was wrong!

Maybe I did something fallacious that is why to you I was born,

My dreams were shattered like a sheet of paper is torn!

I was too juvenile to face your assault,

God made me a girl.. Is this my fault?

Girls are divine angels sent from heaven for the purpose to adorn,

But it is a pity they are killed even when they are unborn!

A girl revamps this earth with her twinkling eyes and honey golden curls,

This world is too immature to handle the delicacy of tender girls!

I wish that no more girls are born so that people won"t abuse humanity,

So that people won't curse girl's purity and god's sanity!

**- Esha Rastogi**
B.A. English hons.
(2nd year; sec:B)

## Am I a feminist? Of Course, I am!

*" Feminism is the radical notion that women are people" - Marie Shear.*

"You are not one of those feminist type, right?" Every girl at some point or other has been asked this question, and in general by a male member of the society. And, mind you, the question is always asked in such an awkward situation, that one feels it's better to laugh and change the topic than go into a deep discussion where whatever you say will just be misinterpreted. But what I feel is that why shouldn't one be a feminist and what is this 'feminist type' anyw¡y? It isn't as if we are a different species, genetically mutated females, who are more irrational, vicious, wild, cut-throat and what not? We are just normal human beings who are fighting for the privileges, that half of mankind had from the beginning and yet men think that fighting for reservations and basic rights is unethical. How hypocritical is it of certain men, that they make us feel bad about the very thing they should be ashamed of? For centuries men had all the rights and powers, and it has not even truly been a century since women's rights have been granted (and yet not in all spheres) that men think that somehow, we are planning a secret coup. If we were irrational, our demands would have not been for equal rights, but for men to have to live, for at least a decade without privileges, for they must also know what it feels to be the 'other'.

Women were subjugated, they had no voice of their own, no right over their own body and no means to express their feelings. They are absent from our literary history and yet most people (men or women) are oblivious to it because this has been normalized to such an extent that unless one points to it, we are not even aware of this glaringly obvious fact. I, having been a literary student and a woman myself, was unaware about this absence of female author for majority of the literary history in my syllabi until I chanced upon Woolf's 'A room of one's own'. The major concern then, is a need to de-normalize this concept where everything male is a fact. We, as a female have made a lot of progress, but those changes were not handed down to us just because one day men woke up and grew a conscience, it was a result of a lot of sacrifice by our ancestors, who perceived the need to uplift us. When we feel bad about being a feminist, we are not only undoing all the previous efforts but also making this larger than life contribution by feminists feel like a joke. Being not a feminist is not an option because as Caitlin Moran writes in 'How to Be a Woman', "What is feminism? Simply the belief that women should be as free as men, however nuts, dim, deluded, badly dressed, fat, receding, lazy and smug they might be. Are you a feminist? Of course, you are."

Men feel that giving women mere reservation in politics, academics and jobs is a big deal and most possibly unfair to them because in their defense, women of their generation had not faced those oppression and thus have no need of it. But just by implementing certain laws, how

do men think that women and men are on the same pedestal, when for centuries they had kept women in depths of darkness, while they kept uplifting their position. Is it fair to expect that women are equally armed to fight alongside men, even though they have not yet been uplifted and brought on the same pedestal? And if you don't want us to be a feminist, just accept that you have been cruel in your dealings, give us equal rights, bring us in the same position and there won't be a need for us to be one, for feminism is nothing more than a desire to have the basic human rights.

Vagesh Nandini
English(H) Eng(H) VI Sem

## Determination

Today we're looking at Shabana who is bragging and simultaneously teaching her friends how to eat with "chopsticks" in the amphitheater of her college after dance practice. She's ballooned with joy and pride.

Why...? she's just eating with a piece of wooden stick, what's so great about it and why in the heavens name she's proud of it. I mean anyone can eat with chopsticks. It's not a big of a deal!

She was sitting in the other room when she was hardly eight or nine and heard Anil Uncle( her Abba's good friend ) "Bhaisahab...these Chinese people, I tell you are such great people they are so determined and disciplined that they can pick up a grain of rice with chopsticks".

Just then she thought about how amazing Chinese people were. How great they're that they can pick a grain of rice with chopsticks. It must be very difficult to do that. She wanted to do that too. I mean how cool it would be. But, she comes from a school where they teach her about the Shlokas and focus on how her Sanskrit is. They don't teach their students about some foreign culture. No one in her family; her relatives, her friends know it either.

So, she's on her own but the biggest hurdle was "how to get hold of the chopsticks themselves". No wonder in the streets of Purani Dilli someone was selling chopsticks on the roadside "Bees ki jodi lelo , Bees ki jodi". She could've asked her mom for them and she would have gone to China itself to get what her darling daughter wants. But she didn't. I guess she wanted to surprise her family. So the alternative she found was toothpicks. Yes, and she started practicing on it. Without knowing that there is a method (Little did she know that there is a proper method) And one day on her sister's phone she googled it. "How to eat with chopsticks" and found out about the method on WikiHow through some explanatory pictures. 2G internet was not fast enough to buffer a YouTube video when she had this passion in her.

By the way now that same girl is learning guitar through videos with fast 5G wifi.

So, just by pictures she knew the right method and one day her sister's friend gave her sister what the little girl wanted for months as a joke that you look Chinese you should have these chopsticks with you. (Which was very racist of her) And just by those pictures, thanks to her sharp memory, she had in her mind she finally practiced on actual chopsticks and did what "Chinese people do".

One day when she was eating out of nowhere with chopsticks her brother saw and said "Waah…you ate it all with Chopsticks" she can never forget how content she was that day!

She later on taught her brother, sister, sister in law, best friend and many people. Because it's not about the "Chinese people" what she focused when she was little, it's about the " determination" she realised when she grew up.

Anam Kausar
B.A(H) English
IIIrd Year

# Talking Mental Health!

Unlike all other health subjects, Mental health is somewhat unique and interesting, solely owing to the way it is addressed and recognized in our society. The subject cuts across caste, race, gender, religion and sexual orientations…with everyone being susceptible to its consequences if deprived of attention.

Mental health basically constitutes our emotional, psychological, and social well- being. But unlike it's short summation, the subject reaches far wider and deeper depths in terms of its knowledge and Interpretation.

Society regards Mental health as a Taboo subject, people do not talk about it as unhesitatingly as they do about other health-related issues. All this… because it is still not considered as a Physical health problem. And because of this very distinction, most people with mental health issues do not want to come out and talk to their family and peers… thus keeping their problems curtailed and living like an invisible section among us. For even if they plan to share their problems, many are bound to face Societal stigmatization, along with being labeled as an attention seeker, or even Doubted – because they don't look sick!'

**Note-**

(You just can't see it like any other health issue….only people who have it, are the ones to feel it),

The UN estimates that one in four people globally will experience a mental health condition in their lifetime. While, around 450 million people currently suffer from such conditions, placing mental health disorders among the leading causes of ill-health and disability worldwide.

Yes u read that right…

"Compromising Mental health will inevitably result in the formation of mental illness disorders, which may potently include depression, bipolar disorder, schizophrenia and other psychoses, dementia, and developmental disorders including autism".

An overview of the prevalence of the most common Mental illness disorders reveal that an estimated:

264–300 million individuals worldwide live with depression;

284–300 million live with anxiety-related disorders;

46–60 million live with bipolar affective disorder;

Given all these implications and numbers..the irony is such that despite the weightage it holds for the overall health of a person..the subject is seldom talked about.

Another aspect is it's Dealing… or how to react when someone reaches out to you with their problem.

Remember, even with the best of your intentions, you may offend them by your Assumptions, or by insisting that you know how they exactly feel…which in turn may make them look like their Problem is too small in your eyes. Thus, a very cautious approach is to be followed, for you can either make them feel better or make them even worse.

While the best support which you can give them is just your Presence and Attention,

Yes..nothing more nothing less,

Do not sympathize, empathize or cajole them every other time, they want to be heard first. So let them pour out their feelings, let them vent out their anger, let them cry, let them talk incessantly…just don't interrupt them! , all you have to do is HEAR them. This is the easiest way with which you can help make them feel better. For it reflects that to you their feelings are valid.

However, in case of frequent panic attacks , prolonged period of Anxiety, stress, Depression

or trauma related issues…immediate medical assistance or therapy becomes a must.

Why?

Because at this juncture the risk of developing Mental illness becomes all time high, which may further include dreaded complications like violent conflicts, suicidal thoughts, inflicting self-harm etc .

Apart from these, medication and exercising also works very well. Exercise releases chemicals like endorphins and serotonin that improve your mood, while meditation can help you to better handle negative feelings and emotions.

But, before all these recommendations and counsellings, we first have to encourage people to come out with their problems. Any type of labelling, doubting, judging etc. should be highly regretted and criticized.

Conclusion:

In order to change the culture of this topic, it needs to be effectively addressed on various levels. As with the prevalent social stigma on one side and lack of professional interventions on the other, it is altogether an uphill battle.

**-Vivek Yadav**
Eng H VI Sem

## Incredible India

I am trapped at the ocean
There is a dilemma all around
Who is the supreme God?
The skirmish in and out.
Does it matter in the world?
Here, poverty is at its peak
Why are we so polarised?
Is it due to those preacher's provocative speech?
Theist or Atheist, Libral or Illiberal
Arguments go on never ending
It makes me feel lost
No, they're not scholars, but only pretend
Why do caste and creed matter a lot?
Things like extremism, prejudice and hatred all around
My heart shatters, O Lord.
These men in white divide us
Does monotheism make us fanatical
But remember, India is an example of integrity
And our nation has always been incredible.

**-Amal**
Bcom (P) IV Sem

## The Lord is Supreme!

The Lord is divine,
Before him, no evil power can align.
He is the ultimate provider,
Who fills the emptiness in us and makes our lives brighter.
Atheists question him of his being as they believe he can't be seen,
Who will make them understand,that he is present in every being.
Heaven and Hell are nothing but state of the mind,
How can they be discovered,lies the question in our brain leaving every thought behind.
What is within us can be discovered easily,
Meditation will lead to our introspection speedily.
The exercise is not going to be that simple,
Evil is going to overpower us and will continually try to destroy our inner temple.
The Divine light is what needs our attention,
For that we have maintained the purest connection.
In the end, it will all be worthwhile,

We will get our God and the reason behind the everlasting smile!

**-Vaishnavi Luthra**
Eng(H)

# Heer(o)

Dear Ved,

I hope that by now, Don has realized Mona Darling was the gold he was looking for. If not, there it is for you.

I understood your struggle to find a story that was yours to own because I, like you, fought through the urges of being myself. It is frightening, I know, the idea of coming to terms with the reality you don't want to accept but also so want to live. It's good you finally grew out of the high of listening to stories and started living yours. I would have wished more people found the courage to do it, but then, not everyone has a Tara to be patient in the process, to be the catalyst for growth. She was there in Corsica and then every morning when you convinced your motor toothbrush and bathroom mirror that you were Ved and not Don.

She came to you with change as her hair tie. Ved, you have no idea what your absence did to her and you don't get to just sit back and not acknowledge her efforts and patience despite. Because she liked letting her hair flow with the wind and she lived in hair ties for the longest time. But what would you know about having a storm in your head and still being composed. Well, since you weren't really the hero.

It's good you discovered your story and how it should end, but what's not okay is how you treated Tara. Your situations do not justify your misbehaviour so don't even try explaining why you never asked how she felt or apologize when she outrightly told you how she did.

Ved, you better have your shit together by now. I, like so many others, could use a Tara right now. Unlike you, it's not because I don't want to own up for my misbehaviour, or because I am looking to use her as a means for my happy ending. But just because, right now, I think I deserve an epitome of love and patience more than you do.

And let's get things straight, I'm the mirror image you were looking at. Except my storyteller was an abusive old man who was the first one to break my heart, and then several times more.

So Ved, we saw you and heard you. We appreciate you fighting against all odds to discover yourself and to inspire us. But they got it all wrong and made it about you. None of the recovery would have happened without Tara. She's the heer(o).

All my vengeance and love,

N.

**-Nandini Kathuria**
Eng(H) IV Sem

## Burying The Living

The day dragged on till the grey clouds that had littered the morning sky slowly started to look red. As the young and naive rejoiced in this abundance of nippy winds and occasional outbursts of rain, to Asif, it made no difference. Seated in a corner of his stark office floor, the lack of sunlight throughout the day had made his surroundings, consisting of a few tables with worn out chairs and ancient documents, look only slightly less gray than his sideburns. An odour of old papers mixed with perspiration and a heightened stench of damp walls prevailed across the floor. The red clouds were an indication to set his folders aside for the day, pick his three-layered steel lunchbox and say goodbye to his partly corporate and partly bureaucratic salt mine.

Asif's daily commute back to his apartment in a forgotten corner of Saket was his time to reflect on his day. The thoughts today were particularly varied. They ranged from how he had managed to inveigle his way out of the bawdy conversations that were the norm amongst the administration department employees during lunch to how he had almost slipped on the slimy washroom floor but thankfully didn't, saving his only white shirt.

His disproportionate figure which consisted of a heavy torso supported by a pair of scrawny legs with two flabby arms made the area he occupied on the bus one of constant commotion as he would have to make way for someone or the other occupy a space that could accommodate him, every other minute. Such disturbances disrupted the flow of his reflections. It was irritating but it wasn't much for him to bother with.

Asif was a figure of great intrigue to his colleagues. To call him private would be an understatement, yet to say that he was reserved would not be entirely correct. He heartily took part in conversations and lunchtime gossip but without ever contributing much, rather anything. He would stand there and laugh on cue or add a sentence here and there to not be entirely invisible, while taking a lot in. The sheer pile of folders on his desk, or piles rather, were directly indicative of how long he had worked there. This, coupled with his frugal lifestyle even after earning what seemed like a decent salary to everyone, was always a key part of the speculations that took place in the tittle-tattle in his absence.

His life in general was too indifferent to what went on around him for him to bother with putting everything in place. It always looked like he occupied physical space in the world without ever contributing anything to justify that occupation. And to him, it had been that way since he could remember. He was fully aware of the dangerous implications his name, coupled with his uncanny privacy had, yet to think that stereotyped political issues would affect his behaviour or his lifestyle is folly. Constantly reprimanded by his superiors for his laziness, he was accustomed to infinitely delaying his tasks and even when completing them, not putting much in the way of effort into them.

Turning his latchkey twice, Asif made his way into his redundantly large apartment. A damp sensation that had been troubling him all day was exaggerated by his cluttered drawing room. An old sofa which was almost entirely torn at the back was held together by the folders and spiral noteboog that sat on it. A small table meant for a lamp was littered with plastic wrappers, a couple of old jars with dried pickles on its walls and a now defunct alarm clock. On three of the four chairs of his dining table were old clothes that he was too lazy to throw away. Hanging above the sofa was an old picture of him with his parents on a beach when he was barely five. This was the only article in that

apartment that made it look like it was actually occupied by a resident and not used as a storeroom by some broker. In short, the bestrewed surfaces were no different from what they had been like that morning, a month or even an year ago.

***

The monotony of his life was given a temporary break that evening. Mrs. Khan, the occupant of the apartment across the corridor had passed away earlier that day. The news was brought to him by the watchman who had come to deliver a water canister.

In this building of forgotten souls, Mrs. Khan, or 'Khan Chachi' as he called her, was the only person Asif actually knew and had spent some time with. While their interactions were not regular, they could be called so once one takes into consideration the regularity of his interactions with his peers. Once or twice a week, when her presence at the balcony in the evening coincided with Asif's return, the two would wave at each other. Muskaan, the cat who depended entirely on Mrs. Khan's leftovers was given a morsel or two by Ahmad from time to time and especially so on days when he was informed about the lack of them at her place. She rarely went out but whenever she did, what she had done would be the first thing she discussed with him as soon as she would come across him, even if it was right in the middle of the corridor itself. How she found the most exquisite salwar in a cramped shop in Lado Sarai, how she hated boarding the metro and preferred taking abus to Gurgaon because it reminded her of her school days, how she found the time before every Diwpli to go to Central Market or how her damned doctor never hesitated before giving antibiotics for the slightest of illnesses were some of the recent things they had talked about.

Most of the time, she was interested in prodding him to get married yet the passage of years had ensured that with time, both shared the same shade of hair and marital status.

An occasional jar of pickles from her household was the only source of some flavour for his plain dal and rotis.

All that Asif knew about her past life is that she was from Lahore and had married a well off Punjabi man from Lajpat Nagar, much to the disdain of his family. When their marriage was broken up by his untimely death some half a lifetime ago, his family abandoned her, leaving the childless widow entirely to her own devices. Taking her family name up again, she ended up spending almost 40 years in that building feeding cats, chatting with newly arrived women her age when she was younger, scolding students who briefly occupied certain apartments for their insolence and making enough pickles to put Nilon's out of business, before a fatal stroke took her life earlier that day while her presence was never of importance to Asif, the thought of her absence was a little unsettling. She was to be buried at a small site in Nizamuddin. To not bid his final farewell to this woman did not feel right to him.

At around eleven that night, Asif found himself standing in the middle of a densely covered cemetery in Nizamuddin. It was windy and like the rest of the day, rain seemed like it was on the horizon with a drizzle every thirty minutes or so. A younger brother of Mrs. Khan had been tracked down by the hospital and was the only person in attendance other than Asif. He might've biologically been young but he looked far older than that slightly hunchbacked old woman that Asif was accustomed to seeing. This brother seemed barely affected by his elder sister's death and the absence of other relatives meant he need not have hidden this feeling. Hurrying the five men relegated to the task of burying her, it seemed he was far more concerned with not getting wet than he was with the ritual at hand. About half an hour after his arrival, the wooden casket carrying the old woman made its way to the pit in front of Asif and her younger brother. Neither of them in the meantime had struck up a conversation, they only waited to fulfil the obligation. The corpse of the one person who truly seemed to bother with what went on in Asif's life was lifted out of the casket and slowly passed on to the two men standing above the pit. The shrouded figure which was like a giant cocoon looked

uncannily firm and linear to him, the current shape not corresponding to the bent old woman.

Slowly, the old woman was lowered into her grave by which time the drizzle had been aroused and had started to rush the workers. As the brother continued to hurry them, Asif stood quietly, carefully watching the whole process.

It was as if, in that moment, for the first time in ages, he felt thankful. A brief sensation of elation enlarged itself to create this thankfulness. He was thankful to be alive, of the fact that at least his existence was above the earth, that he was not doomed yet to spend eternity amidst flesh eating insects and the earth covering his decaying body. The knowledge that he would be able to move his arms around without the ground obstructing such movement or that he would be able to breathe in air and not the smell of dried earth suddenly felt like an epiphany to this lost soul. In attending this quiet affair of bidding goodbye to a certain kindred spirit, he felt like he was able to understand that he had a laggard life, not a stationary one and that tiny difference was all that was needed to kindle that spiritual gratitude.

***

The next day, the bus felt a lot more crowded than usual to Asif. While he seemed to come across one or two familiar faces everyday on his ride, that wasn't the case that day.

Amidst that excited crowd the atmosphere felt a lot more sultry than usual. It caused a feeling of duress and subsequent impatience to get off, unlike the other days when he enjoyed the breeze while sitting next to the window.

Asif wasn't fazed by the fact that he was almost an hour late to work that day. In fact, his steps seemed even more languorous than usual. Calmly signing the register, he made his way to his office, still thinking about the previous night. The buoyancy of the realization had kept him in good spirits even that morning and the stifling bus ride hadn't ruined it.

It wasn't to remain that way for too long. An air of exuberance was prevalent among the crowd of murmuring individuals who had congregated in front of the notice board. On it, a plain black and white notice stated that the Navratri holidays had been extended by a week owing to the company's fiftieth anniversary that was coming up in a month. The people rejoiced at the idea of getting to spend an extra week with their loved ones, maybe even undertake a long delayed vacation. But for an old horse like Asif, this was not an occasion to rejoice as he knew what it meant.

Expectedly, the peon had dumped about twenty but what seemed to him like a thousand folders on his desk. The extended holiday, which meant lesser days of work also meant that everyone had to clear their plates of all the pending work, a rule that was the same for everyone regardless of the duration of their existence at that place. Asif's indolence made his pile the tallest in view. Surrounded by these feet high heaps of papers and folders, he slowly started to segregate all that he had to take care of over the next three days. The folders felt thicker and the numbers on the pages, more complex. Sitting at the spot that had accommodated him for a quarter of a century, going through the mountain of pending work, he started to suffocate. The rain outside seemed to exaggerate the miasma of all these documents. Suddenly, the condition of the withered, old lady, six feet under the ground, being feasted on by the filth of the earth, melting into what we are all made of didn't feel too different to Asif.

**- Shahim Sheikh**
Eng(H) VI Sem.

# Globalization and India : Perspective on Environment

"Dark times lie ahead of us and there will be a time when we must choose between what is easy and what is right".

**-Albus Dumbledore, Harry Potter Series (J K Rowling)**

In the year 2019, July 29 was marked as Earth Overshoot Day (EOD) according to Global Footprint Network. This simply means humanity is using up all resources created in a year, in less than seven months. Each successive year the EOD arrives early indicating the demand of resources and limited supply.

Globalization means integration of countries or markets together in search of common interest related to trade for economical, societal and political benefit.

In one way this has created opportunities for countries that need resources from other countries for fulfillment of its needs and in other ways it also leads to exploitation of resources of poor or developing countries. Globalization is considered good for economies in promoting competition, technology advancement, and sharing economic benefits. This has also led to environmental degradation, pollution, carbon emission, promoting mining, extraction of resources, deforestation, burden on agriculture produce and farmers to fulfill the demand for better quality and higher production.

The demand for resources like clean drinking water, forest, land, energy, and food grains is increasing each year. The non-availability of these resources due to climate change has forced millions of people in the last decade to migrate from their native land. In many areas these people are considered a threat to the resources controlled by other countries. The United Nations have realized the necessity of taking steps at global level and identified seventeen sustainable development goals (SDG's) in 2015 to reduce poverty, hunger and spur economic growth, while tackling climate change and conserving forests and oceans. This is part of the United Nations agenda for 2030 and requires participation of all developed and developing countries.

According to Thomas Malthus, an economist and thinker in the 18th century, the population is always increasing at a faster rate compared to the food resources and this gap will keep on increasing in future ultimately creating a scenario where a major population will be without resources forcing countries to instability. This idea of Malthus theory

was supported and continued by Paul Ehrlich in his

book "The Population Bomb" (1968) predicting disaster for humans with scarcity of resources promoting famines, diseases, and war among countries. This theory in present times is also supported by many in the world arguing increasing population to be the root cause of problems in society and in our environment. One school of thought also promotes the idea that environmental degradation is happening because of per capita higher demand or consumption of resources. The population of the USA is lower than China and India but per capita demand is way higher due to economic superiority. The per capita energy consumption of the USA is nineteen times and ecological footprint is fourteen times more than India. It means the existing population in the USA, which is lower than India, is creating far more

pressure upon nature and its resources.

The Environment Kuznets Curve (EKZ) postulates the relationship between indicators of environmental degradation and per capita income of the country. Initially environmental degradation increases with development but after certain level of development, environmental degradation starts decreasing. Many developed countries have reduced environmental degradation as they have economic surplus for environment conservation. According to a report by World Bank -2014, ecosystem degradation in India costs 80 billion dollar annually and it will keep rising until it is met with better policies for clean

technology and eco-friendly steps. In coming years policies are

needed to address the burning issues related to the environment and lives of 1.3 billion people living in India. The better lifestyle and unplanned development in many cities has led to problems of waste management, pollution, water scarcity and lack of green space.

The carbon emission leading to global warming is a major concern for India. India is presently the third highest emitter of greenhouse gases in the world, which means it has an important role to play in climate change policies. With the USA government delaying accepting to be part of the Paris Agreement after a change in its environmental policies the onus is still upon India and other developing countries to lead the crusade against global warming and emerge as a leader to take initiative. With India still far behind China in terms of its GDP, it will find it difficult to balance carbon emission together with push for industrialization and "Make in India" initiatives.

India has set a target of 175 GW of energy generation by year 2022 earlier which has been revised to 450 GW mainly fueled by solar energy and role of National Solar Mission. India is aiming for an ambitious target of 57% total electricity generated by renewable energy by 2027 as opposed to 40% committed in the Paris Agreement by 2030. Together with Solar energy, wind energy, biomass energy and small hydropower projects India has seen big strides in lowering its dependency upon coal for energy generation. Commendable efforts are being taken in the energy sector that is going to cut carbon emissions and also lower pollution in many cities of India.The WHO in its report in 2018 has named ten most polluted cities in the world in terms of particulate matter and nine of these cities were from India. Air pollution is one of the areas of concern where lack of policies and ideas from government has caused problems to its citizens. According to a WHO report seven million people die each year globally due to air pollution. The introduction of electric vehicles and stricter implementation of environmental norms may help major cities in India to escape from dubious distinction in future. Together with pollution the availability of drinking water is another grave concern for people living in these cities.

India is facing one of its major water crises with many cities facing the acute shortage in the summer of 2019. The Composite Water Management Index (CWMI) by NitiAyog in 2018 showed 21 major cities including Delhi are racing towards zero ground water availability in near future.

The union government has formed the Jal Shakti Ministry, which aims for laying pipelines to every household by 2024. The major concern still persists about availability of clean water for these pipelines in future. The inefficient use of water resources and lack of water management plan will lead to huge water crisis in coming years. In absence of good monsoons the situation could worsen affecting the agriculture sector and our economy.One of the major concerns in the policies has been ignorance towards wildlife and fragile ecology in many parts of India. In order to boost the economy various sectors like tourism, mining and infrastructure are being promoted. These sectors certainly have potential to contribute to the economy but have more disadvantages towards the forest, wildlife and environment.

The race to a better economy at this time of globalization is rightly placed but rapid development and faster implementation of policies might also ignore the environment perspective. The removal of checks and balances for upcoming projects can lead to irreparable damage in future. Country like India is deeply rooted to its nature in beliefs, culture and practices. Policies with more space and resource allocation to the environment must be promoted for its organic development. Sustainable development may be not the easy way to develop, as it demands equitable sharing of resources and environment is an important part in decision-making but it is the right way. Unlike the Western world, we consider our land, rivers, forests, and wild animals sacred and would not like to lose them on our way to become an economic powerhouse.

**-Dr. Aniket Kumar**
Department of Environmental Science

# Sanskrit Parishad

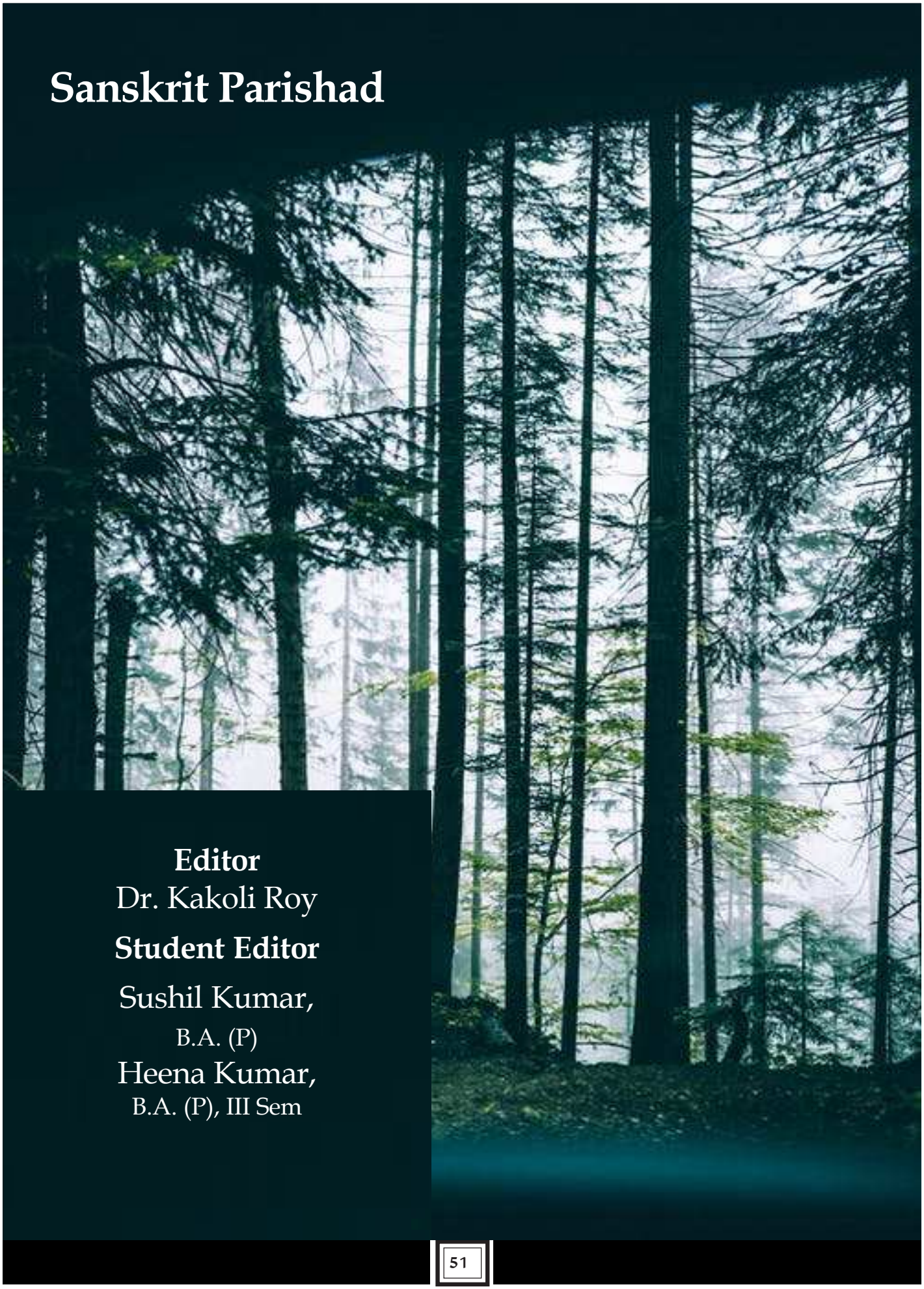

**Editor**

Dr. Kakoli Roy

**Student Editor**

Sushil Kumar,
B.A. (P)

Heena Kumar,
B.A. (P), III Sem

# संस्कृत-विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| विद्यार्थी जीवन | -सुशील कुमार | : 53 |
| विद्या | -श्वेता झा | : 53 |
| पाणिनिः | -प्रशान्त | : 53 |
| सर्वेभ्यः शिक्षकेभ्यः समर्पितम् | -श्रेया | : 54 |
| आदर्शः गुरुः | -सपना | : 54 |
| छात्राणां कर्तव्यम् ( ग्रीष्म ऋतुः ) | -सपना | : 54 |
| श्रीमद् भगवत् गीता | -योगिता | : 54 |
| सुभाषितानि | -शालिनी | : 55 |
| पर्यावरण | -अभिशेक मिश्र | : 55 |
| महामना मालवीय | -गौरव शर्मा | : 56 |
| शुक्रनासोपदेशः | -शिव राज | : 56 |
| सुभाशितानि | -सौरभ मावी | : 56 |
| प्रतिज्ञापत्रम् | -सोनू | : 57 |
| नारी मनोविज्ञान | -दीपक | : 57 |
| सत्यमेव जयते नानृतम् | -आलिया खान | : 57 |
| भारतवर्षः | -भारती | : 57 |
| उत्तमं हि धनं विद्या | -समिति चौरसिया | : 58 |
| संस्कृतभाषायाः महत्वम् | -जगदीप कालावत | : 58 |
| परोपकारः | -सुधांशु शेखर झा | : 59 |
| भारतस्य परिचयः | -आञ्जनेय अंशु | : 59 |
| आधुनिक शिक्षा पद्धतिः गुण-दोष-विमर्शः | -रमेश कुमार प्रजापति | : 59 |
| वर्तमान-शिक्षा पद्धतेः केचन दोषाः | -रमेश कुमार प्रजापति | : 60 |
| कालिदास | -सौरभ कुमार | : 60 |

# विद्यार्थी जीवन

एतत् कययते मनुष्यः यावज्जीवं विद्यार्थी अस्ति सत्यमं रवलु इदं वचनम्, यदि मनुष्यः विद्याम् अर्जितुम् तत्परः भवति तर्हि सः जीवने साफल्यं सुखं च प्राप्नोति। वस्तुतः प्रत्येक मनुष्यः पञ्चविंशतिवर्षः पर्यन्तं विद्यार्जनं करोति।

विद्यार्थी जीवनस्य प्रारंभः शिशु विद्यालयात् भवति, तत् विद्यालयात् तत् पश्चात् च महाविद्यालयात् शिक्षा प्राप्नोति, प्राचीन काले छात्राः गुरूकुलं गच्छन्ति स्म, तत्रैव ब्रहाचर्य पालन् विद्याप्राप्त कुर्वन्ति स्म। अधुना शिक्षानीति परिवर्तिता, अधुना कतिपयाः छात्राः प्राथमिकिं शिक्षा ग्रहित्वा उच्च शिक्षार्थ परेदश गमनं कुर्वन्ति।

विश्वविद्यालयेसु पठन छात्रावासेषु वसिन्त, अधुना विद्यार्थिनां जीवन स्तर उच्चतरः अभवत्, विद्यार्थी जीवन मानव जीवस्य मुख्य आधारः। विद्यार्थी जीवने यादृशी शिक्षां प्राप्यते यान् संस्कारान् लभते तेषाम उपयोगः समस्त जीवने भवति, अतः विद्यार्थिनः प्रथमं कर्तव्यं यत् विद्यापठने, कदापि आलस्यं न कुर्यूः, विद्यार्थी जीवनं सदा अनुशासन पूर्णः भवेत्, यदि छात्रः अनुशासितः भवति, तदा तस्में किमपि दुष्करं न भवतिं, छात्रेंण सदैव प्रातः सूर्योदयात् पूर्व उन्तिष्ठनीयम् प्रातः काले कृतं स्मरण चिरकालं तिष्ठति, छात्रस्य पठने रूचि स्वाभाविकी भवेत, यदि प्रसन्न मनसा पठति तहिं परीक्षायां श्रेष्ठान अड़कान् प्राप्नोप्ति,

विद्यार्थी जीवने पठनेन सह क्रीडनमपि आवश्यकं, शुद्ध वातावरेण क्रीडनेन शरीरं स्वस्थ्यं भवति तथा मनः अपि पठने एकाग्रं भवति। यदि विद्यार्थी दिनचर्यानुसारं स्वकार्यं समये करोति तर्हि सः जीवने साफल्यं प्राप्नोप्ति। विद्यार्थिनः देशस्य भावी नागरिकाः सन्ति। आदर्शः छात्रः देशस्य आदर्शः नागरिकः खलु।

**-सुशील कुमार**
बी.ए. (प्रोग्राम)
क्रमांक 18/81210 वर्ष-द्वितीय

# विद्या

1. विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये।
आद्या हास्याय वृक्षत्वे द्वितीयाद्रियते सदा।।

अर्थ :- शस्त्रविद्या और शास्त्रविद्या ये दो प्राप्त करने योग्य विद्या है । इनमें से पहली वृद्धावस्था में हास्यादपद बनाती है, और दूसरी सदा आदर दिलाती है।

2. सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्थमाहुरनु-तमम्।
अहार्थत्वादनर्ध्यत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा।।

अर्थः- सब द्रव्यों में विद्यारूपी द्रव्य सर्वोत्तम है, क्योंकि वह किसी से हरा नही जा सकता, उसका मूल्य नहीं हो सकता, और उसका कभी नाश नहीं होता।

3. नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुदृत्।
नास्ति विद्यासम वित्तं नास्ति विद्यासम सुखम्।।

अर्थः- विद्या जैसा बंधु नहीं, विद्या जैसा मित्र नहीं और विद्या जैसा अन्य कोई धन या सुख नहीं।

4) मातेव रक्षति पितेव हिते नियुइक्ते
कान्तेव चापि रमयत्यपलीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।

अर्थः- विद्या माता की तरह रक्षण करती है, पिता की तरह हित करती है, पत्नी की तरह थकान दूर करके मन को रिझाती है, शोभा प्राप्त कराती है, और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है। सचमुच, कल्पवृक्ष की तरह यह विद्या क्या क्या सिद्ध नहीं करती।

**-श्वेता झा**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
II[ed] ईयर

# पाणिनिः

पाणिनिः संस्कृतभाषायाः महान् वैरयाकरणः, तेन लिखितः अष्टाध्यायीनामक व्याकरणग्रन्थः विश्वप्रसिद्धः वर्तते।

संस्कृतभाषायाः प्राचीनः वैयाकरणः नामामिः स्तूयन्ते यथा-
इन्द्रवृच्द्रः काशकृत्स्त्राऽपिशलाः शाकटायनः।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा इत्यष्टौ शाब्दिका मताः।।
इत्यमष्टसु शाब्दिकेषु अष्टम एवं पाणीनिः वर्तते।

स्वतः पूर्वान वैयाकरणामन् पाणीनिः स्वस्य "अष्टाध्यामी" इत्येतस्मिन् ग्रन्थे अन्यान्यव्माकरण प्रक्रियानिरूपण सूत्रेषु स्मरति यथा -ऋतों भारद्वाजस्य'' 7/2/63 "लोपः शाकल्यस्य" 7/3/12 "त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य" 7/4/50 "वा सुप्याविशलेः" 6/2/12 इत्यादि।

पाणिनिः भगवान् व्याकरणशास्त्रस्य केन्द्रबिन्दुर्मतः। यद्यापि तत्पूर्वमपि दश पाणिनिस्यता दश अनेपेक्षिताः षोडशेति षड्विंशनिराचार्याः सन्तमेव व्याकेरणशास्त्र प्रवक्तारस्त थाऽपि भगवतः पाणिनेः व्याकरणशास्त्रक्रेन्द्रबिन्दुत्वं विलेसत्शेव तदुपस्थापनप्रावी0 येन पाणिनिह भगवान् सर्वाणि प्रचलितत्याकरण शास्त्रीणि समालोच्य विशमदमापि शब्दप्रखोना विषयमुपस माहत्य व्याकरणसूत्राणि प्राणिलायं सत्र निखिलमेव सप्रंपल्चं शब्दानुशासन मात्मसा भूतभक्ति, तस्यः। हि व्याकरणसाहिता अष्टाध्यायी नामा प्रसिद्धाऽस्ति यद्यापि आखिशलव्याकरण पाणिने रूपजीवन मासीत् यथा हरदतः सक्कतयति तथापि तस्य मौलिकत्वमः क्षुण्णमविहत सास्टमेव। पाणिनिह गोत्रनाम

पाणिनिः पिता शलक्कः माता दाक्षी।

**-प्रशान्त**
रोल नम्बर : 18/90025

## सर्वेभ्यः शिक्षकेभ्यः समर्पितम्

किम् अस्ति तत् पदम्
यः लभते इह सम्मानम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यः करोति देशानामु निर्माणम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्
किम् अस्ति तत् पटम्
यः रचयति चरित्रं जनानाम्
'गुरूः अस्ति अस्य पदस्य नाम
सर्वेषाम् गुरूणाम् मम शतं शतं प्रणामाः।।

यः ज्ञानं यच्छति शास्त्राणि शिक्षयति च सः शिक्षक। ऋषिः आचार्यः गुरूः अध्यापकः इति अपि तस्य नामानि। भारतवर्षे प्राचीनकालादेव शिक्षकाय अति महत्वं प्रदत्त। तस्य स्थानं राज्ञः अपि उच्चतरम्। शिक्षक बिना ज्ञानप्राप्तिः न सम्भवा। कवयः तम् ईश्वरात् अपि श्रेष्ठं मन्यन्ते। तस्मै श्री गुरवे नमः।

**-श्रेया चंद्र**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
क्रमांक- 18/90006

## आदर्शः गुरुः

शास्त्रेषु गुरोः बहु महत्वं वर्णितम् अस्ति। गुरूः मनुष्यं मनुष्यं करोति। आदर्शः गुरूः सः अस्ति, यः यथा छात्रान् उपदिशति, तथैव स्वयम् अपिं आचरणं करोति। छात्राः गुरूं द्रष्टवा, तस्मं आचरण च द्रष्टवा, तथैव आचरणं कुर्वन्ति आदर्शगुरोः कर्तव्यम् अस्ति यत् च सं शिष्य पुत्रवत् गणयेत्, तं पापात् निवारयेत, त सन्मार्गम् आनयेत् तं सदगुणान् शिक्षयेत्, तं सत्कर्मसु, योजयेत् तं हितकार्येषु नियोजयेत्, त सर्वाः विद्याः छात्राणं हितम इच्छति। शिष्याणां हितार्थ बहूनि दूःखनि अपि सहते, परन्तु सदैव तेषां हित करोति। स सदा स्वसमयं पठने च मापयति। स आस्तिकः धार्मिकः विनीतः सुशीलः सदाचारी च भवति। स सदैव वन्दनीयः भवति।

**-सपना**
बी.ए. (ऑनर्स), I[st] (ईयर)
रोल नंबर : 19/29041

## ( छात्राणां कर्तव्यम् )

छात्राणं प्रधानं कर्तव्यम् अस्ति यत् ते स्वगुरूणाम् आज्ञां पालयन्तु। गुरूणाम् आज्ञायाः पालन छात्राणां पवित्र कर्तव्यम् अस्ति। गुरूणाम् आज्ञायाः पालनेन एवं छात्रः संसारे उन्नतिं कर्तु समर्थः भवति। गुरूणाम् आशीर्वादेन एवं छात्रः सर्वाः विद्याः सरलतया शिक्षते। छात्राणां कर्तव्यम् अस्ति यत् ते गुरूणां सेवां कर्वन्तु सावधनतया विद्या पठन्तु, विद्यायाः अध्ययने चित्र ददतु, सत्कर्मसु प्रवृत्ताः भवन्तु, दुर्गुणेभ्या निवृताः भवन्तु आस्तिनः भवन्तु पापेभयः विरमन्तु सदाचारस्म पालने मनः योजयन्तु ब्रह्मचर्य पालयन्तु, विनीताः सुशीलाः च भवन्तु, मातृणां चितृणां च सेवां कुर्वन्तु। ये एवं प्रकारेण स्वकीयं जीवन या, ते जीवने उन्नति कुर्वन्ति, सफलाः च भवन्ति।

## ( ग्रीष्म ऋतुः )

अस्मिन् ऋतौ सूर्यस्य किरणाः तीक्ष्णाः भवन्ति। सूर्यः भूमिम् अत्यधिंक तापयति। उष्णः तीव्रः च वायुः वहति। अल्ये अपि परिश्रमें कृते स्वेदः प्रवहति नद्यां स्नान रूचिकरं भवि्ति। मध्याहें सूर्यस्य तापः तीव्रः भवतिः अतः प्रातः कालः सांयकालः च सुखकरौ भवतः मध्याहने बहिः गमनं न सम्भवति, अतः छात्रासु शयनं रूचिकरं भवति। पिपासा अधिंक बाधते। शरीरे शिथिलत्वं सजायते। कार्येषु मन न लगति। केचन आतपेण रूग्णाः भवति। वृक्षाः लताः च प्रायः शुष्यन्ति।

**-सपना**
बी.ए. (ऑनर्स), I[st] (ईयर)
रोल नंबर : 19/29041

## ( श्रीमद् भगवत् गीता )

Maditation dffiiculties:-

(1) चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमांयि बलवद् दृढम्।
तस्याहं निग्रह मन्ये वायोटिव सुदुकरम्।

मन की चन्चलता के बारे मे अर्जुन कहते है, हे मधुसूदन! जो यह तुने साम्य-बुद्धि का बुद्धि-योग" बतलाया गया है, मन के चंचल होने के कारण कोई स्थिर स्थिति प्राप्त कर सकेगा हे कृष्ण मन बडा चंचल है, मन डालनेवाला है, बलवान् है हठी है। मैं तो मानता हूँ कि उसका निग्रह करना वायु को वश में करने के समान दुष्कट है, कठिन है। इस कथन को सुनने के बाद भगवान् कृष्ण बोलते है-

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येय च गृहाते।।

भगवान कृष्ण कहते है हे महाबाहु। निस्सन्देह मन का निग्रह करना बडा कठिन है, यह चन्चल है किन्तु कुन्ती के पुत्र अर्जुन। वह अभ्यास तथा वैराग्यं से वश में किया जा सकता है।

Procedure (प्रक्रिया):-

भगवान श्री कृष्ण इसकी प्रक्रिया को बताते है:-

(1) शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मन:।
नात्युच्छ्रितं नातिनीयं चौलाजिन कुरोतरम्।।

स्वच्छ स्थान पर अपना स्थिर आसन बिधाकर ऐसी जगह जो न अजीक ऊॅची हो न अधिक नीची हो और आसन पर पहले कुशा, फिर मगछाला और उस पर वस्त्र बिछाकर बैठना चाहिए।

(2) तत्रैकाग्रं मन: कृत्वा यतचित्रेन्द्रियक्रिय:।
उपविश्यासनें भुन्याधोगमात्मविशुव्रये।।

आगे श्री कृष्ण कहते है वहॉ मन को एकाग्र कर चित्र तथा इन्द्रियों की क्रियाओं को रोककर आसन पर बैठकर आत्मशुद्धि अर्थात् अन्त: करम या मन की शुद्धि के लिए भोग में जुट जाए।

(3) समं कायशिरांग्रीव धारयत्रचलं स्थिर:।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशरयान वलौकमन।।

अपनी पीठ सिर और गर्दन को सिधा अर्थात एक सिध मे तना अचल रखकर अर्थात् बिना हिले डुले स्थिर होता हुआ नासा के अग्रभाग पर दृष्टि जमाकर अन्य किसी दिशा में न देखते हुए।

(4) और अंत में कहते है:-
प्रशान्तात्मा विभतभीब्रहाचर्भव्रते स्थित:।
मन: संयम्य मच्चितो युक्त आसीत मतय।।

प्रशान्त मनवाल, भय से रहित, ब्रहाचर्य के व्रत में टिका हुआ, मन का संयम करके, मुक्ष में ही चिन्त गाइकर मत्यरायण होकर, मुक्ष से सम्बन्ध जोड़कर बैठ जाये।

**-योगिता**
रोल नंबर : 19/290/0

# सुभाषितानि

गुणा गुणज्ञेषु गुण भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषा:।
सुस्वादुतोया: प्रभवन्ति नद्य:
समुद्रमासाध भकतयप्या: ।।1।।

सहित्य सङ्गीतकलाविहीन:
साक्षात्पशु: पुच्छविषाणहीन:।
तृणं न खादनपि जीवमान:।
तद्भागधेयं परमं पशुनाम् ।।2।।

लुब्धस्य नश्यति यश:, पिशुनस्य मैंत्री
नष्ट क्रियस्य कुलमर्थपश्स्य धर्म:।
विद्याफलं व्यमनिन: कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमतसचिवस्य नराधिपस्य ।।3।।

पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं
माधुर्यमेव जनयन्मधुमाक्षकासौं।
सन्तस्तथैव समसज्जन दुर्जनाना
श्रुत्वा वच: मधुरसूक्तरसं स्रजन्ति।।

विहायं पौरूषं यो हि दैवमेवावलम्बते।
प्रासादसिहॅ तस्य मूधिन तिष्ठन्ति वायसा: ।।5।।

पुष्पपत्रफलच्यणयामूल वलकलदारूभि
धन्या महीरूहा येषां विमुख यान्ति नार्थिन: ।।6।।

**-शालिनी**
बी.ए. (ऑनर्स)
II[end] (सेमिस्टर)
रोल नंबर : 19/29034

# पर्यावरण

वयं वायुजलमृदाभि: आवृते वातावरणे निवसाम:। एतदेष वातावरणं पर्यावरण कथ्यतें। पर्यावरणेनैव वयं जीवनोपयोमिवस्तुति प्राम्नुम:। जलं वायु: च जीवने महत्वपूर्णो स्त:। साम्प्रतं शुद्ध- पेय- जलस्य समस्या वर्तते। अधुना वायुरपि शुद्ध नास्ति। एवमेव प्रदूषित पर्यावरणेन रक्षाया: अति आवश्यकता वर्तते। प्रदूषणस्य अनेकानि कारणानि सन्ति। औद्यौगिकावशिष्ट पदार्थ उच्च ध्वनि यानधुमादय: प्रमुखानि कारणानि सन्ति। पर्यावरणरक्षायैं वृक्षा: रोपणीया:। वयं नदीषु तडागेयु च दूषितं जल न पतेम्। तैल रहित वाहनानां प्रयोग: करणीय:। जना: तरूणां रोपणम् अभिरक्षणं च कुर्यु:।

अस्मान परित: यानि पञ्चमहाभूतानि सन्ति तेषां समवाया: एव परिसर: अथवा पर्यावरणम् इति पदेन व्यवहीयते। इत्युक्ते मनुष्यो यत्र निवसति यत् खादति, यत् वस्त्रं धारयति, यजजलं विवति यस्य पवनस्य सेवनं करोति, तत्सर्व पर्यावरणम् इति शब्देनाभिधियते। अधुना पर्यावरणम् इति शब्देनाभिधियते। अधुना पर्यावरणस्य समस्या न केवलं भारतस्य अपितु समस्त विश्वस्य समस्या वर्तते। यज्जलं यश्च वायु: अद्य उपलभ्यते, तत्सर्व मलिनं दूषितं च दुश्यते अथवा भारतस्य राधानी अस्ति। पर्यावरणम् पश्यतु। भारतस्य राज्येषु अन्यतमम् अस्ति। पर्यावरण भारतदेशस्य राजधानी विश्वस्य अति विशालासु नगरीषु अन्यतमा इति गण्यते। पर्यावरणम् एषा भारतस्य तृतीया बृहती नगरी वर्तते। इत्यादि विश्रुता इयं नगरी पाचीनकाले हस्तिनापुरमिति ख्याता आसीत्।

**-अभिशेक मिश्र**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
I[st] (ईयर)

# महामना मालवीयः

महामनस्विनः मदनमोहन मालवीयस्य जन्म प्रयोगा प्रतिष्ठित-परिवरेडभकर। असथा पिता पण्डितव्र जनाथमालवीयः संस्कृतस्य सम्मान्यः विद्वान आसी। अयं प्रयागे एव संस्कृतपाठशालायां राजकीय विद्यालये म्योर सेण्ट्रल। महाविद्यालये च शिक्षा प्राप्य अत्रैव राजकीय विद्यालये अध्यापलम् आरब्धवान। युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्णभाषणेन जनमां मनांसि अमोहयत्। अतः अस्य सुहृदः तं विधिनरीक्षामुतीर्थ प्राप्त देशस्य क्षेमहलां ऐवां कर्तु प्रेरित्वन्तः तदुमुत्रम् अर्थ विक्रियारीक्षामुतीर्थ प्राप्त उच्चन्यालये प्राहिववाककर्म कर्तुभारीत्। विधेः प्रकृष्टज्ञानेन, मधुमलावेक्ष उदार व्यवहारेण चायं शीध्रमेव नियाणां न्यायाधीशानाञय सम्ममालभाजनम अवत्। महापुरूषाः लौकिक - प्रलोभलेयु बहाः नियतलक्ष्यान्त भश्यन्ति। देशसेवानुश्क्लेडं युवा उच्चन्यायालयस्य परिषों स्थातुं ताशक्तोत्। पणिडतमाती लाल लेहम नानाजनतरा यप्रमृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनाथके सह सोगी देशस्य स्वत्रतासमः गामेश्वतीर्णः। देहन्यां प्रयोविशतिलमें काईग्रेसस्यधिवेशलेडयम् आश्चयपत दमलड न् रॉलेट एक्ट इत्यारम्यस्य विरोधेडस्य ओजस्विभाषणं श्रृत्वा आइलशासकाः सीताः जाताः बहुवरं कारनामें निक्षिप्तोडपि अयं करः देशयेवाव्रत जालधारा। हिन्दी-संस्कृता भाषानु अस्स समताः अधिकार असीत्। हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्थानामामुत्यानाम अयं निरंतरं प्रयलमकारोत्। "शिक्षभैव देशे समाजे व जीवनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीविश्वविद्यालस्य संस्थापनमकरोत्। अस्य निर्माणाय अयं जलाय् व्यन्स् अथायत जलाश्य मध्यस्मिन् अस्य निर्माणय अयं जनाय् व्यन्म् अथाचत जलाश्य मध्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभुतं धनमश्मै प्रायचछम तेल निर्मितोडयं विशालः विश्वविद्यालयः आस्तीयानां दानशीलतायाः श्री मालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिर्त विभाति। साधारणस्यितिकोऽपि जनः महतोत्साहेन मनस्वितया, पौरूषेण च असाधारणमदि कार्य कर्तु क्षमः शयदर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः एतदर्थमेव जन्यस्तं महामना श्तुपाधिला अभियातुमारब्धन्तःस्वितयाः।

**-गौरव शर्मा**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
I[st] (ईयर)

# ( शुक्रनासोपदेशः)

अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुदभूतरजोभ्रान्ति दुर मात्मेच्छया यौवनसमये पुरूषं प्रकृतिः।

आत्मेति आत्मेच्छया यौवन समये तारूण्यक्षणे प्रकृतिः पुरूषं दुरमपहरति। दुरं परिनयतीव्यर्यः। अस्मिन्नर्थे उपमानमाह- शुकमिति। वातानां समूहों वात्या वातकलिकोच्यते। शुष्कपत्रं यथापहरति। उभयाः साम्यमाह समुद्भूतेति। समुदभूता रजोगुणेन भ्रान्तिर्भ्रमा यस्याम्। पक्षे रजसां रेगुनां भ्रमो यस्याम्।

इन्द्रियहरिमहारिणी च सततमतिदुरन्तेयमयभोगमृष्णिका। नवयौवनकषायितात्मत्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषयस्वरूपाण्यास्वाधमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः।

इन्द्रियति, इन्द्रियाण्येव करणान्मेव हरिणाः कुरङ्गस्तेषां हारिणी हरमशीलौते द्वरत्रुपभांगोङ्गनादिक स एवं मृगतृष्णिका मरूमरीचिकेयं सततं निरन्तरम्। सुखाभिमानोत्पादनाददुरन्ता दुःखावयाना नवेति। नवयौवनेन प्रत्यग्रतारूपण्येन कषायितं विषयपरिवर्तितमात्माव्रकरणं यस्य बभूतस्य पुरूषस्यास्वाधमानानि तान्येव विषय स्वरूपामि मनसरचेतसो मधुरतराम्यापतन्ति। मधुराण्येव भवन्तीत्यर्वः। अप्रैव वृण्टान्तमाह - सलिलेति। यथा कषाभद्रव्येण हरीतक्यादिना मधुराण्यपि जलानि मधुरतराणि स्युः। "आत्मानः" इति प्रायक्षि पाठः।

नाशयति च दिइःमोह इवोन्मार्गप्रवर्तकः पुरूषमत्यासङ्गों विषयेत।

विषयेषु सवचन्दनवनिता दिव्यव्यासङ्गोऽ सक्तिः पुठषमात्मानं नाशयति क इव। दिडमोहों दिग्भ्रान्तिरिव। उभयोः साद्वश्यमाहन उन्मार्ग इति। उन्मार्गोउपयों विरूद्धचारश्च तत्र प्रवर्तकः प्रेरकः।

गुरूवचनम् अमलमपि सलिलमिव मृहदुपजनयति श्रवमस्थितं शूलमभवस्य। इतरस्य तु करिण इव रांखाभरणमानन शोभास मुदयमधिकतरमुप जनयति।

दोषे सति किं स्यादित्याह- गुरूवचनमिति, गुरूवचनं हिताहित प्राप्ति पदिघटोपदेष्टा गुरूस्तस्य वचनं वाक्यममलमपि निर्मलमरप्य भव्य स्यासाधोः श्रवण स्थितं कर्णकोटरगतं सन्महच्छुधूलमुषजनत्युत्पादयती यर्थः। अत्रायेडंनुभवसिद्ध दृष्टान्तमाह - सलिलेति यथा सलिलं पानीयमतिस्वच्छमपि कर्मगतं महाव्ययाजनकं स्थात्। दोषोभावे त्वाह-इतरस्य त्वजिकतर मानवो भामुदयमुप जनयति विधति क इव राहो जलजस्तस्याभटमं भूषयं कटिम इव हरितन इव दृस्तिनां द्वरिटदोष बाधनार्थ शंखभरणं कर्णे बहयत इति लोकरीतिः।

**-शिव राज**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
I[st] (ईयर)

# सुभाशितानि

मृथिव्यां त्रीणि रत्ननि जलमत्रं सुभाशितम्।
मूढैः पाशाणखण्डेषु राजसंज्ञा विधीयते।।1।।

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुष्च सर्व सत्ये प्रतिष्टितम् ।।2।।

दाने तपसि "गौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ।।3।।

सदिभरेव सहासीत सदियः कुर्वीत संगतिम्।
सभ्द्रिर्विवाद मैत्रीं च नासभ्दिः किचदोचरंत्।।4।।

धनधान्यप्रयोगेषु विघायाः संग्रहेशु च
आहार व्यवहारे च त्यकलज्जः सुखी भवेत्।।5।।

क्षमावषीकृतिलोके क्षमया किं न साध्यते।
शान्तिखडगः करे यस्य किं करश्यिति दुर्जनः।।6।।

**-सौरभ मावी**
रोल नंबर : 19/ 29038
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत

## प्रतिज्ञापत्रम्

भारतं मम देषः
सर्वे भारतीयाः मम भ्रातरः भगिन्यः च सन्ति।
मम मानसे देषस्पृहा अस्ति।
समृद्धिसहितं विविधतापरिपूर्णं तस्य संस्कृतिगौरवम् अनुभवामि।
अहं सदा तत्पात्रं भवितु यत्नं करिश्यामि।
अहं मम पितरौ आचार्यान गुरूजनान् च प्रति आदरभावं धारयिश्यामि।
प्रत्येकेन सहं शिष्टव्यवहारं च करिश्यामि।
अहं मम देषाय देषबान्धवेभ्यः च मम निश्ठाम् अर्पयामि।
तेंशा च कल्याणे समृद्धौ च एव मम सुखम् अस्ति।

**-सोनू**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत

## नारी मनोविज्ञान

पद्मिनी प्रथमा नारी सर्वोत्वमान्विता स्मृता।
चित्रिणी "ांखिनी चौव हस्तिनी तदन्तरम्।।1।।

उत्तमाः
"यामांगी गौरवर्णा च उज्जवलष्यामि कापिवा
नातिदीर्धा न खर्व्वा च उत्तमा कुमारी स्मृता।2।
गजेन्द्र गमना या हि मरालगमनापि वाः
दशनानि च सुद्राणि सर्वोत्तमा प्रकीर्तिता ।3।
रक्तपद्मकरा या हि धर्म निश्ठा परायणा
पद्म पत्रायताक्षी च सर्वोत्तमा हि कीर्तिता

मध्यमाः
न स्थूला न च कृशांगी न खर्व्वा न हि दीर्धिका
लम्बकेशी सुनासा च कुमारी मध्या स्मृता
धर्मे निष्ठा सदा यस्या मितं भुक्ते या"

अधमाः
बहुरोमा वृत्तांगी या पिंगलाक्षी मुनीश्वर,
अधमा तां जिज्ञानीयात्
सुदीर्धदशना या हि वाचाला निर पत्रपा,
विकटोच्चहास्या या कर्कशांगी स्थूलोदरी
कठिन कर पादा च अधमा सा स्मृताः वुधैः।
स्वल्प केशी हस्व केशी सदा वै बहुभाषिणी
कदाचार रतां परायणाधमा लक्षणम्।

आकारैं रिंगितै गत्या चेष्टया भाषणेन च
नेत्रतक्त विकारें रच ज्ञायतेडन्तर्गवं मनः।।

**-दीपक,** बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत

## सत्यमेव जयते नानृतम्

सते अर्थात् कल्याणाव हितं सत्यं भवति। यद् वस्तु यथा विद्यते, तस्य तेनैव रूपेण कथनं प्रकाशन लेखनं बा सत्यमिति अभिधीयते परमेष्वरेण जिहा सदुपयोगार्थं दत्ता, अतः जिहायाः सदुपयोगः सत्यभावणेन कर्तव्यः।

जगति सत्यस्य याद्वशी आवश्यकता विद्यते, न ताद्वशी अन्यस्य कस्यचिद् वस्तुनः। सत्येनैव समाजस्य स्थितिः वर्तर्त। यदि सर्वेऽसत्यवादिनो भवेयुस्तीहं न सोकरय स्थितिः क्षणामात्रमपि भवितुं शवनेति। सत्यस्यैव च महिमा यद् वयं समाजे मनुश्येशु विष्वासं कुर्मः। अतः सिध्यति यत् सत्यं लोकस्यायरोअस्ति।

अतः एवोच्चते।
गोथिविप्रैश्च वेदैश्य, सतीभिः सत्यवादिथिः।
अलुब्धैर्दानशूरैश्च, सप्तभिर्धार्यते मही।।

सत्यभाषणेन मनुष्यों निर्भीको भवति। सत्यभाषणेन तस्य तेजो यशः कीर्तिः विद्या गौरवं च वर्धन्ते। यः सत्यं वदति, स सर्वेभ्यः पापेभ्योऽपि निवृतों भवति। यदा स कस्मिश्यित् पापे प्रर्वतते, तदा स चिन्तयति यद् अहं सत्यमेव वदिष्यामि, अतः सर्वेषां दृष्टिषु हीतो भविष्यामि एवं स पापाद् किरमति। सत्यभाषणं वस्तुतो जीवने सर्वोत्तम तपो वर्ततो। अतः शिक्म् -

आष्वमेघसहस्त्रं च सत्यं च तुलया घृतम् अष्वमेधवाहस्त्राद् हिं, सत्यमेव विशिष्यते।

**-आलिया खान**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
II[end] ईयर

## भारतवर्षः

भारतभूमिः अस्माकं मातृभूमिरस्ति। सा अस्माकं प्राणैरपि प्रिया अस्ति! भारतस्य अन्यत् नाम "हिन्दुस्थानम" अपि वर्तते! पुरा अस्य प्राचीन नाम आर्यावर्तः आसीत्। अत्र दुश्यन्तो नाम राजा बभूव। तस्य महान् वीरः पुत्रः भरतः नामासीत्। तस्य नाम्नां अस्य देशस्य नाम 'भारत' जातम्।

'भरतस्येदं भारतम् इति कथ्यते। भारतवर्षस्य स्थानं विश्वस्य सर्वेशु देशेशु प्राचीनतम् विशिष्टमेच अस्ति! भारत देशः अतीव विस्तृतः अस्ति। अस्य उत्तरस्यां दिशि विशालः उन्नतः च हिमालयः विद्यते, यः प्रहरीव भारत रक्षति। अस्मात् पर्वततात् अनेकाः नद्यः वहन्ति, देशस्य भूभागं सिञ्चिन्ति च। अस्य दक्षिणस्यां दिशायाँ सागरः स्वजलैः अस्य चरणौ सतत् प्रक्षालयति भारतवर्श प्रकृतिः रम्यं स्थानं वर्तते। अस्य मनोहरं रूपं जनानां चेतांसि आकर्षति। अतः प्रतिवर्ष अत्र अनेके पर्यटकाः विदेशादपि आगच्छन्ति आगरास्थितः 'ताजमहलः सर्वेशां पर्यटकानामाकर्षण अस्ति।

भारतवर्षे विभिन्नजातीयाः विभिन्न धर्मसम्प्रदायानां जनाः वसन्ति। सर्वे परस्परं स्नेहेन व्यवहरन्ति। अस्माकं देशस्य सर्व सैनिकाः देशरक्षणाय

सदा तत्पराः दृष्यन्ते।

अस्माकं देशः देवपुरूषेणभ्योऽपि प्रियः अस्ति अत्रैव श्रीराम, कृष्ण, विवेकानन्द दयानन्दादयः अजायन्त। महात्मा गाँधी, तिलक जवाहर लाल नेहरू प्रभृतयः महापुरूषा भारतभूमेः एवं सुताः। 'अब्दुल कलाम' नाम वैज्ञानिकः, सत्पुरूषः च भारतस्य एवं सुपुत्रः अस्ति। एतादृशानां महापुरूषाणां प्रयत्नैरेव अस्माकं देशः उन्नतिपथ प्रयाति। एवंविद्याः महापुरूषाः भारतीयाः सन्ति एतत् सौभाग्यं खलु। वयमपि भारते उत्पन्नाः अभवाम। वयम् अत्र वसामः अतः अस्माकं एतत् परम कर्तव्य् शत् मनसा वाचा, कर्मणा, भारतं रक्षेम, अस्य उन्नतिं च कुर्याम!

हिमालयं समारभ्य यावत् इंदु सरोवरम्।
तं देवनिर्मितं देशं हिंदुस्थान प्रचक्षते।।

हिमालय पर्वत से शुरू होकर भारतीय महासागर तक फैला हुआ ईश्वर निर्मित देश है "हिंदुस्तान", यही वह देश है जहाँ ईश्वर समय सयम पर जन्म लेते हैं और सामाजिक सभ्यता की स्थापना करते है।

**-भारती**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
II$^{end}$ ईयर

# उत्तमं हि धनं विद्या

अर्थमूलमिदं जगदिति धारणा सर्वत्रैव निरूढ़प्राया सर्वमान्या वा संलक्ष्यते फलतोऽद्यत्वे आराजरङ सर्वो लोकोऽहर्निशमर्थनेव चिन्तयन् धनमेवार्जयन् तदेव स्तुवन्, तदेवानुधावन् तल्लिप्सयैव सांसारिकेषु नेवाविधेषु साध्येषु दुःसाध्येषु वा कार्यजालेषु आत्मनं विक्षिवन् तदर्जनेन च परमं सुख मनुभवन्नवलोक्यते। लोकजीवनसुखाय नास्ति धनादन्यत् साधनम्। विद्यापि धनार्धाना, बुद्धिर्शप धनाधीना, साधय्यमपि धनाधीनां गुणा अपि धनाधीनां जगदपि धनाधीनमेव, अप्राप्यं नाम नेहास्ति धनिनो हि व्यवसायिनः। सर्वे सदाचराः सर्वे व्यवहारा धनेनेव साहयन्ते अतो घनस्य प्रधान्यं नातितरां दूरे यथार्य्यात् नैकशोऽस्माभि रहयक्षीक्रियते धनाभावेन विदुषां दुर्दशा, कलाभिजानां दुर्गति वां। पीड्यन्ते दरिद्राः, उत्सार्य्यन्ते दीनजनाः, तिस्क्रियन्ते निर्धनाः। श्रीमतां कूपाकटाक्षाभिलाविणो विद्वासोऽपि तद्वारदेशमुपाश्रित्य वाग्देवी नर्तयन्तो निकृष्टामपि तत्सेवाव्म्तमाचरन्तों धनाशया ताननुधावन्तश्चाभिलक्ष्यते का वार्ता सामान्यजनानाम्। एतदेवास्ति कारणं यज्जगदिदम् अर्थमूल मुच्यते। वस्तुतो दारिद्रयान्मरण मेव श्रेयः ययोक्तं मृच्छकटिकारेण:

दारिद्रथान्मरणाद् वा मरणं मम रोचते न दारिद्रयम्।
अल्पक्लेशं मरणं दरिद्रयमनन्तकं दुःखम्।।

नहि धनं सर्वकार्यसाधकम्। कानिचित् कार्याणि सिद्ध यन्ति धनेन नहि सर्वाणि, लोकाभ्युदयो लम्येत धनेन नहि निः श्रेयसाधिगमो धनेन कदापि सम्भाव्यते। जागतिककार्येषु यथा भौतिकोन्नतिरिष्यते तथैव पारलौकिकोन्नतिरपि। सन्तु नाम धनानि भौतिकोन्नतिसाधनानि, पर मै तै में कदापि आध्यात्मिकोन्नतिखायते, इयन्तु साध्यते केवलं विद्ययैव नान्यथा। विद्याबुद्धिमद्धिरेवार्था लभ्यन्ते, विमूढा नानुपश्यन्ति धनोपार्जनसाधनानि, पश्यन्तोऽपि न साुल्यमुपयन्ति, विद्याया बुद्धिविकासः तेन च धनार्जनं धनसंरक्षणं वा सम्भवति। अतो विद्यैवोतमं धनं, विद्यामूलं हि धन मित्यवधारणीयम्।

अन्यच्च वैशिष्ट्यं विद्याया धनापेक्षया। धनानामर्जिताना मपि संरक्षणे दुःखमनुभयते, भारकारि च भवति धनम् परं विद्या तु अर्जिता यदि, संरक्षिता तिष्ठति, नैवास्याः संरक्षणे चौरभतिः। विद्वान् पुरूषों यत्र कुत्रापि देशे विदेशे वा परिभ्रमति, विद्या अनाहूतापि, तमनुसरति, तत्साहाय्यं विद्यते धनार्जनेऽपि। धनेश्वपगतेषु व्ययोकूतेषु वा दुःखानुभूतिरेव भवति परं विद्याया उपयोगे सुखानुभूतिरेव जायते। व्ययड्.गतापि विद्या नित्यं वर्धते, धनानि च झीयन्ते अतों धनानि वाग्देवताया: समतां कर्तु न कदापि प्रभवन्ति। अन्यजेद् यद् धनं विद्यार्जने सहायकं भवति। धनेन बिना यदि नास्ति असाध्या तथापि धनसहाय्यं बिना विद्या दुःसाध्या एव। सुखानां दुःखानाञ्च पर्यायेण गतिः स्वाभविकी नात्र कारणं धनं न वा विद्या। परं नात्र विवादः, यद् धनादुच्चतरा विद्या। अतः सत्यमिद् मुच्यते उत्तमं हि धनं विद्या दीयगानं न हीयते।

**-समिति चौरसिया**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत
I$^{st}$ ईयर

# संस्कृतभाषायाः महत्वम्

**( 1 ) प्रस्तावना**

संस्कृता परिष्कृता परिशुद्धाः व्याकरणसम्बन्धि दोषादिरहित्ता भाषा संस्कृत भाषेति निगद्यते। सर्वविधदोषशून्यत्वादियं भाषा देव भाषा, गीर्वाणगीः इत्यादिभिः शब्दैः संबोध्यते।

**( 2 ) महत्वं लाभाश्च**

संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा सर्वोत्तमसाहित्य संयुक्ता अस्ति। संस्कृत भाषाया उपयोगिता एतस्मात् कारणा वर्तते यद् एबैव सा भाषा अस्ति यतः सर्वासां भारतीयानाम आर्यभाषाणाम् उत्पतिर्बभूव। सर्वासामेतासां भाषाणाम् इयं जननी। सर्व भाषाणां मूलरूपज्ञानाय् एतस्या आवश्यकता भवति। प्राचीने समये एषैव भाषा सर्वसाधारणा आसीत् सर्वेः जनाः संस्कृतभाषाम् एवं वदन्ति स्मः संस्कृतभाषायाः सर्वे जनाः प्रयोगं कुर्वन्ति स्मं।

**( 3 ) तत्साहित्यम्**

संस्कृतभाषायामेव विश्वसाहित्यस्य सर्वप्राचीनग्रन्थाः चत्वारो वेदाः सन्तिः, येषां महत्वमद्यापि सर्वोपरिवर्तते। वेदेषु मनुष्याणां कर्तव्याकर्तव्यस्य सम्यकतया निर्धारिणं वर्तते। वेदानां व्याख्यानभूता ब्राहणग्रन्थाः सन्ति। तदनन्तरम् अध्यात्मविषय प्रतिपादिका उपनिषदः सन्ति यासां व्याख्या महिमा पाश्चात्यौरपि निःसकोचां गीयते। ततश्च भारतगौरवभूताः षड्दर्शनग्रन्थाः सन्ति। ये विश्वसाहित्येऽपि सर्वमान्याः सन्ति। ततश्च श्रौतसूत्राणां गृहयसूत्राणां, धर्मसुत्राणां वेदस्य व्याख्याभूतानां षड्ङ्गानां न गवना भवति। महर्षि व्यासकृत महाभारतस्य च रचना विश्वसाहित्येऽस घटना आसीत्। सर्वप्रथमं विशदस्य कवित्वस्य प्रकृति सौन्दर्यस्य नीतिशास्त्रस्य अध्यात्मविद्यायाः तत्र दर्शनं भवति। तदनन्तरं

कौटिल्यसदृशाः अर्थशास्त्रकाराः भास कालिदासाश्वधोष भवभूति दण्डि सुबन्धुबाण जयदेवप्रभृतयो महाकवयो नाटयकाराश्च पुरतः समायान्ति मेषां, जन्मालाभेन न केवलं भारत भूमिरेव अपितु समस्त विश्वमतद् धन्यांस्ति। एतेषां कविवराणां गुणगणस्य वर्णने महाविद्वांसोऽपि असमर्थाः सन्ति का गणना साधारणानां जनानाम! भगवदगीता, पुराणानि स्मृतिग्रन्थाः अन्यद्विषयकं च सर्वं साहित्यं संस्कृतस्य महात्म्यमेवोद्घोषयति।

संस्कृत भाषैव भारतस्य प्रणभूता भाषाऽस्ति। एषैव समस्तं भारतवर्षमेक सूत्रे बध्नाति भारतीय गौरवस्य रक्षणाय एतस्याः प्रचारः प्रसाश्च सवैरवे कर्तव्यः।

**-जगदीप कालावत**
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत

## परोपकारः

पुराणेशु महर्षिव्यासः कथयति यत्-"परोपकाराय पुण्याराः, पापाय परपीडणम्।" दुःखितानां दरिक्षणां वा कृते उपकारण कृतं कर्म परोपकारः कभ्यते। अस्मिन् युगे विरलाः जनाः एवं उपकाराय कार्यं कुर्वन्ति। ते एवं परोपकारिणः सन्ति ये आत्मनः कल्याणं विहाय परेषा उपकाराय निरताः भवन्ति। एषः सर्वोत्तमं धर्म अस्ति। धर्मस्य उदयेन एव जनाः राष्ट्रस्य सेवायां संलग्नाः भवन्ति। तेषां कीर्तिः लोके सदैव तिष्ठति। अनेन इहलोके ते अमराः सन्ति। पौराणिक कयानुसारं महर्षिदधीचिः संसारस्य कल्याणार्थ स्वकीय अस्थीनि दत्तवान्, महाराजः शिविः कपोतरक्षार्थं स्वकीयं अङ्गकर्तनं कृत्वा दत्तवान्। न केवलं मानवाः अपितु वृक्षाः, पशवः, नद्यः चापि परोपकाराय जीवन्ति। वृक्षाः, फलानि स्वयं न खादति गावः स्वयं दुग्धं न पिवन्ति यथा देवनिर्गिताः एते परोपकाराय संलग्नाः सन्ति तथैव वयं मानवाः अपि स्वकीयधनानि, जीवनञ्च परार्थे उत्सृजामः।

**-सुधांशु शेखर झा**
(स्नातक तृतीय वर्ष) संस्कृत विभाग

## भारतस्य परिचयः

भारतस्य विचारेण ज्ञातं भवति "भारत" शब्दे द्वौ पदो स्तः। प्रथम पद "भा'' द्वितीयं रत च स्तः। "भा'' अर्थात ज्ञानम् प्रकाशः आदि "रत" अर्थात प्रयत्नशीलः भवति। अतएव "भारत" शब्दस्य अर्थः ज्ञाने रतः प्रयत्नशीलः भवति। इदम् एकमात्र स्थानम् अस्ति यत्र गुणस्य आधारे नामकरणस्य परम्परा भवति। "भारत" नाम अस्य प्रत्यक्ष उदाहरणम् अस्ति। भारतस्य अन्यानि नामानि अपि सन्ति। अस्य एका विशेषता इमम् अस्ति यत् निवासिनाम् आधारे नाम अभवत् यथा-आर्यावर्त हिन्दुस्तान इत्यादि।

भारतस्य अध्ययनं भौगोलिक सांस्कृतिक दृष्टया च कर्तुं शक्यते। भौगोलिक दृष्ट्या विचारेण ज्ञायते यत् अस्य एकतः पर्वतः अपरतः समुद्रत्रयं वर्तते। भारतस्य विशेषता इयम् एव अस्ति यत् अत्र बहवः ऋतवः सन्ति।

सांस्कृतिक दृष्ट्या विचारेण ज्ञातं भवति यत् भारतीय सभ्यता प्राचीनतमा सनातनी च अस्ति। भारतीय संस्कृतेः मूलां प्रमाणं वा वेदाः वैदिक जीवन पद्धति वा अस्ति। स्वामी विवेकानन्दः भारतस्य विशेषतायाम् अकथयत आध्यात्म धर्मः च भारतस्य आत्मानौ स्तः। भारतीय संस्कृत्याम् समाजस्य वैज्ञानिकी व्यवस्था विद्यमाना अभवत् सा तु वर्ण व्यवस्था आश्रम व्यवस्था च। वर्णव्यवस्थायाम् कार्यस्य अनुसारं नराणां विभागतः क्रियते। अस्मिन कोऽपि अत्यधिक श्रेष्ठ निकृष्ट वा नास्तिक आश्रम व्यवस्थायाम् प्रत्येक नरस्य सम्पूर्ण जीवनं कालस्य आधारेण विभज्यते। दुर्भाग्येन अस्मिन् समये इयं व्यवस्था नष्टा दृश्यते।

भारतीय राष्ट्रस्य कल्पना पूर्णरूपेण संस्कृतेः आधारे भवति। भारतस्य अस्तित्वं सम्पूर्ण विश्वस्य कृते आवश्यकम् अस्ति। यतोहि अत्र तादृशं ज्ञानं वर्तते येन ज्ञानेन मनुष्य जीवनस्य परम् लक्ष्यं प्राप्तुं शक्यते। भारतीय संस्कृतेः उद्घोषः अस्ति-एकम् सत विप्राह बहुधा वदन्ति, वसुधैव कुटुम्बकम्।

**-आञ्जनेय अंशु**
संस्कृत (द्वितीय वर्ष)

## आधुनिक शिक्षा पद्धतिः गुण-दोष- विमर्शः

शिक्षाया उद्देश्यम्-शिक्षा मानव-विकासस्य परमं साधनम्। ज्ञानोदयेन नैतिक चारित्रिक च विकासं सम्पादयति। शिक्षा सांस्कृतिकी दृढिम् उदबोधयति। शिक्षया स्वजीवनोन्नत्यै स्वजीवनयापनाय प्रशिक्षणं प्राप्यते। शिक्षा गुणाधानस्य मार्ग प्रशस्तं विढ़धाति। शिक्षा आधुनिक विषयाणां विज्ञानदीना प्रशिक्षणं प्रशस्तं करोति। शिक्षा नैतिक-गुणाधानेन सममेव जीवन सफलयति। शिक्षाया उददेश्यं अस्ति मानवस्य सर्वाङ्गीण विकाससाधनम् तत्र स्वावलम्बन भावना, लोकहितसाधनं राष्ट्रीय भावनोभावनम् समाजहितकरणं सर्वासु परिस्थितिषु एवं कार्य-सम्पादन क्षमता उत्तरदायित्व भावना जात्यादि मेढ़ निराकरणपूर्वकं मानवत्वस्य विकासनं मुख्यत्वेन उल्लेख्यानि सन्ति।

**आधुनिकी शिक्षा पद्धतिः**- आधुनिक शिक्षा पद्धति केचन विशेषाः विशेषत उल्लेखम् अर्हन्ति। ते सन्ति-

1- **वर्तमान शिक्षा पद्धति**- बालकस्य सर्वाऽ्गीण विकासस्य कल्पना बालको न केवलं शास्त्रीय विषयानेव जानीयात् अपितु व्यावहारिक विषयानपि शिक्षेत तद यथा- भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, विज्ञान, गणितं, सेगीतं, संगणकयन्त्रण आदि विषयान् अपि सम्यग् अवबुध्येत।

2- **यान्त्रिकी शिक्षाः**- अद्यत्वे यात्रिकीशिक्षायां बहु बलं आत्रीयते। एशा यन्ताणां कार्यकलाप बोधनेन उद्योगे क्षेत्रे, औद्योगिक- प्रतिष्ठानेषु च नैपुण्ये आवहति।

3- **कम्प्यूटर शिक्षाः**- कम्प्यूटर शिक्षा संगणन शिक्षां प्रदाति। अद्यत्वे प्रतिक्षेत्रं कम्प्यूटर शिक्षा अनिवार्ययाम आपद्यते। -कम्प्यूटरेण सर्वमपि गुणना कार्य स्वल्पेनैव प्रयत्नेन साहयते। सांप्रतं कम्प्यूटर विविधासु क्रियासु प्रभुज्यते।

4- **प्राविधिकी शिक्षाः**- साम्प्रतं सर्वत्र यन्त्राणां प्रवर्तनेन प्राविधि

की शिक्षाऽपि महत्वं भषते। अतएव वर्तमान शिक्षापद्धतौ प्राविधिकी शिक्षाया विशेषतो व्यवस्था विधीयते।

**5- चिकित्साशास्त्रम:-** अद्यत्वे शिक्षार्यिना चिकित्साशास्त्रेऽपि बहु रूचि दृष्यते। अतएव चिकित्सा- शास्तमपि वर्तमान शिक्षा पद्धतौ वैशिष्टयं लभते। रोगाणां रोगिणां च संख्या प्रतिपद वर्धते अत: चिकित्साशास्त्रम् आधुनिकशिक्षापद्यतौ महत्व वर्धते।

## वर्तमान -शिक्षा पद्धते: केचन दोषा:

**वर्तमान-शिक्षा-** पद्धतौ यथा गुणा: सन्ति, तथैव केचनदोषा अपि दृष्टियम् प्रथम् आरोहन्ति तेषां विशेषत उल्लेख्या: सन्ति:

**1- पाश्चाल्य सभ्यता प्रभाव:-** वर्तमान शिक्षा पद्धति: पाश्चात्य शिक्षा प्रमावेण ग्रस्ता वर्तते। तत्र भोगवाद प्रवृति: श्रम-वैक्षुश्यम् श्रम-साध्य कार्येशु अरुचि: नैतिक भावनाय। अभाव:

**2- उपाधिधारिणां बाहुल्यम:-** सर्वेशु विश्वविद्यालयेसु शतश: स्नातका: परास्नातका: शोधोपाधि धारिण: प्रतिवर्षम् उत्पाद्यन्ते। यथा तेषां संख्या वर्तते यथा वृति-समस्याऽपि वर्धते। न सर्वेषां कृते कार्य उपलभ्यते अत: प्रवृति: समस्या निरन्तरं वृद्धिम् उपयाति।

**3- सुविधाऽमिलाष:** - वर्तमान शिक्षा पद्धतौ शिक्षिता: युवक। युवतश्च सुविधां सौकर्य च वाञ्छन्ति। ते कठिनं श्रमं कर्तुं नाभिलषन्ति। अतएव ते कृषिकायै अन्येषु च क्षमसाध्येषु कार्येषु न प्रवर्तन्ते। एष सुविधाऽमिलाष: तेषां मनोबलं अपहरति।

## वर्तमान-शिक्षा-पद्धतौ अपेक्षिता: परिष्कारा:

वर्तमान शिक्षा: पद्धते: दोषाणां निराकरणाय केचन परिष्कारा: सुतराम् अपेक्षिता: सन्ति। ते परिवष्कारा: सन्ति-

1- आधारशिक्षा नैतिकशिक्षा यानिवार्यकपेण शिक्ष्येत। संयमल्य महत्वं दान-दया- परोपकार - उद्यमादीनां महत्वं प्रतिपाद्येत्।

2- श्रमस्य महत्वं शिक्ष्येत। यदि शारीरिकं - श्रम महत्वं शिक्ष्यते तर्हि शिक्षिता युवका श्रमकार्य प्रसन्नतया ग्रहीव्यन्ति।

3- विश्वविद्यालेशु छात्र: प्रवेश- नियन्त्रणं स्यात्।

4- शिक्षाया अर्थकरीत्वम्- शिक्षा अर्थकरी स्यात्। या शिक्षा जीवन निर्वाहस्य व्यवस्थां न कुर्यात सा शिक्षा न श्रेयसे।

5- औद्योगिकं प्रशिक्षणं- विद्यालयेशु औधोगिकं यान्त्रिकं हस्तकला संवद्धं किमपि कुटिरोद्योगदिकं शिक्ष्येत, यथा शिक्षिका युवका लघुद्योग: स्थापने समर्था भवेयु:।

**-रमेश कुमार प्रजापति**
(स्नातक तृतीय वर्ष) संस्कृत

## कालिदास

कविशिरोमणि: कविकुलगुरू: कालिदास: कविश्रेष्ठ: इति उच्यते। कालिदास: प्राचीनकालिक: राष्ट्रकवि: उच्चयते। कालिदासस्य जन्मस्थान कश्मीरा: वा वङ्गभूमिर्वा राजस्थान वा उज्जयिनी वेति निश्चित वक्तुं न शक्यते। न चास्य महानुभावस्य जीवनकालविषये कश्चिद निर्णय:। महाराजविक्रमादित्यस्य राजसभया अयं प्रतिष्ठितो विद्वान् इति सर्वे: स्वीक्रियते।

कालिदासस्य काव्ये किंचित् अलौकिकम् अपूर्वम असाधारणम् च सौन्दर्य दरीदृश्यते। तस्य काव्य आकश्मीरात् आ कन्याकुमारीम् आ द्वारिकाया: आ प्राग्ज्योतिषम् अपूर्व स्वाभाविकं च सौन्द्रर्यवर्णनम् उपलम्भते। तस्य काव्यरस निपीय निपीय जनानाम् हृदयम् नृत्येन आन्दोलितम् इव भवति। ततुल्य: कोऽपि कवि: नासीत्। अत: केनचित् कविना उक्तम्- पुराकवीनाम् गणनाप्रसंगे कनिष्ठिधिष्ठित कालिदास।

अधापि ततुल्यकवेरभावात्
अनामिका सार्थवती बभूव।।

कालिदासेन अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वषीयम्, मालविकग्निमित्रं च इति त्रीणि रूपकापि रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् च इति द्वे मदृाकाव्य। ऋतुसंहारं, मेधदूत च इति द्वे खण्डकाव्ये विरचितानि। तस्य कौशलम् यथा पद्यरचनायाम् तभौव नाटकेषु वर्तते।

कालिदासेन प्रकृति: मानवसहचरीरूपेण वमिता। यदा तस्य पात्राणि हण्यन्ति तदा प्रकृति: अपि प्रफुल्ल भवति यदा तस्य पात्राणि दु:खितानि भवन्ति तदा प्रकृतिरपि रोदितीव। यथा अभिज्ञानशाकुन्तले चतुथङ्के डे शकुन्तला यदा काण्वाश्रम त्यक्त्वा पतिगृहं प्रयाति तदा तस्या वियोगे मृगा घासचर्वणं विस्मरन्ति। मयूरास्तस्या: शोके नृत्यं त्यजन्ति, किमन्यत् वृक्षा लताश्चापि रूपदिन्त पत्ररूपाणि अश्रूणि च पातयन्ति।

नृत्यं व्यजन्ति, किमन्यत् वृक्षा लता श्चापिं रूदन्ति पत्ररूपामि अश्रूणि च पातयन्ति-

:- उग्द्वलितदर्भकवला मृगा: परित्यक्तनर्तना मयूरा: अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रणीव लता:।।

:- कलिदासस्य काव्ये मानवमनसोऽपि गम्भीरचित्रमं वयं पश्याम:।

:- कालिदासस्य काव्यानि व्यंजनामयानि सन्ति। वैदेशिका: कालिदासं द्वितीयं शेक्सपीयरम् एवं मन्यन्ते गेटेनामा जर्मन कवि: स्वलोक भूलाकयां: सौन्दर्यम् एकीभूतमिव अभिज्ञानशाकुन्तले अवलोक यति।।

कालिदासस्य काव्यानां प्रमुख वैशिष्टयम् उपमासौन्दर्यम् एवं अस्ति:। उपमा कालिदासस्य इति आभायकम् प्रसिद्धमेव। तस्य उपमाया: एकं उदाहरणं हरयताम्- संचारिणी दीपाशिटवेव रात्रै यं व्यतीयाय पतिंवरा सा। नरेन्द्रमार्गट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स भूमिपाल:।।

अत्र रधुवंरो इन्दुमत्या: स्वयंवरावसरस्य वर्णन मस्ति। इन्दुमति अत्र चलन्ती दीपशिखा इव वयता। वटमाला गृहीत्वा सा यस्य नृपस्य सम्मुखं भांति स प्रथमं तु प्रसंत्र भवति यथा दीपप्रकाराराान्या: प्रासादा: भवेयु:। अत्र उपमत्रा एवं कलिदासेन नृपायां मनौभावा आपे स्फुट प्रदर्शिता। अनया उपमया एवं कलिदासेन दीपशिखा कालिदास: इत्युपाधियनिगत:।

**-सौरभ कुमार**
रोल नंबर : 19/ 29006
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत

# Punjabi Phulkari

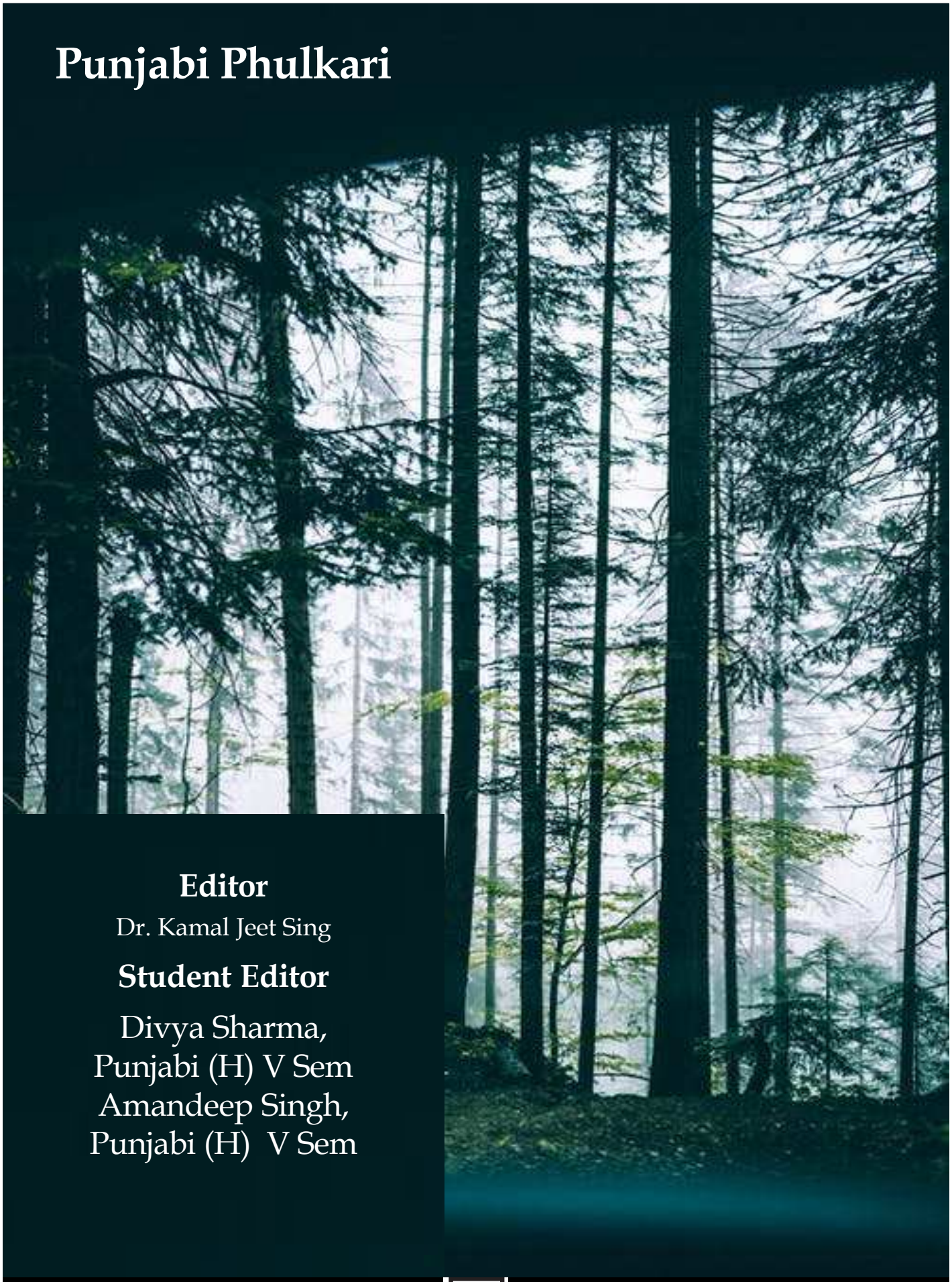

**Editor**

Dr. Kamal Jeet Sing

**Student Editor**

Divya Sharma,
Punjabi (H) V Sem
Amandeep Singh,
Punjabi (H) V Sem

# ਤਤਕਰਾ


| | | |
|---|---|---|
| 1:- ਮਾਂ | (ਰਿੰਪਲ, ਬੀ.ਕਾਮ. ਆਨਰਸ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 63 |
| 2:- ਅਰਦਾਸ | (ਹਰਮੀਤ ਕੌਰ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਪਹਿਲਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 64 |
| 3:- ਵਜੂਦ | (ਸ਼ੁਭਮ, ਬੀ.ਕਾਮ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 65 |
| 4:- ਕਿਰਪਾਲ ਕਜ਼ਾਕ | (ਸਿਧਾਰਥ ਸ਼ਰਮਾ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਦੂਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 66 |
| 5:- ਰੱਬ | (ਤਵਿਨ ਸੇਠੀ, ਬੀ.ਏ.ਆਨਰਸ, ਫਿਲਾਸਫੀ, ਦੂਸਰਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 67 |
| 6:- ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਦਾ ਸਮਾਜ ਉੱਤੇ ਅਸਰ | (ਸ਼੍ਰਿਸ਼ਟੀ, ਬੀ.ਏ.ਆਨਰਸ, ਪੰਜਾਬੀ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 68 |
| 7:- ਮਾਂ-ਪਿਉ | (ਪਵਨੀਤ ਸਿੰਘ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਦੂਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 69 |
| 8:- ਬੁਝਾਰਤਾਂ | (ਨਵਨੀਤ ਕੌਰ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 69 |
| 9:- ਸਿੰਘ ਦੀ ਸ਼ਾਨ | (ਨਵਨੀਤ ਕੌਰ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 70 |
| 10:- ਮੁਸਾਫ਼ਿਰ | (ਰੋਹਿਤ ਜੱਸੀ, ਬੀ.ਏ.ਆਨਰਸ, ਪੰਜਾਬੀ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 70 |
| 11:- ਯਾਦਾਂ | (ਧੁਮਿਤ, ਬੀ.ਏ.ਆਨਰਸ, ਪੰਜਾਬੀ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 71 |
| 12:- ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ | (ਕੁਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ, ਬੀ.ਏ.ਆਨਰਸ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 71 |
| 13:- ਮਾਂ ਮੇਰੀ | (ਪਵਨੀਤ ਸਿੰਘ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਦੂਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 72 |
| 14:- ਦਿਲ ਦੇ ਕਹੇ ਹੋਏ ਅਣਕਹੇ ਸ਼ਬਦ | (ਪਵਨੀਤ ਸਿੰਘ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਦੂਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 73 |
| 15:- ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਨੌਜਵਾਨ ਦਿਵਸ:ਨੌਜਵਾਨ ਦੇ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ | (ਅਮ੍ਰਿਤਪਾਲ ਸਿੰਘ, ਬੀ.ਏ.ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਤੀਜਾ ਵਰ੍ਹਾ) | 75 |

**File 1 (Revised)**

**“ਮਾਂ”**

ਕਿਹੜੀ ਮਿੱਟੀ ਨਾਲ ਰੱਬ ਨੇ ਤੈਨੂੰ ਬਣਾਇਆ
ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਹਰ ਪਲ ਤੂੰ ਆਪਣਿਆ ਤੇ ਲੁਟਾਇਆ,
ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਭੱਜ ਦੌੜ ਚੋਂ ਹੱਟ ਕੇ, ਤੂੰ ਜੀਉਣਾ ਸਿਖਾਇਆ
ਤੇਰੀ ਝੋਲੀ ਵਿੱਚ ਸਾਰਾ ਜਹਾਨ ਸਮਾਇਆ,
ਆਪ ਇਕੱਲਿਆ ਰੋ ਕੇ
ਦੂਜਿਆਂ ਨੂੰ ਹਰ ਪਲ ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ ਜੀਉਣਾ ਸਿਖਾਇਆ···
ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਘਰ ਦੀ ਦਹਲੀਜ਼ ਤੋਂ ਟਪਾਇਆ
ਫ਼ੇਰ ਪਤਾ ਲੱਗਿਆ ਘਰ ਵਿਚ ਕਿੰਨਾ ਸਕੂਨ ਸਮਾਇਆ,
ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਹਰ ਪਲ ਲੁਟਾ
ਮਾਂ ਨੇ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਫੁੱਲਾਂ ’ਤੇ ਬਿਠਾਇਆ।

**ਰਿੰਪਲ**
**ਬੀ.ਕੋਮ (ਔਨਰਜ਼)**
**ਤੀਸਰਾ ਸਾਲ**

## ਅਰਦਾਸ

**“ਬਿਰਥੀ ਕਦੇ ਨਾ ਹੋਈ ਜਨ ਕੀ ਅਰਦਾਸ”**

ਅਰਦਾਸ ਇੱਕ ਆਤਮਾ ਦਾ ਮੰਡਲ ਹੈ, ਭਾਵਨਾ ਦਾ ਮੰਡਲ ਹੈ, ਇਹ ਮਨ, ਤਨ ਅਰਪਨ ਕਰਨ ਦਾ ਮੰਡਲ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਇਸ਼ਟ ਨਾਲ ਲਿਵ ਜੋੜਨ ਦਾ ਇੱਕ ਸਾਧਨ ਹੈ।

ਅਰਦਾਸ ਵਿੱਚ ਸ਼ਕਤੀ ਹੈ, ਜੋ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਧਰਵਾਸ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਸੱਚੇ ਦਿਲ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਗਈ ਅਰਦਾਸ, ਉਸ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਵਿੱਚ ਪੁੱਜ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਅਤੇ ਉਸ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦਾ ਮਿਹਰਾਂ ਅਤੇ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਭਰਿਆ ਹੱਥ ਸਾਡੇ ਸਿਰ ਉੱਤੇ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਅੰਗ-ਸੰਗ ਸਹਾਈ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦਿਆਲੂ ਹੈ, ਕਿਰਪਾਲੂ ਹੈ।

ਅਰਦਾਸ ਸ਼ਬਦ ਫ਼ਾਰਸੀ ਦੇ ਸ਼ਬਦ “ਅਰਜ਼ਦਾਸਤ” ਤੋਂ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਅਰਦਾਸ-ਅਰਜ਼ ਤੇ ਦਾਸ ਦਾ ਸਮੂਹ ਜੋੜ ਹੈ। ਅਰਦਾਸ ਹੈ। ਬੱਚੇ ਦੀਆਂ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ, ਰੱਬ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਬਾਤਾਂ! ਦੁੱਖ-ਸੁੱਖ ਦੀ ਜੋ ਵੀ ਗੱਲ ਸਾਡੇ ਦਿਲ ਵਿੱਚ ਹੋਵੇ ਅਸੀਂ ਅਰਦਾਸ ਰਾਹੀਂ ਪਿਤਾ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨਾਲ ਸਾਂਝੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਕਈ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੀ ਅਰਦਾਸ ਤਾਂ ਪੂਰੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਅਸੀਂ ਜੋ ਮੰਗਦੇ ਹਾਂ ਉਹ ਸਾਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ। ਅਸੀਂ ਅਰਦਾਸ ਕਰਦੇ ਹਾਂ, ਜੇ ਪੂਰੀਆਂ ਨਾ ਹੋਣ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਦੁੱਖ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਜਾਣਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਵਾਸਤੇ ਕੀ ਭਲਾ ਹੈ ਤੇ ਕੀ ਬੁਰਾ ਹੈ। ਸੋ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਸਾਡੀਆਂ ਉਹੀ ਮੰਗਾਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਜਿਦੇ ਵਿੱਚ ਸਾਡਾ ਭਲਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਨਾ ਪੂਰੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਮੰਗਾਂ ਬਾਰੇ ਸੋਚਦੇ ਸਾਨੂੰ ਦੁਖੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ, ਬਲਕਿ ਸੋਚਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਕਿ ਜੋ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉਸ ਵਿੱਚ ਹੀ ਸਾਡੀ ਭਲਾਈ ਹੈ।

**ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ॥ 5 ॥**

**“ਵਿਣੁ ਤੁਧੁ ਹੋਰੁ ਜਿ ਮੰਗਣਾ ਸਿਰਿ ਦੁਖਾ ਕੈ ਦੁਖ॥**

**ਦੇਹਿ ਨਾਮੁ ਸੰਤੋਖੀਆ ਉਤਰੈ ਮਨ ਕੀ ਭੁਖ॥”**

ਇਸ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਅਰਦਾਸ ਵਿੱਚ ਹੋਰ ਦਾਨ ਮੰਗਣ ਦੀ ਥਾਂ 'ਦਾਨਾਂ ਸਿਰ ਦਾਨ ਨਾਮਦਾਨ' ਦੀ ਕਾਮਨਾ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਡੇ ਲਈ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਦਾਤ ਦੀ ਥਾਂ ਦਾਤਾਰ ਮਿਲ ਜਾਏ ਤਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜਾਂ ਤੁੱਛ ਹਨ।

**ਹਰਮੀਤ ਕੌਰ**

**ਬੀ.ਏ. ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ**

**ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ**

**ਖੁਦ ਖੁਦਾ ਭਰ ਦੇ**

**"ਵਜੂਦ"**

ੳ) ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਰੁਲਦੇ ਪੱਥਰ ਨੂੰ ਚੁੱਕ ਕੇ
ਨਾਲ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਲੜ੍ਹਨਾ ਸਿੱਖਾ ਦਿੱਤਾ
ਵਜੂਦ ਸੀ ਮੇਰਾ ਪਏ ਸਮਾਨ ਬੇਕਾਰ ਜਿਹਾ
ਪਰ ਰਹਿਮਤ ਉਸ ਸੱਚੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਨੇ…
ਕਤਾਰਾਂ ਉੱਚੀਆਂ 'ਚ ਬਿਠਾ ਦਿੱਤਾ
ਓ ਇੱਕ ਤਿਣਕੇ ਦਾ ਨਾਮ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ…

ਅ) ਆਨ ਲੈਂਦਾ ਨਾ ਕੋਈ ਸੀ ਸਾਰ ਸਾਡੀ
ਵਿੱਚ ਗਲ਼ੀਆਂ ਗੁਮਨਾਮ ਜਿਹੇ ਹੋਏ ਫ਼ਿਰਦੇ ਸੀ
ਓ ਮਾਰੀ ਠੋਕਰ ਸਭ ਸਮਝ ਪੱਥਰ ਸਾਨੂੰ…
ਓ ਵਿੱਚ ਨਜ਼ਰਾਂ ਕਾਫ਼ਿਰ ਇਸ ਜਮਾਨੇ ਦੇ…
ਓ ਵਿੱਚ ਨਜ਼ਰਾਂ ਕਾਫ਼ਿਰ ਇਸ ਜਮਾਨੇ ਦੇ…
ਬਿਲਕੁਲ ਨਕਾਮ ਜਿਹੇ ਹੋਏ ਫਿਰਦੇ ਸੀ
ਓ ਬੇਨਿਸ਼ ਜਿਹੇ ਹੋਏ ਫ਼ਿਰਦੇ ਸੀ…
ਫ਼ਰੋਲਦਾ ਫ਼ਰੋਲਦਾ ਵਰਕੇ ਜਦ ਮੈਂ
ਫ਼ਰੋਲਦਾ ਫ਼ਰੋਲਦਾ ਵਰਕੇ ਜਦ ਮੈਂ
ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨਾਮੀ ਇਸ ਕਿਤਾਬ ਦੇ
ਏਹੀ ਸੋਚ ਦੇ ਪੈ ਗਿਆ
ਓ ਕੁਝ ਕਰਨ ਦੀ ਆਹ ਦੇ
ਤੂਫ਼ਾਨ ਇਸ ਵਿਚ ਵਕਤ ਬੁਰਾ ਬਣ ਮਿੱਟੀ ਰਹਿ ਗਿਆ

ਸ਼ਾਇਰੀ ਔਕਾਤ ਸਹੀ ਇਸ ਵਕਤ ਧੁਰੇ ਦੀ ਜੋ ਵਲ ਮੰਜ਼ਿਲ ਕਦਮਾਂ ਤੇਰਿਆਂ ਨੂੰ ਰਸਤਾ ਨਾ ਦੇ
ਓ ਕਰ ਮਿਹਨਤ ਤੂੰ ਪੂਰੇ ਨਾਲ ਜ਼ਜਬੇ ਕਿ ਹੋ ਖੁਸ਼ ਕੀਤੀ ਤੇਰੀ ਇਸ ਮਿਹਨਤ ਤੋਂ, ਨਾਲ ਕਾਮਯਾਬੀ ਝੱਲੀ ਤੇਰੀ ਉਹ

**ਸ਼ੁਭਮ**

**ਬੀ.ਕੌਮ (ਤੀਸਰਾ ਸਾਲ)**

**ਕਿਰਪਾਲ ਕਜ਼ਾਕ**

ਕਿਰਪਾਲ ਕਜ਼ਾਕ (15 ਜਨਵਰੀ 1943) ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਹਾਣੀਕਾਰ ਤੇ ਪਟਕਥਾ ਲੇਖਕ ਅਤੇ ਵਾਰਤਕ ਲੇਖਕ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਜਨਮ ਸਰਦਾਰ ਸਾਧੂ ਸਿੰਘ ਦੇ ਘਰ ਪਿੰਡ ਬੰਧੋਕੇ ਜਿਲ੍ਹਾ ਸ਼ੇਖੂਪੁਰਾ (ਹੁਣ ਪਾਕਿਸਤਾਨ) ਵਿੱਚ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਸਵੀਂ ਤੱਕ ਹੀ ਵਿੱਦਿਆ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਰਾਜਗਿਰੀ ਕਰਦੇ ਕਰਦੇ ਆਪਣੇ ਸਾਹਿਤਿਕ ਅਤੇ ਖੋਜੀ ਯੋਗਤਾ ਸਦਕਾ ਪਹਿਲਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਵਿੱਚ ਖੋਜ ਸਹਾਇਕ ਨਿਯੁਕਤ ਹੋਏ ਅਤੇ ਪਿੱਛੋ ਪ੍ਰੋਫ਼ੈਸਰ ਦੇ ਅਹੁਦੇ ਤੱਕ ਵੀ ਪਹੁੰਚੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਖੇਤਰਾਂ ਦਾ ਅਮੀਰ ਅਨੁਭਵ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਹਨ: ਕਹਾਣੀ ਸੰਗ੍ਰਹਿ: ਕਾਲਾ ਇਲਮ, ਅੱਧਾ ਪੁਲ ਅਤੇ ਕਈ ਹੋਰ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਹਾਣੀ ਸੰਗ੍ਰਹਿ "ਅੰਤਹੀਣ" ਲਈ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਦਾ ਵਕਾਰੀ ਇਨਾਮ ਮਿਲਿਆ ਹੈ।

**ਸਿੱਧਾਰਥ ਸ਼ਰਮਾ**

**ਬੀ.ਏ. ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ**

**ਦੂਸਰਾ ਸਾਲ**

ਇਕ ਤੇਰੇ ਕਰਕੇ ਰੱਬਾ, ਮੈਂ ਕੱਟਾਂ ਦਿਨ ਰਾਤਾਂ,
ਤੂੰ ਐਨੀ ਰਹਿਮ ਬਖ਼ਸ਼ੀ, ਕੇ ਆਪੇ ਪੈਰਾਂ ਉੱਤੇ ਤੁਰ ਪਵਾਂ।

ਬਾਲਾ ਨਾ ਕੁਝ ਮੰਗਾ, ਬਸ ਇਕੋ ਚੀਜ਼ ਆ ਪਿਆਰੀ
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਾਂ-ਪੇ ਮੈਨੂੰ ਦਿੱਤਾ, ਉਸ ਤੋਂ ਵੱਧ ਓਹਨਾਂ ਨੂੰ ਦੇਵੀਂ ।
ਮੇਰਾ ਵੱਸ ਜੇ ਚਲੇ, ਓਹਨਾਂ ਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਸੈਰ ਕਰਾਵਾਂ ।
ਇਕ ਤੇਰੇ ਕਰਕੇ ਰੱਬਾ, ਮੈਂ ਕੱਟਾਂ ਦਿਨ ਰਾਤਾਂ,
ਤੂੰ ਐਨੀ ਰਹਿਮ ਬਖ਼ਸ਼ੀ, ਕੇ ਆਪੇ ਪੈਰਾਂ ਉੱਤੇ ਤੁਰ ਪਵਾਂ।

ਜਿਵੇਂ ਗੁਰੂ ਮੇਰੇ ਸਿਖਾਇਆ, ਬੱਸ ਓਸੇ ਰਾਹ ਤੇ ਚਲਾਂ
ਜੇ ਮਨ ਕਦੇ ਮੇਰਾ ਡੋਲੇ, ਓਹਨਾਂ ਦੇ ਪੈਰੀਂ ਸ਼ੀਸ਼ ਝੁਕਾਵਾਂ ।
ਇਕ ਤੇਰੇ ਕਰਕੇ ਰੱਬਾ, ਮੈਂ ਕੱਟਾਂ ਦਿਨ ਰਾਤਾਂ,
ਤੂੰ ਐਨੀ ਰਹਿਮ ਬਖ਼ਸ਼ੀ, ਕੇ ਆਪੇ ਪੈਰਾਂ ਉੱਤੇ ਤੁਰ ਪਵਾਂ।

ਜੇ ਤੂੰ ਹੱਥ-ਪੈਰੀ ਦਿੱਤੇ ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਮੂਲ ਜਰੂਰ ਮੈਂ ਪਾਵਾਂ,
ਜੇ ਲੋੜ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਹੋਵੇ, ਓਹਦੇ ਕੰਮ ਸਦਾ ਮੈਂ ਆਵਾਂ ।
ਇਕ ਤੇਰੇ ਕਰਕੇ ਰੱਬਾ, ਮੈਂ ਕੱਟਾਂ ਦਿਨ ਰਾਤਾਂ,
ਤੂੰ ਐਨੀ ਰਹਿਮ ਬਖ਼ਸ਼ੀ, ਕੇ ਆਪੇ ਪੈਰਾਂ ਉੱਤੇ ਤੁਰ ਪਵਾਂ।

ਵੇ ਰੱਬਾ ਕਿੰਨਾ ਚੰਗਾ ਹੋਜੇ, ਜੇ ਰੋਲੇ ਜੱਗ ਤੋਂ ਮੁਕ ਜੇ ।
ਸਾਰੇ ਸੁੱਖਾਂ ਨਾਲ ਹੀ ਰਹੀਏ, ਆਪਾ ਕਿਸੇ ਦਾ ਨਾ ਖੋਵੇ ।
ਮਾੜਾ-ਚੰਗਾ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਬੱਸ ਏਨੇ ਜੋਗਾ ਰੱਖੀਂ
ਕੇ ਮਾਨ ਤੇਰੇ ਤੋਂ ਨਾ ਖੋਵਾਂ ।
ਇਕ ਤੇਰੇ ਕਰਕੇ ਰੱਬਾ, ਮੈਂ ਕੱਟਾਂ ਦਿਨ ਰਾਤਾਂ,
ਤੂੰ ਐਨੀ ਰਹਿਮ ਬਖ਼ਸ਼ੀ, ਕੇ ਆਪੇ ਪੈਰਾਂ ਉੱਤੇ ਤੁਰ ਪਵਾਂ।

**ਤਵਿਨ ਸੇਠੀ**
**ਬੀ.ਏ. (ਫ਼ਿਲਾਸਫ਼ੀ)**
**ਦੂਸਰਾ ਸਾਲ**

**File 2**

**ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਦਾ ਸਮਾਜ ਉੱਤੇ ਅਸਰ**

ਕੁੱਝ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਤੱਕ, ਟੀ.ਵੀ. ਚੈਨਲ ਖ਼ਬਰਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਸਾਰਣ ਲਈ ਲਗਭਗ ਅੱਧਾ ਘੰਟਾ ਪ੍ਰਤੀ ਦਿਨ ਅਲਾਟ ਹੁੰਦੇ ਸਨ, ਪਰ ਵਰਤਾਰੇ ਦੇ ਕਾਰਜ ਕਾਰਣ ਇਹ 24/7 ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਮਸ਼ਰੂਮ ਵਾਂਗ ਉੱਭਰ ਆਏ।

ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ :- ਇਹ 24/7 ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਰਹਿਣ ਵਿਚ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰਨ ਲੱਗੇ। ਇਹੀ, ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦੀ ਪਾਰਦਰਸ਼ਤਾ ਉੱਤੇ ਯਕੀਨ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕਤੰਤਰ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕਰਦੇ ਰਹੇ ਅਤੇ ਹੁਣ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲ ਤਾਕਤ ਹੈ ਉਹੀ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਤੋਂ ਡਰਦੇ ਹਨ, ਕਿਉਂਕਿ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਉੱਤੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਤਰਫੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ (ਸਰਕਾਰ) ਪੁੱਛਗਿੱਛ ਕਰਨ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ। ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਹੀ ਰੁਟੀਨ ਦੀਆਂ ਖ਼ਬਰਾਂ ਨੂੰ ਕਾਫ਼ੀ ਦਿਲਚਸਪ ਬਣਾਉਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਕੁੱਝ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਤੱਕ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਖ਼ਬਰਾਂ ਦੇਖਣ ਵਿਚ ਦਿਲਚਸਪੀ ਨਹੀਂ ਲੈਂਦੇ ਸਨ, ਪਰ ਅੱਜ ਕੱਲ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਨੂੰ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦੇ ਚੈਨਲਾਂ ਜਿੰਨਾ ਹੀ ਪਸੰਦ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਹ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਵਿਚ ਦਿਲਚਸਪੀ ਲੈਣ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਗਿਆਨ ਵਿਚ ਵੀ ਸੁਧਾਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਮਦਦ ਕਰਦੇ ਹਨ…

ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ:- ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਹਰ ਖ਼ਬਰ ਨੂੰ ਅਤਿਕਥਨੀ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬ੍ਰੇਕਿੰਗ ਨਿਊਜ਼ ਵਜੋਂ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਿਰਫ਼ ਟੀ.ਆਰ.ਪੀ. ਰੇਟਿੰਗਾਂ ਲਈ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਨੂੰ ਸਨਸਨੀਖੇਜ਼ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਇਹੀ ਲੋਕਾਂ ਅੰਦਰ ਬੇਲੋੜੀ ਜਿਹੀ ਦਹਿਸ਼ਤ ਪੈਦਾ ਕਰਦੇ ਹਨ।

ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਮੁੱਖ ਤੌਰ ਉੱਤੇ ਸਾਨੂੰ 'ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਖ਼ਬਰਾਂ, ਵੱਲ ਕੇਂਦ੍ਰਿਤ ਕਰਦੇ ਹਨ; ਜਿਵੇਂ:- ਦੁਖਦਾਈ ਘਟਨਾਵਾਂ, ਕਤਲ, ਅਪਰਾਧ ਆਦਿ। ਇਹੀ ਲੋਕਾਂ ਉੱਤੇ ਮਾੜਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ, ਜੋ ਅਸੀਂ ਵੇਖਦੇ ਹਾਂ ਉਸਦਾ ਸਿੱਧਾ ਅਸਰ ਸਾਡੇ ਉੱਤੇ ਵੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਵਧੇਰੇ ਪੈਸੇ ਕਮਾਉਣ ਲਈ, ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਅਦਾਇਗੀ ਵਾਲੀਆਂ ਖਬਰਾਂ ਦੀ ਚੋਣ ਕਰ ਕੇ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਹੇਰਾਫੇਰੀ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਵਰਤਾਰਾ ਖ਼ਾਸਕਰ ਚੋਣਾਂ ਹੋਣ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵੱਧਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸਦਾ ਹੀ ਇਹ ਨਤੀਜਾ ਹੈ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਉੱਤੇ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਖ਼ਬਰਾਂ ਉੱਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਕਰਨਾ ਔਖਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕੁੱਝ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਪਾਰਟੀਆਂ ਦੇ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਇਸਦਾ ਕਾਰਣ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਆਧਾਰਿਤ ਖ਼ਬਰਾਂ ਹਨ। ਕੁੱਝ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਅਕਸਰ ਜੁਰਮ ਦੇ ਦ੍ਰਿਸ਼ਾਂ ਬਾਰੇ ਜਾਂਚ ਕਰਤਾਵਾਂ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ ਵੀ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਹਨ, ਉਹ ਮਿੰਟ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਸਭ ਕੁੱਝ ਸਮਝਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਇਹ ਤਰੀਕਾ ਅਪਰਾਧੀ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਵੀ ਉਸ ਖ਼ਬਰ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹਨ ਤੇ ਉਸੇ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿਚ ਰੱਖ ਕੇ ਅਪਰਾਧ ਕਰਣਗੇ। ਕਦੇ ਕਦੇ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਅਪਰਾਧਾਂ ਦੇ ਨਵੇਂ ਤਰੀਕਿਆਂ ਬਾਰੇ ਅਪਡੇਟ ਦਿੰਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਜੋ ਅਪਰਾਧੀਆਂ ਦੀ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲੋ ਜ਼ਿਆਦਾ ਮਦਦਗਾਰ ਸਾਬਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਜਾਤੀ, ਕੌਮ ਦੀ ਕੋਈ ਝੜਪ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਘਟਨਾ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਪੂਰੇ ਦਿਨ ਪ੍ਰਸਾਰਣ ਕਰਦੇ ਹਨ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਨਫ਼ਰਤ ਫ਼ੈਲਦੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਹਰ ਘੰਟੇ ਜੁਰਮਾਂ ਬਾਰੇ ਖ਼ਬਰ ਦਿੰਦੇ ਹਨ, ਉਸ ਤੋਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਸਪਾਸ ਹੀ ਜੁਰਮ ਮਹਿਸੂਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਅਸੁਰੱਖਿਅਤ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਬੇਚੈਨੀ ਦੀ ਇਹੀ ਭਾਵਨਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਉੱਤੇ ਸਿੱਧਾ ਅਸਰ ਪਾਉਂਦੀ ਹੈ…

ਸਿੱਟਾ:- ਕੁੱਝ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲਾਂ ਦਾ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦਾ ਪਾਲਣ ਨਹੀਂ ਕਰਨ ਕਾਰਣ ਉਹ ਪੂਰੇ ਲੋਕਤੰਤਰ ਦੀ ਸਾਰੀ ਮੀਡੀਆ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਬਦਨਾਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਕਾਰੋਬਾਰ ਲਈ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਕੁੱਝ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਕਰਨਾ ਬਹੁਤ ਮਹਤੱਵਪੂਰਨ ਹਨ:- ਈਮਾਨਦਾਰੀ, ਉਦੇਸ਼, ਪੇਸ਼ੇਵਰ ਯੋਗਤਾ, ਬਣਦੀ ਦੇਖਭਾਲ, ਗੁਪਤਤਾ ਅਤੇ ਪੇਸ਼ੇਵਰ ਵਿਵਹਾਰ। ਜੇ ਸਮਾਚਾਰ ਚੈਨਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਭ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਕਰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਜਨਤਾ ਉੱਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਮਾੜਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਘੱਟ ਹੋਵੇਗਾ…

**ਸ਼੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਸਿੰਘ**

**ਬੀ.ਏ (ਔਨਰਜ਼) ਪੰਜਾਬੀ**

**{2018-2021}**

**ਮਾਂ-ਪਿਉ**

ਸੋਨੇ ਦੇ ਗਹਿਣੇ ਚੋਂ

ਕਦੇ ਵੀ ਖੁਸ਼ਬੂ ਆਵੇ ਨਾ…

ਜੀਭ ਦੇ ਜ਼ਖਮਾਂ ਨੂੰ

ਕੋਈ ਵੀ ਮੱਲ੍ਹਮ ਹਟਾਵੇ ਨਾ…

ਮੁਰਦੇ ਕਦੇ ਮੁੜਿਆ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ ਸਮਸ਼ਾਨਾਂ ਚੋਂ

ਮਾਂ-ਪਿਉ ਵਰਗੀ ਚੀਜ਼ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ ਦੁਕਾਨਾਂ ਚੋਂ…

**ਪਵਨੀਤ ਸਿੰਘ**

**ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ)**

**ਦੂਸਰਾ ਸਾਲ**

**ਬੁਝਾਰਤਾਂ**

1. ਹਰੇ-ਹਰੇ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਵਾਲ

ਲੰਬੀ ਗਰਦਨ ਮੋਟੀ ਛਾਲ

ਇਹ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਆਧਾਰ

ਕਰਦੇ ਹਨ ਸਾਨੂੰ ਖੁਸ਼ਹਾਲ

2. ਮੈਂ ਚੱਲਦਾ ਚਾਲ ਨਿਰਾਲੀ

ਸ਼ਕਲ ਮੇਰੀ ਹੈ ਕਾਲੀ

ਕੰਦਮੂਲ ਤੇ ਫ਼ਲ ਖਾਂਦਾ

ਸ਼ਹਿਦ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਖੁਸ਼ ਹੋ ਜਾਂਦਾ

3. ਮੈਂ ਹਾਂ ਗੋਲ ਮਟੋਲ

ਰੰਗ ਮੇਰਾ ਹੈ ਹਰਾ

ਅੰਦਰੋਂ ਟੁੱਟਣ ਤੇ ਲਾਲ ਬਣ ਜਾਵਾਂ

ਗਰਮੀ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਆਵਾਂ

ਸਭ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਮਨ ਨੂੰ ਭਾਵਾਂ

4. ਦੇਖ ਅਸੀਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਸਕਦੇ

ਪਰ ਕਦੇ ਗਿਣ ਨਾ ਸਕਦੇ

ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਉਹ ਛੋਟੇ ਲਗਦੇ

ਅਸਲ ਵਿਚ ਹੁੰਦੇ ਨੇ ਵੱਡੇ

ਦੱਸੋ ਉਹ ਹਨ ਕੋਣ?

ਉੱਤਰ

1. ਰੁੱਖ
2. ਰਿੱਛ
3. ਤਰਬੂਜ
4. ਤਾਰੇ

**ਨਵਨੀਤ ਕੌਰ**

**ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ)**

**ਸਿੰਘ ਦੀ ਸ਼ਾਨ**

ਵਾਲਾਂ ਬਗ਼ੈਰ ਸ਼ੇਰ ਨਹੀਂ ਜੱਚਦਾ
ਖੰਭਾਂ ਬਗੈਰ ਮੋਰ ਨਹੀਂ ਫੱਬਦਾ
ਕੇਸਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਸਿੰਘ ਨਹੀਂ ਸੱਜਦਾ
ਕੇਸਾਂ ਨਾਲ ਸ਼ਾਨ ਸਿੰਘ ਦੀ
ਇਹ ਕੇਸ ਹਨ ਆਨ ਸਿੰਘ ਦੀ
ਦਿੱਤੀਆ ਨੇ ਕੁਰਬਾਨੀਆ ਸਿੰਘਾਂ ਕੇਸਾਂ ਖ਼ਾਤਰ
ਬੰਦ-ਬੰਦ ਕਟਾਏ ਸਿੰਘਾਂ ਨੇ ਕੇਸਾਂ ਖ਼ਾਤਿਰ

ਵੇਖੋ ਪਗੜੀ ਨਾਲ ਬਣਦੀ ਟੋਹਰ ਮਹਾਨ
ਇਹ ਕੇਸ, ਪਗੜੀ ਹਨ, ਸਰਦਾਰਾਂ ਦੀ ਸ਼ਾਨ
ਦਾੜੀ, ਮੁੱਛਾਂ ਨਾਲ ਹੈ ਸ਼ਾਨ ਪਿਆਰੀ
ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਗੁਰੂ ਨੇ ਪਹਿਚਾਣ ਵੱਖਰੀ
ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਨੇ ਸ਼ਖ਼ਸ਼ੀਅਤ ਨਿਖ਼ਰੀ

**ਨਵਨੀਤ ਕੌਰ**
**ਬੀ.ਏ. (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ)**

**ਮੁਸਾਫ਼ਿਰ**

ਮੁਸਾਫ਼ਿਰ ਦਾ ਆ ਗਿਆ ਪੈਗ਼ਾਮ ਦੋਸਤੋ
ਜੀਹਨੂੰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹੋਏ, ਲੰਘ ਗਈ ਸ਼ਾਮ ਦੋਸਤੋ
ਕਹਿੰਦਾ ਆਪ ਨੂੰ ਆਵਾਰਾ ਸ਼ਰੇਆਮ ਦੋਸਤੋ
ਤਾਹੀਓਂ ਲੋਕੀ ਉਹਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਗੁਮਨਾਮ ਦੋਸਤੋ

ਉਹ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਣਦਾ
ਤਾਂ ਹੀ ਬਹੁਤਾ ਨਾ ਯਕੀਨ ਰੱਖਣ 'ਚ ਮੰਨਦਾ
ਉਹਨੂੰ ਧੋਖੇ ਦਾ ਗਿਆਨ ਨਾ ਹੀ ਵੰਡੀਏ ਤਾਂ ਚੰਗਾ
ਕਿਉਂ ਕਿ ਆਪ ਵਿਚ ਆਪ ਨੂੰ ਉਹ ਧੋਖਾ ਮੰਨਦਾ

ਦਿਖਾਵੇ ਨਾਲ ਰੱਖੇ ਉਹ ਫ਼ਾਸਲਾ ਹੈ ਬੜਾ
ਇਹ ਧਰਤੀ 'ਤੇ ਉਹਨੂੰ ਹੈਗਾ ਕੋਈ ਨਾ ਪਿਆਰਾ
ਜਿਹੜੇ ਰਾਹਵਾਂ ਉੱਤੇ ਕਦੋਂ ਦਾ ਉਹ ਲੰਘ ਗਿਆ ਏ
ਉਹੋਂ ਰਾਹਵਾਂ ਉੱਤੇ ਉਹਨੇ ਪੈਰ ਪਾਇਆ ਨਹੀਂ ਦੁਬਾਰਾ

ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸਦਾ ਬਣਕੇ ਉਹ ਆਮ ਦੋਸਤੋ
ਨਿੱਕਾ-ਵੱਡਾ ਕੋਈ ਵੀ ਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਨਾਮ ਦੋਸਤੋ
ਕਹਿੰਦਾ ਆਪ ਨੂੰ ਆਵਾਰਾ ਸ਼ਰੇਆਮ ਦੋਸਤੋ
ਤਾਹੀਓਂ ਲੋਕੀ ਉਹਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਗੁਮਨਾਮ ਦੋਸਤੋ

ਮੁਸਾਫ਼ਿਰ ਦਾ ਆ ਗਿਆ ਪੈਗ਼ਾਮ ਦੋਸਤੋ
ਜੀਹਨੂੰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹੋਏ ਲੰਘ ਗਈ ਸ਼ਾਮ ਦੋਸਤੋ

**ਰੋਹਿਤ ਜੱਸੀ**
**ਬੀ.ਏ. (ਔਨਰਜ਼) ਪੰਜਾਬੀ**
**ਤੀਸਰਾ ਸਾਲ**

ਯਾਦਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਨੇ ਦਿਲ ਵਿਚ
ਕਈ ਲੋਕ ਯਾਦ ਕਰਕੇ ਮੁਸਕੁਰਾਉਂਦੇ
ਕਈ ਲੋਕੀ ਰੋਂਦੇ
ਯਾਦਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਨੇ ਬੇਪਰਵਾਹ
ਉਹ ਹੁੰਦੀਆਂ ਜਿਵੇਂ
ਬਚਪਨ ਦੀਆਂ ਖੇਡਾਂ ਦੀ
ਜਵਾਨੀ ਤੇ ਆਸ਼ਕੀ ਦੀ
ਦੋਸਤਾਂ ਦੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਦੀ
ਤੇ ਦਿੱਤੀਆਂ ਸਹੂਲਤਾਂ ਦੀ

ਪੱਲੇ ਇਹ ਰਹਿੰਦੀਆਂ
ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਕਹਿੰਦੀਆਂ
ਯਾਦਾਂ ਖੱਟੀਆਂ ਮਿੱਠੀਆਂ
ਬੁਢਾਪੇ ਨਾਲ ਖਹਿੰਦੀਆਂ

**ਧੁਮਿਤ**
**ਬੀ.ਏ. (ਔਨਰਜ਼) ਪੰਜਾਬੀ**

**ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ**

1. ਤੂੰ ਲੈਣਾ ਪੱਖ ਗੁਲ਼ਾਮੀ ਦਾ ਛੱਡ ਦੇ
ਕਿਉਂ ਜੀਉਂਦਾ ਮਰ ਕੇ ਪਲ-ਪਲ ਤੂੰ
ਝੂਠ ਬੋਲ ਤੂੰ ਅਪਣੀ ਜਾਨ ਬਚਾਵੇ
ਪਰ ਕਰ ਦਾਸ-ਪ੍ਰਥਾ ਰੋਜ਼ ਮਰਦਾ ਤੂੰ
ਸੁਣ ਸੱਚਾ ਬਣ ਕੇ ਵੇਖ ਤੂੰ ਬੰਦਿਆਂ
ਤੰਗ ਕਰਦੀ ਕਿੰਨੀ ਖ਼ਾਕੀ ਏ
ਜਦ ਇਨਸਾਫ਼ ਮੰਗਣ ਤੇ ਜ਼ੁਲਮ ਹੋਵੇ
ਉਹੀ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ ਏ

2. ਜਿੱਥੇ ਮਾਰ ਤੇ ਪੁੱਤ ਮਾਂਵਾਂ ਦੇ
ਕਾਤਲ ਘੁੰਮਣ ਸ਼ਰੇਆਮ ਵੇ
ਹੱਕ ਮੰਗਣ ਤੇ ਜਿੱਥੇ ਰੋਕ ਹੋਵੇ
ਉਹ ਮੁਲਕ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਕਹਾਂ ਆਜ਼ਾਦ ਵੇ
ਸੰਨ ਸੰਤਾਲੀ ਵਿੱਚ ਸੀ ਜੋ ਹੋਇਆ
ਉਹਦਾ ਦੁਗਣਾ ਹੋਇਆ ਵਿਚ ਚੁਰਾਸੀ ਦੇ
ਜਦ ਇਨਸਾਫ਼ ਮੰਗਣ ਤੇ ਜ਼ੁਲਮ ਹੋਵੇ
ਉਹੀ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ ਏ

3. ਨਾ ਆਜ਼ਾਦ ਰਿਹਾ ਹੁਣ ਭਾਰਤ ਏ
ਗ਼ੁਲਾਮ ਇਹ ਫਿਰ ਤੋਂ ਹੋਇਆ ਵੇ
ਇੱਥੇ ਰਾਜ ਆਪਣਾ ਇਹ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੁਣ
ਕੱਟੜਵਾਦੀ ਦਲ ਕਮਲਾ ਹੋਇਆ ਏ
ਤੇ ਚੜ੍ਹਦੇ ਸੂਰਜ ਉਹਦਾ ਕਤਲ ਹੋਜੇ
ਜੋ ਉਹ ਦਲ ਦੀ ਸੋਚ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ੀ ਏ
ਜਦ ਇਨਸਾਫ਼ ਮੰਗਣ ਤੇ ਜ਼ੁਲਮ ਹੋਵੇ
ਉਹੀ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ ਏ

4. ਮਜ਼ਲੂਮ ਬਣ ਕੇ ਹੁਣ ਜਿਉਣਾ ਨਹੀਂ

ਹੱਕ ਲਈ ਬੁਲੰਦ ਆਵਾਜ਼ ਕਰੋ
"ਕੈ.ਐਸ ਸਭਰਵਾਲ" ਊਧਮ ਸਿੰਘ ਬਣੋ
ਇਹ ਪਾਪੀ ਸ਼ਾਸਨ ਤੋਂ ਨਾ ਡਰੋ
ਹਕੂਮਤ ਆਵਾਜ਼ ਦਬਾਉਣਾ ਚਾਹੇ
ਹਰ ਥਾਂ ਤੇ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਜਾਰੀ ਪਰ ਰੋਸ ਬੇਹਿਸਾਬੀ ਏ
ਜਦ ਇਨਸਾਫ਼ ਮੰਗਣ ਤੇ ਜ਼ੁਲਮ ਹੋਵੇ
ਉਹੀ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ ਏ
**ਕੇ.ਐਸ. ਸਭਰਵਾਲ**
**ਕੁਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ**
**ਬੀ.ਏ. (ਔਨਰਜ਼) ਪੰਜਾਬੀ,**
**ਦੂਸਰਾ ਸਾਲ**

## ਮਾਂ ਮੇਰੀ

ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਅਕਸਰ ਦੱਸਦੀ ਹੈ ਅਹਿਮੀਅਤ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਬਿਆ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਏਵੇ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਿੰਨ ਮੰਗਿਆ ਮਿਲ ਜਾਦੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾ,

ਉਸ ਪਿੱਛੇ ਮਾਂ ਦੀਆ ਦੁਆਵਾਂ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਮੈਂ ਚਲਦਾ ਹਾਂ ਜ਼ਰੂਰ ਇੰਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹਾਂ ਤੇ ਪਰ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਦਾ ਪਰਛਾਵਾਂ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਚਲਦਾ ਹੈ।

ਡਗਮਗਾਉਂਦੇ ਰਾਹਾਂ 'ਤੇ ਮੈਂ ਡਿੱਗ ਵੀ ਜਾਵਾਂ ਸਹਾਰਾਂ ਬਣ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਵੈਸੇ ਤਾਂ ਜ਼ਮਾਨਾ ਕਲਯੁਗ ਦਾ ਹੈ ਪਰ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਸਤਯੁਗ ਬਣ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਖੜ੍ਹੀ ਹੈ।

ਮੇਰੇ ਪਿਆਰ 'ਚ ਤਰਸਦੀ ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਚਾਹ 'ਚ ਬਿਸਕੁੱਟ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਡੁੱਬ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਹਾਂ ਵੈਸੇ ਤਾਂ ਉਹ ਕੁੱਟ ਵੀ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਕਦੇ-ਕਦੇ ਉਹ ਮੇਰੇ ਤੇ ਬਰਸ ਵੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਉਹ ਫ਼ਿਕਰਮੰਦ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਫ਼ਿਕਰ 'ਚ ਹੁੰਦਾ। ਭਾਵੇਂ, ਮੈਂ ਉਸਨੂੰ ਇਸਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿੱਤਾ ਪਰ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਉਹਨੂੰ ਕਿਦਾਂ ਅਹਿਸਾਸ ਹੋ ਜਾਂਦਾ।

ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ, ਧਿਆਨ ਰੱਖਿਆ ਕਰ ਅਪਣਾ ਮੇਰੇ ਫ਼ਿਕਰ 'ਚ ਮਾਂ ਮੇਰੀ, ਅੱਖਾਂ ਵੀ ਗਿੱਲੀਆਂ ਕਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ।

ਮੈਂ ਕਿਹਾ ਮਾਂ ਤੂੰ ਰੋਇਆ ਨਾ ਕਰ, ਏਂਵੇ ਤਾ ਮੇਰਾ ਦਿਲ ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਹੀ ਰਹਿੰਦਾ।

ਮਾਂ ਕਹਿੰਦੀ ਕਿਉਂ ਏਥੇ ਦਿਲ ਵਾਲਾ ਕੋਈ ਨਾ ਮਿਲਿਆ? ਮੈਂ ਕਿਹਾ ਤੇਰਾ ਪਿਆਰ ਹੀ ਸੱਚਾ ਏ ਮਾਂ, ਹੋਰਾਂ ਦੀਆਂ ਤਾ ਸ਼ਰਤਾ ਹੀ ਬਹੁਤ ਨੇ।

ਮੈਨੂੰ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੀ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦੀ ਰੱਬ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਨ ਦੀ, ਕਿਉਂ ਕਿ ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਮੇਰੇ ਖਿਆਲਾਂ ਦੇ ਰੂਹ-ਬ-ਰੂਹ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।

ਤੇ ਹਾਂ ਮਾਂ-

ਤੂੰ ਨਾ ਮੈਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਉਰਦੂ ਵਾਂਗ ਮਿੱਠੀ ਲੱਗਦੀ ਹੈ, ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਹੀ ਤਾਂ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਵਰਗਾ ਘੱਟ ਤੇ ਤੇਰੇ ਵਰਗਾ ਬਣਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਮਾਂ।

**ਪਵਨੀਤ ਸਿੰਘ**
**ਬੀ.ਏ. (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ)**
**ਦੂਸਰਾ ਸਾਲ**

## ਦਿਲ ਦੇ ਕਹੇ ਹੋਏ ਅਣਕਹੇ ਸ਼ਬਦ

ਉਹਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦੀ ਤਾਂਘ ਇਸ ਹੱਦ ਤੱਕ ਹੰਦੀ ਆ ਕਿ ਮੇਰੇ ਆਪਣੇ ਅਸੂਲ ਵੀ ਛੋਟੇ ਪੈ ਜਾਂਦੇ ਨੇ। ਉਹਦਾ ਪਤਾ ਨੀ ਪਰ ਮੇਰੇ ਲਈ ਉਹ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਆ, ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ, ਉਹ ਇਹ ਗੱਲ ਸਮਝ ਸਕੇ। ਜੀਅ ਕਰਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਉਸ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਕਰੀ ਜਾਵਾਂ, ਪਰ ਇੱਦਾਂ ਹੁੰਦਾ ਨੀਂ, ਜੀਅ ਕਰਦਾ ਹੁੰਦਾ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਦੱਸ ਦਿਆ ਪਰ ਦੱਸ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ, ਜੀਅ ਕਰਦਾ ਹੁੰਦਾ ਉਸਨੂੰ ਸਿੱਧਾ ਜਾ ਕਹਿ ਦਿਆਂ ਕਿ ਸਾਂਭ ਲਾ ਮੈਨੂੰ ਪਰ ਡਰ ਲੱਗਦਾ ਕਿਹਾ ਨਹੀ ਜਾਂਦਾ। ਸ਼ਾਇਦ, ਕਿਤੇ ਉਹਨੂੰ ਇਹ ਨਾ ਲੱਗੇ ਕਿ ਮੈਂ ਬੱਝਿਆ ਗਿਆ ਆਂ, ਕਿਤੇ ਉਹ ਖਿੱਝ ਕੇ ਮੂੰਹ ਹੀ ਨਾ ਮੋੜ ਲਵੇ। ਜਦੋਂ ਇਹ ਗੱਲਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਦੀਆਂ ਫਿਰ ਹੁੰਦਾ ਕਿ ਮੈਂ ਦੋ ਕਦਮ ਪਿੱਛੇ ਹੀ ਠੀਕ ਆ··· ਕਿਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤੇਜ਼ ਭੱਜਿਆ ਤਾਂ ਡਿੱਗ ਹੀ ਨਾ ਜਾਵਾਂ। ਬਹੁਤ ਮਿਲਦੇ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਜੋ ਮੈਨੂੰ ਉਹਦੇ ਐਬ ਗਿਣਾਉਂਦੇ ਨੇ··· ਦੋ ਮਿੰਟ ਲਈ ਦਿਮਾਗ ਪੁੱਠਾ ਸੋਚਣ ਵੀ ਲੱਗ ਜਾਂਦਾ ਪਰ ਜਦੋਂ ਇੱਕਲੇ ਬੈਠ ਕੇ ਸੋਚਦਾ ਆ ਨਾ ਤਾਂ ਸਿਰਫ਼ ਉਸਦਾ ਅਪਣਾਪਣ ਚੇਤੇ ਆਉਂਦਾ, ਜੋ ਉਹਨੇ ਮੇਰੇ ਤੇ ਜਤਾਇਆ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਕੋਈ ਇਹ ਪੁੱਛੇ ਕੀ ਤੂੰ ਰੋਟੀ ਖਾਂਦੀ ਹੈ ਕੀ ਨੀਂ, ਇਹ ਕੋਈ ਆਪਣਾ ਹੀ ਪੁੱਛ ਸਕਦਾ··· ਮੇਰੇ ਲਈ ਇਹ ਨਿੱਕੀਆ ਜਿਹੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਹੀ ਬਹੁਤ ਵੱਡੀਆਂ ਹਨ। ਕਈ ਵਾਰ ਬਹੁਤ ਕੁੱਝ ਕਹਿਣਾ ਹੁੰਦਾ ਤੇ ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਕੁੱਝ ਵੀ ਨੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੁੰਦਾ ਪਤਾ ਨੀ ਇਵੇਂ ਕਿਉਂ ਹੁੰਦਾ?? ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿਉ ਜਦੋਂ ਉਹ ਮੇਰੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੀ ਏ, ਤਾਂ ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਦੀ ਧੜਕਣ ਤੇਜ਼ ਹੋ ਜਾਦੀ ਹੈ, ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿਉਂ ਮੈਂ ਉਹਨੂੰ ਦੇਖਦੇ ਹੀ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਲੁਕਾ ਲਵਾਂ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿਉਂ ਮੇਰੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਉਸਨੂੰ ਹੀ ਲੱਭਦੀਆ ਰਹਿੰਦੀਆਂ।

ਕਮਾਲ ਆ ਨਾ ਇੱਕ ਮੁੰਡਾ ਏਨਾ ਬੋਲਦਾ ਹੋਵੇ ਤੇ ਉਹਦੇ ਮੂਹਰੇ ਜਾਂ ਕੇ ਉਹ ਗੱਲਾਂ ਕਹਿ ਹੀ ਨਹੀਂ ਪਾਉਂਦਾ। ਰੱਬ ਮੈਨੂੰ ਇੱਕ ਦਿਨ ਲਈ ਕੁਝ ਮੰਗਣ ਲਈ ਕਹੇ ਤਾਂ ਮੈਂ ਉਹਦਾ ਇਕ ਦਿਨ ਮੰਗ ਲਵਾਂ··· ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਹੁਤ ਛੋਟੀ ਆ ਤੇ ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਆ··· ਭੱਜ ਦੌੜ, ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀਆਂ ਦੇ ਚੱਕਰ 'ਚ ਕਿਤੇ ਉਹ ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਕਿਸੇ ਚੀਜ਼ ਵਾਂਗ ਛੁੱਟ ਨਾ ਜਾਵੇ। ਬਹੁਤ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਲਈ ਇੰਨਾ ਸੋਚਣ ਲਈ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਮੌਕਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਮੈਂ···

ਪਰ ਕਦੇ ਕਦੇ ਇਹ ਲੱਗਦਾ ਕਿ ਉਹ ਮੇਰੇ ਵਾਲੇ ਮੋਹ ਸ਼ਬਦ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਹੋ ਕੇ ਵੀ ਅਣਜਾਣ ਏ, ਹੋ ਸਕਦਾ ਕੀ ਉਹ ਵੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਾਗੂੰ ਸ਼ਕਲਾਂ ਨੂੰ ਪਿਆਰ ਕਰਦੀ ਹੋਵੇ, ਦਿਲ ਨੂੰ ਨਹੀਂ। ਪਰ ਨਹੀਂ ਮੇਰਾ ਦਿਲ ਨਹੀਂ ਮੰਨਦਾ ਉਹ ਦੁਨੀਆਂ ਵਾਗੂੰ ਨਹੀਂ ਆ। ਖ਼ੈਰ, ਮੈਨੂੰ ਨਹੀਂ ਪਤਾ··· ਪਰ ਉਹਦੇ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰਨ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਇੱਦਾਂ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਜਿਵੇਂ ਮੇਰੇ ਨੰਗੇ ਸਿਰ ਤੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਕੱਪੜਾ ਦੇ ਦਿੱਤਾ ਹੋਵੇ, ਭੱਜਦੇ-ਭੱਜਦੇ ਨੂੰ ਫੜ ਕੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਬੈਠਣ ਲਈ ਕਹਿ ਦਿੱਤਾ ਹੋਵੇ। ਬਸ, ਸਦਕੇ ਜਾਵਾਂ! ਉਹਦੇ ਤੋਂ, ਜਿਹਦੇ ਅਹਿਸਾਸ ਨੇ ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਆ ਸਭ ਕੁੱਝ ਲਿਖਵਾ ਦਿੱਤਾ।

**ਪਵਨੀਤ ਸਿੰਘ**

**ਬੀ.ਏ. (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ)**

**ਦੂਸਰਾ ਸਾਲ**

## ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਨੌਜਵਾਨ ਦਿਵਸ : ਨੌਜਵਾਨ ਦੇ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ

ਸੁਆਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਗਿਆਨ ਅਤੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਵਿਵਹਾਰਕ ਪਾਠਾ ਨਾਲ ਇੰਨੇ ਮਿਲਦੇ ਜੁਲਦੇ ਸਨ ਕਿ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਵਿਦਵਾਨ ਅਤੇ ਨੋਬਲ ਪੁਰਸਕਾਰ ਜੇਤੂ, ਰਬਿੰਦਰ ਨਾਥ ਟੈਗੋਰ ਨੇ ਇਕ ਵਾਰ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ "ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਜਾਣਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ, ਤਾਂ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਦੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਅਤੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਜ਼ਰੂਰ ਕਰੋ ਉਹਨਾਂ 'ਚ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਹੀ ਸਕਰਾਤਮਕ ਹੈ ਅਤੇ ਕੁਝ ਵੀ ਨਕਰਾਤਮਕ ਨਹੀਂ ਹੈ"।

ਸੁਆਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਦਾ ਜਨਮ 12 ਜਨਵਰੀ, 1863 ਨੂੰ ਕੋਲਕੱਤਾ 'ਚ ਇਕ ਵਧੀਆ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ ਨਰਿੰਦਰਨਾਥ ਦੱਤਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਹੋਇਆ। 1890 ਦੇ ਮੱਧ ਵਿੱਚ ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਇਕ ਲੰਬੀ ਯਾਤਰਾ ਦੇ ਸਮੇਂ ਭਾਰਤ ਦੀ ਗ਼ਰੀਬੀ ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਦੇ ਪਿੱਛੜੇਪਣ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਬਹੁਤ ਦੁਖੀ ਹੋਏ। ਉਹ ਭਾਰਤ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਧਾਰਮਿਕ ਨੇਤਾਵਾਂ ਵਿੱਚੋ ਇੱਕ ਸਨ, ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਸਮੱਸਿਆਂ ਨੂੰ ਸਮਝਿਆ ਅਤੇ ਖੁਲ੍ਹੇ ਤੌਰ ਉੱਤੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਾਰਤ ਦੀ ਬੁਰੀ ਦਸ਼ਾ ਦਾ ਕਾਰਨ, ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਅਗਿਆਨਤਾ ਹੈ।

ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸੂਬਿਆਂ ਦਾ ਦੋਰਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ, ਸੁਆਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਭਾਰਤ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਦੱਖਣੀ ਹਿੱਸੇ ਕੰਨਿਆਕੁਮਾਰੀ ਮੰਦਰ ਵਿੱਚ ਮੱਥਾ ਟੇਕਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਹ ਸਮੁੰਦਰ ਵਿੱਚ ਤੱਰਦੇ ਹੋਏ ਇਕ ਚਟਾਨ 'ਤੇ ਪਹੁੰਚੇ ਉੱਥੇ ਬੈਠ ਕੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵਰਤਮਾਨ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖ ਉਤੇ 25, 26 ਅਤੇ 27 ਦਸੰਬਰ 1892 ਤਿੰਨ ਦਿਨ ਚਿੰਤਨ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਅਸਲੀ ਉਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਸਮਝਿਆ।

19 ਮਾਰਚ 1894 ਨੂੰ ਸ਼ਿਕਾਗੋ 'ਚੋ ਸੁਆਮੀ ਰਾਮ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਾਨੰਦ ਨੂੰ ਲਿਖੇ ਇਕ ਪੱਤਰ 'ਚ, ਸੁਆਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਉਸ ਚਿੰਤਨ ਬਾਰੇ ਦੱਸਦੇ ਹੋਏ ਲਿਖਦੇ ਹਨ ਕਿ, "ਮੇਰੇ ਭਾਈ, ਇਹ ਸਭ ਦੇਖਦੇ ਹੋਏ, ਖਾਸ ਕਰਕੇ {ਦੇਸ਼ ਦੀ} ਗ਼ਰੀਬੀ ਅਤੇ ਅਗਿਆਨਤਾ ਦੇ ਕਾਰਨ ਮੈਨੂੰ ਇਕ ਪੱਲ ਵੀ ਚੈਨ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਇਸ ਲਈ ਭਾਰਤ ਦੇ ਆਖ਼ਰੀ ਹਿੱਸੇ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਕੇ, ਮੈਂ ਇਕ ਯੋਜਨਾ ਬਣਾਈ" । ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਉਹ ਯੋਜਨਾ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਦਾ ਇਕ ਅਹਿਸਾਸ ਸੀ, ਜਿਸ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਲ ਦੀ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਆਪਣੀ ਗੁਆਚੀ ਹੋਈ ਮਹਿੰਮਾ ਨੂੰ ਫਿਰ ਲੱਭ ਲਿਆ ਸੀ।

ਸੁਵਾਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ 31 ਮਈ, 1893 ਨੂੰ ਪੱਛਮ ਦੀ ਆਪਣੀ ਯਾਤਰਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਜਪਾਨ, ਚੀਨ ਅਤੇ ਕੈਨੇਡਾ ਦੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਦਾ ਦੌਰਾ ਕੀਤਾ। 30 ਜੁਲਾਈ 1893 ਨੂੰ ਉਹ ਅਮਰੀਕਾ ਪਹੁੰਚੇ । ਜਿੱਥੇ ਸ਼ਿਕਾਗੋ 'ਚ ਇਕ ਬਹੁਤ ਮਹਤੱਵਪੂਰਨ ਧਰਮ ਸੰਸਦ ਹੋਣੀ ਸੀ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਧਰਮ ਸੰਸਦ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਭਾਸ਼ਣ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ "ਅਮਰੀਕਾ ਦੇ ਵੀਰੋ ਅਤੇ ਭੈਣੋ" ਦੇ ਨਾਲ ਕੀਤੀ। ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਪੂਰੇ ਹਾਲ 'ਚ ਲੱਗਭਗ 2 ਮਿੰਟ ਤੱਕ ਤਾੜੀਆਂ ਵੱਜਦੀਆਂ ਰਹੀਆਂ।

ਇਸ ਸੰਸਦ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਲੱਗਭਗ ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਸਯੁੰਕਤ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਪੂਰਬੀ ਹਿੱਸਿਆ ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਲੰਡਨ 'ਚ ਵੇਦਾਂਤ ਦੇ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਫ਼ੈਲਾਉਂਦੇ ਰਹੇ। ਉਹ ਜਨਵਰੀ 1897 ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਵਾਪਿਸ ਆਏ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵੱਖ ਵੱਖ ਹਿੱਸਿਆ ਵਿੱਚ ਕਈ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੱਤੇ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਹੱਲ ਚਲ ਮੱਚ ਗਈ। ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਕ ਨਵੀਂ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੱਤਾ। ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਇਹ ਮੰਨਣਾ ਸੀ ਕਿ ਜੇਕਰ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨੀ ਹੈ ਤਾਂ, ਪਹਿਲਾਂ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰੋ ਜੋ ਕਿ ਸਭ ਤੋਂ ਉਤਮ ਸੇਵਾ ਹੈ। ਸੁਆਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਹੋਰ ਸੱਭਿਆਚਾਰਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਵੀ ਮਿਲਣਸਾਰ ਅਤੇ ਸਮਾਨਤਾ ਦਾ ਭਾਵ ਰੱਖਦੇ ਸੀ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ, "ਉਹ ਸਭ ਕੁਝ ਸਿੱਖੋ ਜੋ ਵਧੀਆ ਹੈ, ਉਹਨੂੰ ਅੰਦਰ ਲਿਆਉ ਅਤੇ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰੋ, ਪਰ ਕਦੇ ਵੀ ਦੂਸਰਿਆਂ ਵਰਗੇ ਨਾ ਬਣੋ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਇਸ ਨੂੰ ਭਾਰਤੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਜੀਵਨ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਲੈ ਕੇ ਜਾਉ ਇੱਕ ਪੱਲ ਦੇ ਲਈ ਇਹ ਵੀ ਨਾ ਸੋਚੋ ਕੀ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲਈ ਇਹ ਵਧੀਆ ਹੋਵੇਗਾ, ਜੇਕਰ ਸਾਰੇ ਭਾਰਤੀ ਦੂਸਰਿਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੱਪੜੇ ਪਾਉਣ, ਖਾਣ ਅਤੇ ਦੂਸਰਿਆਂ ਵਰਗਾ ਵਿਵਹਾਰ ਕਰਨ।

ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ ਮਨੁੱਖਤਾ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਸਿੱਖਿਆ ਤੇ ਵੀ ਬਹੁਤ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇੱਕ ਵਾਰ ਕਿਹਾ ਸੀ "ਉਹ ਸਿੱਖਿਆ ਜੋ ਆਮ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਜੀਵਨ ਦੀਆਂ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਨਾਲ ਲੜਨ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ, ਜਿਹੜੀ ਚਰਿੱਤਰ ਦੀ ਤਾਕਤ, ਪਰਉਪਕਾਰ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਅਤੇ ਇਕ ਮਰਦ ਦੀ ਹਿੰਮਤ ਨੂੰ ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਲਿਆਉਂਦੀ ਕੀ ਉਹ ਸਾਡੇ ਲਈ ਪੜ੍ਹਨ ਯੋਗ ਹੈ। ਅਸਲੀ ਸਿੱਖਿਆ ਉਹ ਹੈ, ਜੋ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕੰਮ 'ਤੇ ਖੜ੍ਹਾ ਹੋਣ ਦੇ ਯੋਗ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ" ।

ਉਹਨਾਂ ਲਈ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਮਤਲਬ ਸੀ, ਕਿ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪਰਉਪਕਾਰੀ ਚਰਿੱਤਰ ਅਤੇ ਨੈਤਿਕ ਮੁੱਲਾਂ {Moral Values} ਨੂੰ ਸਿਖਾਣ ਵਾਲੀ ਸਿੱਖਿਆ। ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦੀ ਤਾਕਤ ਅਤੇ ਪਰਿਵਰਤਨਸ਼ੀਲ ਸ਼ਕਤੀ 'ਤੇ ਬਹੁਤ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਸੀ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ "ਮੇਰਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ 'ਚ ਹੈ, ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਹੀ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਮਾਜ ਸੇਵੀ ਅੱਗੇ ਆਉਣਗੇ, ਜੋ ਸ਼ੇਰਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੂਰੀ ਸਮੱਸਿਆ ਦਾ ਹੱਲ ਕਰਨਗੇ।

ਵਰਤਮਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਅਤੇ ਨੌਜਵਾਨ ਚਿਹਨ ਦੇ ਰੂਪ 'ਚ, ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਇਕ ਉਦੇਸ਼ {One Mission, One Life} ਦੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨਤਾ ਉਪਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਾਇਆ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ, "ਇੱਕ ਵਿਚਾਰ ਉਠਾਓ, ਉਸ ਇਕ ਵਿਚਾਰ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਬਣਾ ਲਉ- ਉਸਦੇ ਬਾਰੇ ਹੀ ਸੋਚੋ, ਉਸਦੇ ਹੀ ਸਪਨੇ ਦੇਖੋ ਤੇ ਉਸ ਵਿਚਾਰ ਤੇ ਹੀ ਜੀਓ। ਮਨ, ਮਾਸਪੇਸ਼ੀਆਂ, ਨੱਸਾਂ ਅਤੇ ਸ਼ਰੀਰ ਦੇ ਹਰ ਹਿੱਸੇ ਨੂੰ ਉਸ ਵਿਚਾਰ ਨਾਲ ਭਰ ਦਿਉ ਅਤੇ ਬਸ ਹਰ ਦੂਸਰੇ ਵਿਚਾਰ ਨੂੰ ਛੱਡ ਦਿਉ, ਇਹ ਸਫ਼ਲਤਾ ਦਾ ਮਾਰਗ ਹੈ" ।

ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸਲਾਹ ਦਿੱਤੀ ਕਿ "ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਣੋ, ਮੇਰੇ ਨੌਜਵਾਨ ਦੋਸਤੋ··· ਗੀਤਾ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਨਾਲ, ਫ਼ੁਟਬਾਲ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਨਾਲ ਤੁਸੀਂ ਸਵਰਗ ਦੇ ਨੇੜ੍ਹੇ ਗਏ। ਇਹ ਸਾਹਸੀ ਸ਼ਬਦ ਹਨ ਪਰ, ਮੈਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਹੋਣਗੇ, ਕਿਉਂਕਿ ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਪਿਆਰ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਇਸ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੀਆ ਲੋੜਾਂ ਲਈ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਕਰਨਾ ਪਏਗਾ" ।

19 ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਅੰਤ 'ਚ, 1857 ਵਿੱਚ ਅਸਫ਼ਲ ਭਾਰਤੀ ਵਿਦਰੋਹ ਦੇ ਬਾਅਦ, ਭਾਰਤ ਆਪਣੀ ਹਿੰਮਤ ਗੁਆ ਬੈਠਾ ਸੀ। ਮਹਾਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਭਾਰਤੀ ਸੱਭਿਅਤਾ, ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਲਾਲਚ ਦੀ ਗ਼ੁਲਾਮ ਬਣ ਗਈ ਸੀ। ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਵਿਸ਼ਵ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਉਪਜਾਊ ਖੇਤੀ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ ਬੇਕਾਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। 19 ਵੀਂ ਸਦੀ ਭਾਰਤ ਲਈ ਇਕ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਕ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਵਿੱਚ ਘਿਰੀ ਹੋਈ ਸੀ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਭਾਰਤ ਆਪਣੀ ਹੀ ਜ਼ਮੀਨ 'ਤੇ ਮੁੱਠੀ ਕੁ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਲੋਕਾਂ ਦੁਆਰਾ ਗ਼ੁਲਾਮ ਬਣਾ ਲਿਆ ਗਿਆ ਸੀ, ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬੜੀ ਚਲਾਕੀ ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਸ਼ਕਤੀ ਬਣਾਈ ਰੱਖੀ, ਕਿਉਂਕਿ ਭਾਰਤੀ ਆਪਣੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾ ਅਤੇ ਪਹਿਚਾਣ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕੇ ਸਨ।

39 ਸਾਲ ਦੇ ਜੀਵਨ 'ਚ, ਸੁਵਾਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ ਗੁਆਚੀ ਹੋਈ ਗਿਆਨ ਦੀ ਅਵਾਜ ਨੂੰ ਭਾਰਤੀ ਸਭਿੱਅਤਾ ਦੀ ਮੁੱਖ ਧਾਰਾ ਵਿੱਚ ਲਿਆ ਕੇ ਖੜ੍ਹਾ ਕੀਤਾ। ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਸੰਦੇਸ਼ ਡੇਢ ਸਦੀ ਨਾਲੋਂ ਵੱਧ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਅੱਜ ਵੀ ਜੀਵਤ ਹੈ।

"ਉਠੋ, ਜਾਗੋ ਅਤੇ ਤੱਦ ਤੱਕ ਨਾ ਰੁਕੋ, ਜਦ ਤੱਕ ਤੁਸੀਂ ਆਪਣੇ ਉਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਪਾ ਨਹੀਂ ਲੈਂਦੇ" ।

"Originality is not novelty but sincerity"

**ਅੰਮ੍ਰਿਤਪਾਲ ਸਿੰਘ**

**ਨਿਖ਼ਿਲ ਯਾਦਵ (ਯੁਵਾ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਵੀ.ਆਈ.ਐਫ.)**

**ਬੀ.ਏ. ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ**

**ਦੂਜਾ ਸਾਲ**

# Bagh-e-Urdu

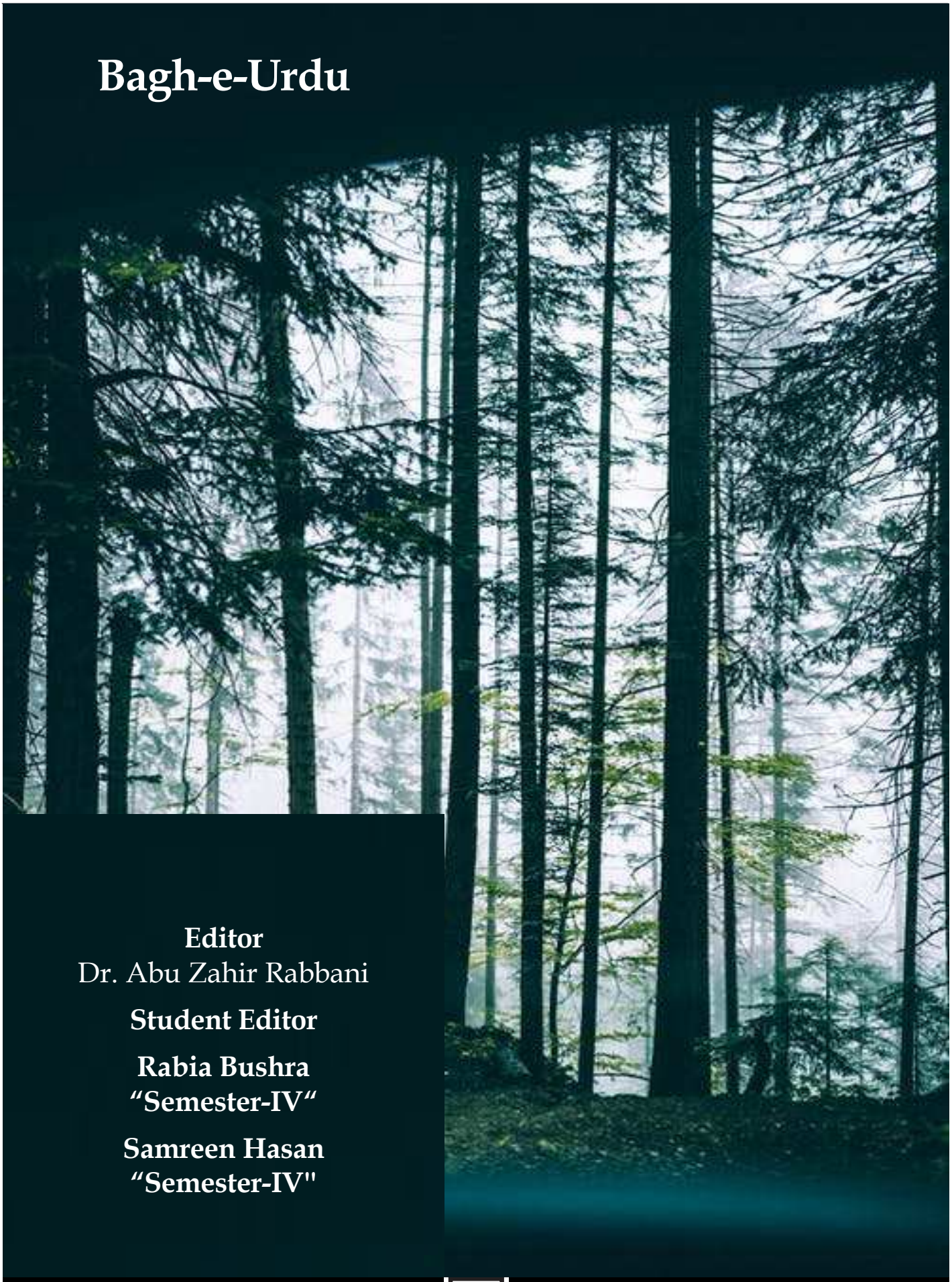

**Editor**
Dr. Abu Zahir Rabbani

**Student Editor**

**Rabia Bushra**
**"Semester-IV"**

**Samreen Hasan**
**"Semester-IV"**

# فہرست


| | | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| 1- مولانا ابوالکلام آزاد کی نثر غبار خاطر کی روشنی میں | ڈاکٹر محمد ارشد | 78 |
| 2- زندگی کا مقصد (مضمون) | محمد ارسلان | 80 |
| 3- ریگستان میں پھول (کہانی) | ثمرین حسن | 80 |
| 4- زندگی (نظم) | ثمرین حسن | 81 |


-

ڈاکٹر محمد ارشد
شعبہ اردو، دیال سنگھ کالج، دہلی یونیورسٹی

## مولانا ابوالکلام آزاد کی نثر غبار خاطر کی روشنی میں

جب سے دیکھی ابوالکلام کی نثر
نظم حسرت میں کچھ مزا نہ رہا

مولانا ابوالکلام آزاد اپنے آپ میں ایک انجمن کی حیثیت رکھتے تھے۔علم وفضل کے اتھاہ سمندر، جادو بیانی میں ان کا کوئی ثانی نہ تھا، فکر کی تابانی، یقین کی روشنی اور عمل کی گرمی نے ان کی شخصیت میں ایک دلآویزی اور دل کشی پیدا کردی تھی، انہوں نے ادب، مذہب، صحافت، اور تعلیم کے میدان میں اپنے خیالات پیش کر کے بلند مقام حاصل کی، مولانا نے ہندوستان کی جدوجہد آزادی میں حصہ لیتے ہوئے جیل کی صعوبتیں بھی جھیلی، ان کی کانگریسی سے وابستگی اٹوٹ رہی، ایک ادیب کی حیثیت سے وہ غیر افسانوی نثر کے نمائندہ ہیں، ایک مفسر قرآن ہونے کے علاوہ، مکتوب نگار، مضمون نگار، انشا پرداز اور صحافی کی حیثیت سے انہوں نے اپنے قلم کے جوہر دکھائے۔

مولانا آزاد ۱۸۸۸ء کو مکہ مکرمہ میں پیدا ہوئے اور ۲۲ر فروری ۱۹۵۸ء کو دہلی میں وفات پائے۔ان کی قبر باب شاہ جہاں جامع مسجد، مینا بازار کے احاطہ میں ہے۔ان کا اصلی نام احمد اور تاریخی نام فیروز بخت، لقب ابوالکلام اور تخلص آزاد تھا۔ان کے اندر علمی صلاحیت کوٹ کوٹ کر بھری پڑی تھی۔انہوں نے ۱۳ر جولائی ۱۹۱۲ء کو ''الہلال'' اور اس کے بعد ۱۲ر نومبر ۱۹۱۵ء کو ''البلاغ' جاری کیا تھا۔ان دونوں رسالوں نے ملک میں سیاسی بیداری پیدا کرنے کا ناقابل فراموش کارنامہ انجام دیا، ان رسالوں میں مولانا کے اداریے اور مضامین ایسے مدلل اور اتنے پرجوش ہوتے تھے کہ انھیں پڑھ کر اہل وطن کے دلوں میں آزادی کا ولولہ اور جدوجہد کا عزم پیدا ہوجاتا تھا تو دوسری طرف ایوان حکومت بھی لرز اٹھتا تھا۔ اس کے علاوہ ان رسالوں میں قوم کی ذہنی بیداری، ہندو مسلم اتحاد، حب الوطنی اور دیگر سماجی، معاشرتی، و مذہبی مسائل ان کے خاص موضوعات ہوا کرتے تھے، مولانا آزاد کی علمیت اور ذہانت کی دلیل ان کے رسالے ''الہلال اور ''البلاغ' سے ہی نہیں ملتی بلکہ ان کی کتابیں ''تذکرہ'' جو مولانا کی خودنوشت سوانح حیات ہے اور ''ترجمان القرآن'' جو قرآن کریم کی تفسیر ہے جس میں مولانا کی انفرادیت نمایاں ہیں، اس کے علاوہ ان کے اہم خطوط کے کئی مجموعہ شائع ہو چکے ہیں جن میں مکاتیب ابوالکلام آزاد، نقش آزاد، تبرکات آزاد، کاروان خیال، اور غبار خاطر خاص طور پر قابل ذکر ہیں، لیکن ''غبار خاطر'' ان میں سب سے زیادہ شہرت اپنے حصے میں سمیٹے ہوئی ہے۔

مولانا آزد کی ''غبار خاطر'' ان خطوط کا مجموعہ ہے جو زمانہ اسیری میں لکھے گئے تھے۔اس وقت دوسری عالمی جنگ اپنے پورے شباب پر تھی۔ ۸ر اگست ۱۹۴۲ء کو انڈین نیشنل کانگریس کا خاص اجلاس ممبئی میں منعقد ہوا، اس وقت مولانا ابوالکلام آزاد کانگریس کے صدر تھے۔ اس اجلاس میں یہ قرارداد منظور ہوئی کہ انگریز اس ملک کے نظم ونسق سے فوراً دست بردار ہوکر یہاں سے سدھار جائیں اور ہمیں اپنے حال پر چھوڑ دیں۔ اس قرار داد کے منظر عام پر آتے ہی انگریزوں میں بوکھلاہٹ طاری ہوگئی۔اسی رات کے آخری حصے میں یعنی ۹ر اگست کو علی الصباح حکومت وقت نے تمام سرکردہ رہنماؤں کو سوتے میں بستروں سے اٹھا کر حراست میں لے لیا اور ملک کے مختلف مقامات پر نظر بند کردیا۔ مولانا آزاد اور ان کے دوسرے رفقاء احمد نگر کے قلعے میں ۹ر اگست ۱۹۴۲ء کو نظر بند کئے گئے اور اپریل ۱۹۴۵ء میں مولانا قلعہ احمد نگر سے بانکوڑا جیل میں منتقل ہوئے اور یہیں سے بالآخر ۱۵ر جون ۱۹۴۵ء کو رہائی ملی۔ اسی نظر بندی کا ثمرہ ''غبار خاطر'' ہے۔ یہی وہ کتاب ہے جو مولانا آزاد کی آخری تصنیف ہے، اور انہی کی زندگی میں شائع ہوئی، غبار خاطر کو خطوط کا مجموعہ کہا جاتا ہے جبکہ اسے پڑھنے کے بعد ہر قاری کو اس میں متنوع مضامین نظر آتا ہے، راقم الحروف کے نزدیک چند خطوط کو چھوڑ کر باقی خطوط میں خطوط کے اوصاف نظر نہیں آتے، جیسا کہ مالک رام بھی غبار خاطر کے مقدمہ میں اس بات کا اعتراف کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ

''کہنے کو تو یہ خطوط کا مجموعہ ہے لیکن حقیقت یہ ہے

کہ دوایک کو چھوڑکر ان میں سے مکتوب کی صفت کسی میں نہیں پائی جاتی یہ دراصل چند متفرق مضامین ہیں جنھیں خطوط کی شکل دے دی گئی ہے۔ یوں معلوم ہوتا ہے کہ مرحوم کچھ ایسی باتیں لکھنا چاہتے تھے جن کا آپس میں کوئی تعلق یا مربوط سلسلہ نہیں تھا''۔(غبار خاطر ص ۸)

مولانا آزاد کے لئے قلعہ احمد نگر کی اسیری دیگر مقامات کی قید سے زیادہ سخت تھی کیوں کہ اس بار نہ کسی سے ملاقات کی اجازت تھی، نہ کسی سے خط وکتابت کرنے کی، اس لئے مولانا نے دل کا غبار نکالنے کا راستہ ڈھونڈھ لیا، اور ایسے شخص کا انتخاب کیا جو علم کی مختلف اصناف میں یکساں طور پر دلچسپی لیتے تھے اور وہ شخص گل سرسید نواب صدر یار جنگ بہادر مولانا حبیب الرحمن خاں شروانی مرحوم کی ذات گرامی تھی۔ مولانا آزاد نے ہر خط میں ان کو صدیق مکرم جیسے لقب سے یاد کیا ہے پر افسوس کی بات یہ ہے کہ ان کے نام پر خطوط تو لکھے گئے لیکن ایک بھی خط روانہ نہیں کیا جاسکا، جیسا کہ مولانا آزد اغبار خاطر کے مکتوب نسیم باغ میں ایک جگہ شروانی صاحب کو مخاطب کر کے فرماتے ہیں۔ بے اختیار جی چاہا کہ کچھ دیر آپ کی مخاطبت میں بسر کروں اور آپ سن رہے ہوں یا نہ سن رہے ہوں، مگر روئے سخن آپ ہی کی طرف رہے۔ اسی خط میں دوسری جگہ لکھتے ہیں کہ:

''قید خانے سے باہر کی دنیا سے اب سارے رشتے کٹ چکے تھے، اور مستقبل پردہ غیب میں مستور تھا، کچھ معلوم نہ تھا کہ یہ مکتوب کبھی مکتوب الیہم تک پہنچ بھی سکیں گے یا نہیں، تاہم ذوق مخاطب کی طلب گاریاں کچھ اس طرح دل مستمند پر چھا گئی تھیں کہ قلم اٹھالیتا تھا، تو پھر رکھنے کو جی نہیں چاہتا تھا۔ لوگوں نے نامہ بری کا کام کبھی قاصد سے لیا، کبھی بال کبوتر سے، میرے حصے میں عنقا آیا'' (غبار خاطر ص ۷)

مولانا آزاد جیل سے رہا ہونے کے بعد سارے خطوط ''غبار خاطر'' کے نام سے چھپوا کر ایک نسخہ شروانی صاحب کی خدمت میں روانہ کر دیا، لفظ ''غبار خاطر'' میر عظمت اللہ بخیر بلگرامی کے ایک مختصر رسالہ کا نام تھا، مولانا آزاد نے اس نام کو ان سے مستعار لیکر اپنے خطوط کے مجموعہ کا نام ''غبار خاطر'' رکھا۔

اس کتاب میں مولانا آزاد کی شخصیت اپنی تمام تر نفاست، بلند خیالی، وانفرادیت کے ساتھ جلوہ گر نظر آتی ہے، غبار خاطر ایک آئینہ ہے جس میں مولانا کا فلسفہ، نشاط وغم، مطالعہ فطرت، مجتہدانہ خیالات، طنز ومزاح، زندگی گزارنے کا بے پناہ حوصلہ سب کچھ نظر آتا ہے، اس میں آزاد ایک ایسے آرٹسٹ، مفکر، اور ادیب کی شکل میں ہمارے سامنے آتے ہیں جو اپنے قلم کی سحر کاریوں سے معمولی اور خشک موضوعات کو بھی شعری رنگ وآہنگ عطا کرنے کا ہنر جانتا ہے، مولانا آزاد کی انشاء پردازی کا کمال یہ ہے کہ ان کی تحریر کے انداز ایک سے زیادہ ہیں۔

ان کے یہاں ایک ایسا اسلوب نظر آتا ہے جو انھیں کی ذات سے شروع ہوتا ہے اور انھیں کی ذات پر ختم ہوجاتا ہے۔ اس اسلوب میں ان گنت رنگوں کی آمیزش کے باوجود بھی مولانا آزاد کا اپنا انفرادی رنگ برقرار رہتا ہے، جیسا کہ مالک رام غبار خاطر کے مقدمہ میں آزاد کے بارے میں تحریر کرتے ہیں کہ اپنی زندگی کے مختلف ادوار میں انہوں نے بہت کچھ لکھا، اگر ہم اس پورے مجموعہ پر تنقیدی نظر ڈالیں تو تسلیم کرنا پڑے گا کہ زبان وبیان کے لحاظ سے ان کے اسلوب نگارش کا نقطہ عروج ''غبار خاطر'' ہے۔ 'اس کی نثر ایسی نپی تلی ہے اور الفاظ استعمال اس حد تک افراط وتفریط سے بری ہیں کہ اس سے زیادہ خیال نہیں آسکتا'۔ (مقدمہ غبار خاطر ص ۱۴)

''غبار خاطر'' کی دلکشی کا اصل راز اس کی طرز تحریر میں ہے۔ جملوں کی ترتیب وتنظیم اپنی جگہ اتنی مکمل ہے کہ اس میں ذرا سا بھی ردوبدل عبارت میں بے لطفی پیدا کردیتا ہے۔ عبارت میں جوش اور حرارت کے ساتھ ساتھ بلا کی روانی نظر آتی ہے۔ فارسی وعربی رنگ لئے ہوئے، تشبیہ واستعارے، پر شکوہ الفاظ اور علمی وفلسفیانہ اصطلاحات ادیبانہ استعمال کی وجہ سے اعلی ذہنیت اور معنویت پیدا ہوگئی ہے جو ہمیں اردو ادب میں کہیں اور شاید ہی نظر آئے۔

☆☆☆

محمد ارسلان
بی اے (آنرس) اردو
سمسٹر: VI

## زندگی کا مقصد

اپنی زندگی کا مقصد طے کر لینا ہی زندگی کی کامیابی کی شروعات ہے ۔بغیر مقصد کا طے کیا ہوا کوئی بھی کام ادھورا اور بے معنی ہوتا ہے۔زندگی کی منزلیں بہت اونچی ہوتی ہیں اور اسے وہی شخص چھو سکتا ہے جس کے اندر سچی لگن، حوصلہ اور محنت سے کام کرنے کا جذبہ ہو۔آج کے اس دور میں جہاں ہر موڑ پر ہزاروں کی بھیڑ ملتی ہے ایسے میں کامیابی کے لئے ضروری ہے کہ ہم سب سے پہلے اپنی زندگی کا ایک مقصد طے کر لیں اور پھر اس کے مطابق لگن کے ساتھ محنت کریں ۔بغیر مقصد کی زندگی اس کشتی کی طرح ہے جسے بغیر ملاح کے دریا کے بہاؤ میں چھوڑ دیا جائے۔

پیارے ساتھیو! ہم میں سے ہر ایک چاہتا ہے کہ میں کامیاب ہو جاؤں لیکن بہت سے ایسے طلباء ہیں جو زندگی کے اس مقام تک پہنچ جانے کے بعد بھی طے نہیں کر پاتے ہیں کہ ہماری زندگی کا اصل مقصد کیا ہے؟ یا ہم کیا بننا چاہتے ہیں؟ آج کا یہ زمانہ معاشی زمانہ ہے۔تو کیا ہم ایک امیر ترین شخص بننا چاہتے ہیں ۔جو غریبوں کا خون چوس کر دولت اکٹھا کرتے ہیں یا ہم ڈاکٹر، انجینئر یا پڑھ لکھ کر ایک اچھا افسر بننا چاہتے ہیں یا پھر ہم سماج کی خدمت کرتے ہوئے سماج کے اندر پائے جانے والی برائیوں کو مٹانا چاہتے ہیں۔ہم سبھوں کو سوچنا ہوگا اور پھر فیصلہ لینا ہو گا کہ آخر ہمیں کیا کرنا ہے۔اور پھر فیصلے کے ساتھ ساتھ اس کے مطابق محنت بھی کرنی ہوگی تا کہ اپنے مقصد میں پوری طرح کامیاب ہو سکیں۔

**Mohammad Arsalan**
**BA (Hons) Urdu**
**Semester:IV**
**Department of Urdu**
**Dyal Singh College.**

ثمرین حسن
بی اے (آنرس) اردو
سمسٹر: IV

## ریگستان میں پھول

(کہانی)

کہانی ایک ایسی لڑکی کی جو شاید نہیں جانتی تھی کہ مایوسی کیا ہے۔ نام تھا اس کا گلفشاں۔جس کا دور دور تک رنج وغم سے کوئی واسطہ نہ تھا۔ مسکان اس کے لبوں کی سہیلی، جو صدا اس کے ساتھ رہتی تھی۔غم جس کے دل تک کبھی دستک نہیں دے پاتے تھے۔درد سے اس کی کبھی بنتی نہیں تھی۔ایسے ہی ہنستے کھیلتے اس نے اپنی تعلیم حاصل کی جو عام طور پر ہر لڑکی کو دلوادی جاتی ہے۔خواہش اس کی تھی کہ کسی قابل بن کر اپنے خاندان کا نام روشن کرے۔گھر میں دو چھوٹی بہنیں بھی تھیں جن کو ہمیشہ یہ سننے کو ملا کہ باپ پے بوجھ ہے۔دنیا کو گلفشاں دکھانا چاہتی تھی کہ باپ پے بوجھ نہیں بلکہ باپ کے سر کا تاج ہے بیٹیاں۔لیکن قسمت کو کچھ اور ہی منظور تھا۔اس کا نکاح اس کی مرضی کے خلاف ہوا۔گلفشاں نہیں جانتی تھی کہ اس کے نکاح پے ڈولی نہیں بلکہ خوشیوں کا جنازہ اٹھے گا۔گلفشاں کے لبوں کی مسکان چھین لی گئی تھی۔زندگی کانٹوں بھرا بچھونا بن چکی تھی۔ ہمیشہ کھلکھلا کر ہنسنے والی اپنے دامن میں آنسو کو چھپانے لگی تھی۔گلفشاں کر کے اپنے رخسار پہ چلمن سب سے اپنا درد وغم چھپانے لگی۔نہ تھا کوئی اس کو سمجھنے والا، نہ کوئی سہارا دینے والا، وقت بیتا اور اس کے گھر ایک ننھی پری پیدا ہوئی۔بیٹی کو دیکھ گلفشاں کے چہرے پہ مسکان آئی لیکن دنیا والوں نے کوسہ کے ایک بیٹے کو پیدا نہ کر سکی جو ایک بیٹی دکھائی روتی تھی گلفشاں رات کے سناٹے میں۔جس کو سمجھتی تھی وہ اپنا انہوں نے ہی اس کے دل کو طعنوں سے چھیدا۔سماں بدلا، وقت گزرا اور دوبارہ سے بچے کی کلکاری گونجی، اس بار بھی ایک بیٹی ہی تھی۔اب دنیا نے حد و بس کر دی لیکن اس بار گلفشاں نے کوئی اثر نہیں لیا جب کسی کو اس کی خوشیوں کے پرواہ نہیں تو وہ کیوں دنیا کے کہنے پہ روتی۔اس نے اپنی خوشیاں اپنے معصوم بیٹیوں کے چہرے پر دیکھی، اپنی ننھی کلیوں کے

خاطر دنیا کے نہ چاہتے ہوئے بھی اس نے پھر سے مسکرانا سیکھ لیا۔ دوست بن کر تعلیم یافتہ کیا، اپنی بیٹیوں کو اور خود بھی اپنے خواب کو پورا کیا ۔دنیا جو بولے گی سو بولے گی ۔اب اس کو کوئی پرواہ نہ رہی تھی ۔خدا کا دامن پکڑ اپنی بیٹیوں کے ساتھ جینا سیکھ لیا اس نے جو کرتے تھے بیٹا بیٹا وہ بھی تھے حیران ۔ماں اور بیٹیوں کو دیکھ کر۔اب گلفشاں کی پرانی سہیلی اس کے لبوں کی مسکان واپس آ چکی تھی۔اپنی ہمت اپنے جذبے اور اپنی خواہشوں کی ڈور تھامی گلفشاں نے اپنا مقام حاصل کیا۔اور اس زمانے میں اس کی جیسی کئی گلفشاؤں کو اس نے خواب دیکھنے اور انہیں پورا کرنے کی سیکھ دی۔ساتھ ہی ساتھ سب کو یہ دکھایا کہ کیسے ایک ریگستان میں بھی پھول کھلایا جاسکتا ہے ۔بس ضرورت ہے کوششوں ،جذبوں اور خواہشوں کی۔

☆☆☆

Samreen Hasan
BA (Hons) Urdu
Semester:IV
Department of Urdu
Dyal Singh Colleg

ثمرین حسن
بی اے (آنرس) اردو
سمسٹر:IV

زندگی

کسی روز میں نے سوچا،
ہے کیا یہ زندگی؟
دنیا میں نکل کر احساس ہوا،
ہے کئی معنوں کی زندگی!
کبھی خوشیوں کا سیلاب،
کبھی اشکوں کا آب ہے زندگی!
کہیں من چاہی آرزو،
کہیں عملوں کی ترازو ہے زندگی!
کبھی صبر کی سیکھ سکھاتی،
کبھی دوڑتا وقت ہے زندگی!
کہیں دل کا میل لفظوں کا مقابلہ،
کہیں ہارتے رشتوں کی زندگی!
ایک جسم خاک پہ ٹکی،
تو کہیں خاک ہو رہی زندگی!
کبھی دنیا کو بدلنے کی چاہ،
کبھی خود کو بدلنے کا کام ہے زندگی!
کہیں میر کا درد،
کہیں اقبال کی خودی ہے زندگی!
ہے زندگی کہ کئی مترادفات،
گر میں کہوں تو،
حقیقت، محبت، حرکت کا نام ہے زندگی!

Samreen Hasan
BA (Hons) Urdu
Semester:IV
Department of Urdu,
Dyal Singh College

DYAL SINGH COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

दयाल सिंह कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
DELHI POLICE

UNIVERSITY OF DELHI